page 1 and 8 jan 14_page 1 Mar 25 final ds.qxd 1/14/2026 1:15 AM Page 1

epaper.dehatsandesh.com

3 जिलाभर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया लोहड़ी पर्व

5 एलीसा हिली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की

8 मूली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

मौसम जम्मू — न्यूनतम 5 — अधिकतम 15

E-mail: dehatsandesh@gmail.com

जम्मू-कश्मीर का एकमात्र ग्रामीण दैनिक

देहात संदेश

वर्ष-23, जम्मू तवी, अंक-12 | जम्मू तवी, बुधवार 14 जनवरी, 2026 | मूल्य-3 रूपये- (लेह) 4 रूपये | पृष्ठ -8

जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की भर्ती लगभग शून्य, स्थानीय आतंकियों की संख्या एकल अंक में: सेना प्रमुख

****आतंक के खिलाफ 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी**
****2025 में मारे गए अधिकांश आतंकी पाकिस्तान मूल के**
****विकास, पर्यटन और शांतिपूर्ण अमरनाथ यात्रा से सकारात्मक बदलाव के संकेत**
****मई 2025 के भारत-पाक डीजीएमओ संवाद में परमाणु मुद्दे पर कोई चर्चा नहीं**

जम्मू तवी, 13 जनवरी। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मंगलवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की भर्ती अब लगभग समाप्त हो चुकी है और सक्रिय स्थानीय आतंकियों की संख्या घटकर एकल अंक में आ गई है। यह केंद्र शासित प्रदेश में सुरक्षा स्थिति में आए बड़े सुधार को दर्शाता है।2026 की अपनी पहली प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि पिछले वर्ष 10 मई के बाद से पश्चिमी मोर्चे और जम्मू-कश्मीर में स्थिति संवेदनशील जरूर रही है, लेकिन पूरी तरह नियंत्रण में है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2025 में कुल 31 आतंकियों को मार गिराया गया, जिनमें से करीब 65 प्रतिशत पाकिस्तान मूल के थे। इनमें पहलगाम हमले में शामिल तीन आतंकी भी शामिल थे, जिन्हें 'ऑपरेशन महादेव' के तहत ढेर किया गया। सेना प्रमुख ने कहा, सक्रिय स्थानीय आतंकियों की संख्या अब एकल अंक में है। आतंकियों की भर्ती लगभग न के बराबर है और 2025 में केवल दो मामलों की ही सूचना मिली है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर में सकारात्मक बदलाव के कई संकेत दिखाई दे रहे हैं, जिनमें तेज़ विकास कार्य, पर्यटन का पुनरुद्धार और अमरनाथ यात्रा का शांतिपूर्ण आयोजन शामिल है। इस वर्ष अमरनाथ यात्रा में चार लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जो पिछले पांच वर्षों के औसत से अधिक है। उन्होंने कहा, आतंकवाद से पर्यटन की ओर बदलाव धीरे-धीरे वास्तविकता बन रहा है। जनरल द्विवेदी ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी जारी है और भविष्य में किसी भी दुस्साहस का कड़ा जवाब दिया जाएगा। उन्होंने शांति और स्थिरता बनाए रखने में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों, खुफिया एजेंसियों, नागरिक प्रशासन, राज्य प्रशासन और अन्य मंत्रालयों की सक्रिय भूमिका की सराहना की। ऑपरेशन सिंदूर को त्रि-सेवा समन्वय (थल, जल और वायु सेना) का एक ऐतिहासिक उदाहरण बताते हुए सेना प्रमुख ने कहा कि इसे स्पष्ट राजनीतिक निर्देशों और पूर्ण परिचालन स्वतंत्रता के साथ अंजाम दिया ग कहा,7 मई को ऑपरेशन शुरू होने के मात्र 22 मिनट के भीतर और 10 मई तक 88 घंटों में इसके समन्वित क्रियान्वयन से रणनीतिक धारणाएं बदल दी गईं। आतंकी ढांचे पर गहरे प्रहार किए गए और लंबे समय से चल रही परमाणु बयानबाजी की हवा निकल गई। उन्होंने बताया कि सेना ने नौ चिन्हित लक्ष्यों में से सात को सफलतापूर्वक नष्ट किया और आवश्यकता पड़ने पर जमीनी आक्रमण के लिए भी पूरी तरह तैयार थी।

'जम्मू-कश्मीर की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक ज्ञान वह अदृश्य शक्ति है जो सामाजिक विकास को गति प्रदान करेगी'

जम्मू, 13 जनवरी । उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को गांधी मेमोरियल कैंप कॉलेज रायपुर, जम्मू में हिंदू एजुकेशन सोसाइटी कश्मीर द्वारा प्रकाशित 'संगरमल' पत्रिका के विशेष अंक का विमोचन किया।

अपने संबोधन में उपराज्यपाल ने सामाजिक एकता और सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विरासत एवं शिक्षा को एक सशक्त सूत्र के रूप में उपयोग करने पर बल दिया जिससे समृद्ध भविष्य की रूपरेखा तैयार हो सके। उन्होंने सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने के लिए करुणा, विनम्रता और दृढ़ता जैसे मूल्यों को आत्मसात करने पर जोर दिया।

उपराज्यपाल ने कहा, तेजी से हो रहे तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के इस युग में हमारी शाश्वत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत, हमारे साझा विश्वास, परंपराएं, कलाएं, रीति-रिवाज और मूल्य समाज को आकार देंगे और राष्ट्र के समग्र विकास को गति प्रदान करेंगे। उपराज्यपाल ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिक ज्ञान वह अदृश्य शक्ति है जो सामाजिक विकास को गति प्रदान करेगी। उन्होंने कहा, जम्मू कश्मीर की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत एक गतिशील संपदा है। वैदिक काल से ही पारंपरिक मूल्य हमारे मार्गदर्शक सिद्धांत रहे हैं जिन्होंने समग्र विकास के लिए नैतिक आधारशिला रखी है। उपराज्यपाल ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए हमारे नागरिकों को और अधिक नवोन्मेषी बनना होगा, अनुसंधान और विकास में बड़ी छलांग लगाने के लिए बौद्धिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना होगा, रचनात्मक उद्योगों को बढ़ावा देना होगा और विरासत में निवेश करना होगा। उपराज्यपाल ने संस्कृति, सामाजिक जिम्मेदारियों और शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए हिंदू शिक्षा सोसायटी, कश्मीर के समर्पित प्रयासों की सराहना की।

तेजी से हो रहे तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के इस युग में हमारी शाश्वत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत, हमारे साझा विश्वास, परंपराएं, कलाएं, रीति-रिवाज और मूल्य समाज को आकार देंगे

इस अवसर पर पद्म श्री डॉ. के.एन. पंडिता, अटल दुल्लू, मुख्य सचिव, प्रो. बी.एल. जुत्शी, अध्यक्ष, हिंदू शिक्षा सोसायटी कश्मीर, राम निवास शर्मा, आयुक्त सचिव, विद्यालय शिक्षा; हिंदू शिक्षा सोसायटी कश्मीर के पदाधिकारी और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। डॉ. अशोक भान सदस्य श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड; प्रो. (डॉ.) प्रगति कुमार कुलपति एसएमवीडीयू; कुलदीप खोड़ा पूर्व डीजीपी; डॉ. अरविंद कारवानी राहत और पुनर्वास (एम) आयुक्त और वरिष्ठ अधिकारी भी लॉन्च समारोह में उपस्थित थे।

आतंकी गतिविधियों से जुड़े 5 और कर्मचारियों की सेवा हुई समाप्त; कुल संख्या 89 हुई

जम्मू तवी, 13 जनवरी। आतंक समर्थक नेटवर्क के खिलाफ जारी कड़ी कार्रवाई के तहत उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को आतंकवादी संगठनों से कथित संबंध रखने वाले पांच और सरकारी कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त कर दीं। यह कार्रवाई संविधान के अनुच्छेद 311(2)(C) के तहत की गई, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में बिना औपचारिक जांच के सेवा से बर्खास्तगी की अनुमति देता है।

इन नवीनतम बर्खास्तगियों के साथ वर्ष 2021 से अब तक आतंक से जुड़े मामलों में हटाए गए सरकारी कर्मचारियों की संख्या बढ़कर 89 हो गई है। यह जम्मू-कश्मीर प्रशासन द्वारा आतंकवाद और उसके ओवरग्राउंड सपोर्ट सिस्टम के खिलाफ तेज अभियान को दर्शाता है।

सेवा से हटाए गए कर्मचारियों में शिक्षा विभाग के शिक्षक मोहम्मद इश्फाक; स्वास्थ्य विभाग के लैब टेक्नीशियन तारिक अहमद रह; लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण (पीएचई) विभाग के सहायक लाइनमैन बशीर अहमद मीर; वन विभाग के फील्ड वर्कर फारूक अहमद भट तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के ड्राइवर मोहम्मद यूसुफ शामिल हैं। एक अधिकारी ने बताया कि यह कार्रवाई उपराज्यपाल मनोज सिन्हा द्वारा आतंक के पूरे इकोसिस्टम—जिसमें ओवरग्राउंड वर्कर और सरकारी संस्थानों में घुसे तत्व शामिल हैं—को ध्वस्त करने की निर्णायक रणनीति का हिस्सा है। जांच में सामने आया कि ये कर्मचारी लश्कर-ए-तैयबा (LeT) और हिज्बुल मुजाहिदीन (HM) जैसे आतंकी संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे, जबकि वे सार्वजनिक राजकोष से वेतन भी प्राप्त कर रहे थे। अधिकारी ने कहा, अनुच्छेद 311(2)(c) का प्रयोग सरकार की मशीनरी को आतंकवादी प्रभाव से पूरी तरह मुक्त करने और उसकी विश्वसनीयता बहाल करने के उद्देश्य से किया गया है। राष्ट्रीय सुरक्षा और जनता के विश्वास की रक्षा के लिए ऐसे कड़े कदम आवश्यक हैं।अधिकारियों के अनुसार, वर्ष 2013 में शिक्षक के रूप में नियुक्त मोहम्मद इश्फाक पाकिस्तान-आधारित लश्कर-ए-तैयबा के लिए काम कर रहा था। वह पाकिस्तान में सक्रिय एक नामित आतंकी हैंडलर के लगातार संपर्क में था और उसे 2022 में डोडा में एक पुलिस अधिकारी की हत्या की योजना बनाने जैसी जिम्मेदारी सौंपी गई थी। योजना को अंजाम देने से पहले ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया और उसके पास से हथियार व गोला-बारूद बरामद किए गए। जांचकर्ताओं के मुताबिक, उसने अपने शिक्षक पद का दुरुपयोग कर युवाओं को कट्टरपंथी बनाने और उग्र विचारधारा फैलाने का प्रयास किया।

जम्मू के वेयरहाउस में व्यापारी संगठन के लोग लोहड़ी मनाते हुए।
छायाः सुरजीत

सरकारी स्कूलों में शीतकालीन शिक्षण सत्र फिर से शुरू

श्रीनगर, 13 जनवरी । स्कूल शिक्षा विभाग ने मंगलवार को शैक्षणिक सत्र 2025-26 के दौरान कक्षा 9वीं से 12वीं तक के सरकारी स्कूलों में शीतकालीन शिक्षण सत्र शुरू करने का निर्णय लिया। स्कूल शिक्षा निदेशालय कश्मीर ने एक आदेश में कहा कि यह निर्णय मौजूदा शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए और माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच विषय-विशिष्ट शिक्षण अंतराल को दूर करने के उद्देश्य से लिया गया है। आदेश में कहा गया है कि इस विषय पर पहले दिए गए मौखिक निर्देशों के क्रम में सभी मुख्य शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है कि वे निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार सरकारी स्कूलों में शीतकालीन शिक्षण सत्रों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करें। डीएसईके ने कहा कि शीतकालीन शिक्षण सत्र विशेष रूप से कक्षा 9वीं से 12वीं तक के छात्रों के लिए आयोजित किए जाएंगे शैक्षणिक आवश्यकताओं और योग्य शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर।आदेश में आगे कहा गया है कि शीतकालीन शिक्षण केंद्र केंद्रीय स्थानों पर स्थित और आसानी से पहुंच योग्य विद्यालयों में स्थापित किए जाएंगे

बिलावार इलाके में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू

जम्मू, 13 जनवरी। जम्मू संभाग के कठुआ जिले के बिलावार इलाके में मंगलवार को आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई है सूत्रों के अनुसार आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया।

नियंत्रण रेखा पर ताजा बारूदी सुरंग विस्फोट

पुंछ , 13 जनवरी । मंगलवार को दूसरे दिन भी जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास जंगल में लगी आग के कारण लगभग एक दर्जन बारूदी सुरंगों में विस्फोट हो गया।

आग सोमवार दोपहर को बालाकोट सेक्टर के बसूनी अग्रिम क्षेत्र में लगी और मंगलवार को मेंढर सेक्टर के कुछ हिस्सों में फैल गई।

अधिकारियों के मुताबिक आग के कारण करीब एक दर्जन बारूदी सुरंगें फट गईं। आतंकवादियों को सीमा पार से भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ करने से रोकने के लिए घुसपैठ रोधी बाधा प्रणाली के हिस्से के रूप में एलओसी के साथ आगे के इलाकों को बारूदी सुरंगों से भर दिया गया है। अधिकारियों ने कहा कि संभावित घुसपैठ के प्रयासों के खतरे के बीच बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर दी गई है और क्षेत्र में गश्त तेज कर दी गई है।

जम्मू कश्मीर उभरते मेडिकल हेल्थकेयर हब के तौर पर स्थापित

2 एम्स, 12 मेडिकल कॉलेज, 17 सीसीबी और 3,166 वेलनेस सेंटर टर्शियरी से लेकर जमीनी स्तर तक सेवाओं को मजबूत कर रहे हैं

जम्मू, 13 जनवरी। जम्मू और कश्मीर अपने हेल्थकेयर सेक्टर में एक ऐतिहासिक और दूरगामी बदलाव देख रहा है, जिसमें बड़े पैमाने पर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, मेडिकल शिक्षा में अभूतपूर्व विस्तार और भारत सरकार से लगातार समर्थन शामिल है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा पिछले कई सालों में किए गए रणनीतिक निवेश ने केंद्र शासित प्रदेश में हेल्थकेयर डिलीवरी को मौलिक रूप से बदल दिया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि गुणवत्तापूर्ण मेडिकल सेवाएं न केवल शहरी केंद्रों में बल्कि ग्रामीण, सीमावर्ती और भौगोलिक रूप से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी सुलभ हों। बड़े पैमाने पर हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं और जमीनी स्तर पर सेवाओं के व्यवस्थित अपग्रेडेशन ने जम्मू और कश्मीर के हेल्थकेयर परिदृश्य को फिर से परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन पहलों ने न केवल मेडिकल सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाई है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि वे केंद्र शासित प्रदेश के

दूर-दराज और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के घरों के करीब उपलब्ध हों प्रमुख संस्थान टर्शियरी हेल्थकेयर को फिर से परिभाषित कर रहे हैं - इस बदलाव की एक आधारशिला जम्मू और कश्मीर में दो अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना है - यह एक ऐसी उपलब्धि है जिसने केंद्र शासित प्रदेश के हेल्थकेयर इकोसिस्टम को राष्ट्रीय और वैश्विक मानकों तक पहुंचाया है। एम्स जम्मू, जो अब पूरी तरह से चालू है, विश्व स्तरीय टर्शियरी और सुपर-स्पेशियलिटी हेल्थकेयर सेवाएं प्रदान कर रहा है। उन्नत डायग्नोस्टिक, सर्जिकल और क्रिटिकल केयर सुविधाओं से लैस, इस संस्थान ने मरीजों को केंद्र शासित प्रदेश के बाहर विशेष इलाज के लिए जाने की आवश्यकता को काफी कम कर दिया है।

सफेदपोश' आतंकी मॉड्यूल के खुलासे के बाद कश्मीर में मस्जिदों और मदरसों की प्रोफाइलिंग शुरू

श्रीनगर, 13 जनवरी। पिछले वर्ष 'सफेदपोश' आतंकी मॉड्यूल के भंडाफोड़ के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने कश्मीर घाटी में मस्जिदों, मदरसों तथा इन धार्मिक संस्थानों से जुड़े प्रबंधनकर्ताओं, इमामों और शिक्षकों की प्रोफाइलिंग की प्रक्रिया शुरू कर दी है। अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि मस्जिदों, मदरसों, इमामों (नमाज के अगुआ), शिक्षकों और इन संस्थानों की प्रबंधन समितियों से जुड़े व्यक्तियों का विवरण एकत्र करने के लिए गांव स्तर के नंबरदारों (राजस्व विभाग के कर्मचारी) को एक निर्धारित प्रोफार्मा उपलब्ध कराया गया है। इस प्रक्रिया के तहत धार्मिक संस्थानों की वित्तीय स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, जिसमें निर्माण कार्यों के लिए प्रयुक्त धन के स्रोतों और दैनिक खर्चों से जुड़ी जानकारी शामिल है। अधिकारियों के अनुसार, सामान्य विवरण के अलावा मदरसों के शिक्षकों और इमामों से आधार कार्ड, बैंक खाता विवरण, संपत्ति स्वामित्व, सोशल मीडिया हैंडल, पासपोर्ट, एटीएम कार्ड, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, सिम कार्ड, मोबाइल फोन मॉडल और आईएमईआई नंबर जैसी विस्तृत जानकारियां भी मांगी गई हैं। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि इस अभियान का उद्देश्य मस्जिदों, मदरसों और उनसे जुड़े व्यक्तियों का एक समग्र और अद्यतन डेटाबेस तैयार करना है। उल्लेखनीय है कि नवंबर 2025 में 'सफेदपोश' आतंकी मॉड्यूल के भंडाफोड़ के दौरान जांच में यह सामने आया था कि कुछ संदिग्धों को मदरसों या सोशल मीडिया के माध्यम से कट्टरपंथी बनाया गया था। अधिकारियों के अनुसार, मौलवी इरफान सहित कुछ इमामों की संदिग्ध भूमिका के चलते वे जांच के दायरे में आए थे। प्रोफार्मा में मस्जिद या मदरसे से जुड़े धार्मिक संप्रदाय—बरेलवी, देवबंदी, हनफ़ी अथवा अहले हदीथ—का विवरण भी मांगा गया है। अधिकारियों ने बताया कि घाटी में लंबे समय से प्रचलित सूफी परंपरा के विपरीत शुद्धतावादी इस्लामी विचारधारा के बढ़ते प्रभाव को युवाओं के कट्टरपंथीकरण का एक प्रमुख कारण माना जा रहा है।

शाक्सगाम घाटी पर चीन का दावा अस्वीकार्य, पूरा पाकिस्तान के कब्जे वाला पूरा कश्मीर भारत का है: एल-जी कविंदर

लद्दाख, 13 जनवरी। लद्दाख के लेफ्टिनेंट गवर्नर कविंदर गुप्ता ने मंगलवार को शाक्सगाम घाटी पर चीन के दावे को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाला पूरा कश्मीर भारत का है। उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी विस्तारवादी कोशिश को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भारत की आपत्तियों के बाद सोमवार को चीन ने शाक्सगाम घाटी पर अपने क्षेत्रीय दावों को फिर से दोहराया, और इस बात पर जोर दिया कि इस इलाके में चीनी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स बेदाग हैं। पूरा (पाकिस्तान के कब्जे वाला) कश्मीर हमारा है। हमें नहीं पता कि पाकिस्तान ने चीन के साथ क्या सौदा किया है। चीन को समझना चाहिए कि उसकी विस्तारवादी नीति से कुछ हासिल नहीं होगा। भारत सक्षम है। यह 1962 का भारत नहीं है, यह 2026 का भारत है। ऐसी किसी भी कोशिश को नाकाम कर दिया जाएगा। विदेश मंत्रालय इस पर संज्ञान ले रहा है,卐 उन्होंने यहां पत्रकारों से कहा। गुप्ता ने कहा कि ऐसे किसी भी काम को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और चीन को यह समझना चाहिए कि आज का भारत पहले से कहीं ज्यादा मजबूत है। उन्होंने कहा कि चीन ने पहले अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों पर भी दावा किया था। पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए, लेफ्टिनेंट गवर्नर ने आरोप लगाया कि पड़ोसी देश अपने ही लोगों को धोखा दे रहा है और संदिग्ध सौदों में शामिल है। पाकिस्तान एक ऐसा देश है जो बिकने के लिए तैयार है। उसे अपनी संप्रभुता या अपने लोगों की कोई चिंता नहीं है। बलूचिस्तान, सिंध और कराची में आवाजें उठ रही हैं, और वहां पाकिस्तानी सेना अत्याचार कर रही है।

राज्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति के लिए सीएम-नेतृत्व वाला चयन पैनल जल्द करेगा बैठक

जम्मू, 13 जनवरी। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की अध्यक्षता वाली एक उच्चस्तरीय चयन समिति इस महीने के अंत में राज्य निर्वाचन आयुक्त (एसईसी) की नियुक्ति के लिए अपनी सिफारिश को अंतिम रूप देने हेतु बैठक कर सकती है।

सूत्रों के अनुसार, चयन समिति—जिसमें नेता प्रतिपक्ष सुनील शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथर, वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री सकीना इटू और ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री जावेद अहमद डार शामिल हैं—20 जनवरी के बाद किसी भी समय बैठक कर अपनी सिफारिश को अंतिम रूप दे सकती है। जम्मू-कश्मीर पंचायती राज अधिनियम, 1989 की धारा 36 की उपधारा (3) के तहत राज्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति मुख्यमंत्री-नेतृत्व वाले चयन पैनल की सिफारिश पर उपराज्यपाल द्वारा की जाती है। हालांकि, जब जम्मू-कश्मीर में निर्वाचित सरकार नहीं होती और जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम की धारा 73 के तहत राष्ट्रपति शासन लागू होता है, तब राज्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति सीधे केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल द्वारा की जाती है। पिछले वर्ष अक्टूबर में जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने एक विधेयक पारित कर राज्य निर्वाचन आयुक्त के पद पर नियुक्ति के लिए अधिकतम आयु सीमा को 65 वर्ष से बढ़ाकर 70 वर्ष कर दिया था। राज्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति के साथ ही जम्मू-कश्मीर में स्थानीय निकाय चुनाव कराने की प्रक्रिया शुरू हो सकेगी, जो वर्तमान में यहां नहीं हैं। शहरी स्थानीय निकायों का कार्यकाल नवंबर 2023 में समाप्त हो चुका है, जबकि निर्वाचित पंचायती राज संस्थाएं 9 जनवरी 2024 से अस्तित्व में नहीं रहीं। वहीं, जिला विकास परिषदों (डीडीसी) का कार्यकाल फरवरी में समाप्त होने वाला है।

JKBOSE आज घोषित करेगा कक्षा 10 और 12 के परिणाम

जम्मू, 13 जनवरी। जम्मू और कश्मीर स्कूल शिक्षा बोर्ड ने मंगलवार को कहा कि वह कक्षा 10 का वार्षिक नियमित परिणाम बुधवार सुबह और कक्षा 12 का परिणाम दोपहर में घोषित करेगा। एक अधिकारी ने बताया, हाल ही की बैठक में, JKBOSE ने निर्णय लिया है कि कक्षा 10 का परिणाम सुबह 10 बजे और कक्षा 12 का परिणाम दोपहर 2 बजे घोषित किया जाएगा। अधिकारी ने आगे कहा कि पिछले शैक्षणिक वर्ष से ही बोर्ड दोनों कक्षाओं के परिणाम एक ही दिन घोषित करने की योजना बना रहा था। इस वर्ष हम इसे सफलतापूर्वक करने में सफल रहे। दोनों परिणाम एक ही दिन घोषित करने का उद्देश्य छात्रों और उनके अभिभावकों को राहत देना है।

सोमवार को शिक्षा मंत्री साकिना इटू ने कहा कि जम्मू और कश्मीर स्कूल शिक्षा बोर्ड (JKBOSE) 10वीं और 12वीं की वार्षिक नियमित परीक्षाओं के परिणाम 14 जनवरी को घोषित करेगा। मंत्री ने कहा कि सरकार ने निर्णय लिया है कि दोनों कक्षाओं के परिणाम एक ही दिन घोषित किए जाएँ। 卐परिणाम प्रक्रिया जनवरी के पहले सप्ताह में पूरी हो गई थी, लेकिन JKBOSE के अध्यक्ष की नियुक्ति में देरी के कारण परिणाम में देरी हुई।

शरबती आंखों की कैसे करें सुरक्षा

आधुनिकता के बढ़ते दौर के कारण आज रोज-मर्रा की जिंदगी में कई मशीनों ने जगह बना ली है और इन सबमें सबसे आम है कम्प्यूटर। आज अधिकांश लोग दिन के 24 घंटों में से 10-12 घंटे कम्प्यूटर के सामने ही बिता रहे हैं।

दिनभर ऑफिस में काम करते हुए तो कम्प्यूटर स्क्रीन आंखों के सामने रहती ही है और घर में इसका स्थान टीवी ले लेती है। ऑफिस जाने वाले लोगों की तो मजबूरी है कि उन्हें इतने समय कम्प्यूटर पर काम करना पड़ता है क्योंकि आज अधिकांश कार्यालयों में बिना कम्प्यूटर के काम ही नहीं होता, लेकिन स्कूल, कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों के लिए तो यह इतना अहम हो गया है कि इसके बिना वे अपने आप को असहाय महसूस करने लगते हैं। अगर वे कम्प्यूटर से हटते तो मोबाइल में लग जाते।

स्वभाविक सी बात है कि इतना समय कम्प्यूटर, टीवी, मोबाइल के सामने बिताना आपकी आंखों के लिए अच्छा नहीं है। आपकी आंखों पर इसका बुरा असर पड़ना लाजमी है। लेकिन अपनी आदतों में सुधार कर आप आंखों को इसके प्रभावों से बचा सकते हैं। नीचे दिए कुछ उपयोगी टिप्स अपनाएं और आंखों को स्वस्थ रखें।

▶ आपकी आंखों की सेहत के लिए जरूरी है कि आपके कम्प्यूटर की जमावट सही हो। मॉनीटर, कीबोर्ड का सही जगह होना बेहद जरूरी है। ध्यान रहे मॉनीटर की आपकी आंखों से दूरी एक हाथ बराबर हो और वह आंखों के लेवल से 20 डिग्री नीचे हो। कीबोर्ड भी ऐसी जगह होना जाहिए जहां आपको टाइप करने में कोई भी दुविधा न हो।

▶ आप जहां बैठे हैं उस कमरे का प्रकाश फैला हुआ होना चाहिए। आपके सिस्टम पर प्रकाश सीधे नहीं पड़ना चाहिए। अपने सिस्टम के कलर, कंट्रास और ब्राइटनेस को अपने अनुसार सेट करें जो आपकी आंखों के लिए सहज हो।

▶ आप अपने चश्मे के लेंस पर एंटी-रिफ्लेक्टिव पर्त लगवा सकते हैं जो आपकी आंखों को कम्प्यूटर से निकलने वाली हानिकारक किरणों से बचाएगा। इसके अलावा आप आंखों के डॉक्टर से कन्सल्ट कर एक खास चश्मा बनवा सकते हैं जो विशेषकर उन लोगों के लिए बनाया जाता है जो कम्प्यूटर का अधिक इस्तेमाल करते हैं।

▶ हमेशा 20-20-20 नियम याद रखें। इन तीन स्टेप्स को अपनाकर आप आंखों की हिफाजत बखूबी कर सकते हैं।

● कम्प्यूटर पर काम करते हुए हर 20 मिनिट बाद अपने सिर को घुमाएं और ऐसी किसी वस्तु पर नजर डालें जो कम से कम आप से 20 फीट दूर हो। ऐसा करने से आपकी आंखों की फोकस दूरी बदलेगी जो आंखों को स्वस्थ रखने में मदद करेगी।

● छोटा-सा ब्रेक लें और उसमें अपनी पलकों को लगातार 20 बार झपकाए। ऐसा करने से आंखों की नमी बरकरार रहेगी।

● एक ही पोजीशन में बैठे रहने से अच्छा है कि आप हर 20 मिनिट में उठकर 20 कदम चलें। ऐसा करना आपकी आंखों के साथ-साथ पूरे शरीर के लिए लाभप्रद है। इससे आपके पूरे शरीर में रक्त का प्रवाह आसानी से होगा। अन्यथा एक ही जगह बैठे रहने से रक्त प्रवाह में रुकावट आ जाती है।

▶ हम औसतन एक मिनिट में 12 बार पलक झपकाते हैं, लेकिन क्या आपको पता है जब हम कम्प्यूटर पर काम करते हैं तो एक मिनिट में सिर्फ 5 बार ही पलकें झपकती हैं। जिस कारण हमारी आंखों की नमी कम हो जाती है। और यही कमी हमारी असहजता का कारण बन जाती है। इससे बचने के लिए जरूरी है कि आप पलक झपकाना न भूलें और आंखों को नम बनाए रखने के लिए जेल या कृत्रिम आंसुओं का उपयोग करें।

▶ काम करते समय हमेशा तनकर बैठे ताकि आपका मेरूदंड सीधा रहे। अपनी हथेलियां आपस में तब तक रगड़ें जब तक कि वे थोड़ी गर्म न हो जाएं। हथेलियों की यह गर्माहट आपकी थकी हुई आंखों को आराम पहुंचाएगी। अपनी इन गर्म हथेलियों को हल्के से आंखों पर रखें और 60 सेकेण्ड तक आराम करें। अपने मन में ये 60 सेकेण्ड गिनें और जब भी आपकी आंखे थक जाएं तब कम से कम दो से तीन बार इस एक्सरसाइज को करें।

▶ ब्रेक के दौरान अपने चेहरे और आंखों को सादे पानी से धोएं। ऐसा करने से आप फ्रेश फील करेंगे।

▶ सुबह ऑफिस आने से पहले उपयोग किए गए दो टी-बैग्स फ्रिज में रखना न भूलें और जब आप घर जाएं तो इन टी-बैग्स को आंखों पर कुछ मिनिटों के लिए रखें। यह आपकी थकी हुई आंखों को आराम देने के साथ-साथ उनकी सूजन भी कम करेगा।

▶ आंखों को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है उचित खान-पान। अपने रोजाना के खाने में विटामिन ए, सी और ई से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करें। हरी पत्तेदार सब्जियां, टमाटर, चिकन और दुग्ध उत्पादों को भी अपने आहार में शामिल करें। अगर आप अपनी आंखों को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो इन टिप्स को अपनाने के साथ समय-समय पर आंखों की जांच कराना न भूलें।

सर्द मौसम में महिलाएं रखें सावधानी

बदलते मौसम का अर्थ ढेरों बीमारियों को बुलावा। ऐसे में महिलाओं को अपना विशेष ध्यान रखना होता है। महिलाओं को कई प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बीमारी उन्हें जब तक पूरी तरह से न पकड़ ले, वे चिकित्सक के पास जाना पसंद नहीं करती हैं। लापरवाही के कारण कभी-कभी बीमारियां इतनी गंभीर हो जाती हैं कि इलाज असंभव हो जाता है। पहले महिलाएं अज्ञानता के चलते ऐसा करती थीं। आज महिलाएं शिक्षित और समझदार हैं लेकिन आज भी सिर्फ ध्यान न देने की वजह से बीमारियां ने गंभीर रूप ले लेती हैं। महिलाओं को चाहिए कि अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखें और समय-समय पर डॉक्टरी परामर्श लेते रहें। * व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें। व्यायाम ज्यादा पकाऊ न हो, इसके लिए रोज कुछ नया करने का प्रयास करें। जैसे सोमवार को सैर, मंगलवार को योग, बुधवार को एक्सरसाइज आदि। *व्यायाम करते समय अपनी पसंद का म्यूजिक सुनना बहुत जरूरी होता है। इससे मन प्रसन्न होता है, और शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। * खाने में हरी सब्जी, फल, सलाद और जूस का नियमित सेवन करें। तेल-घी का ज्यादा उपयोग न करें। महिलाएं एक गिलास दूध प्रतिदिन पिएं। कैल्शियम और सोयायुक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करें। * बदलते मौसम में मॉइश्चराइजर का उपयोग करें। त्वचा को स्वस्थ रखने के लिए एलोवेरा का उपयोग भी कर सकते हैं। दिनभर में लगभग 18 से 20 गिलास पानी पीने से आधी से ज्यादा बीमारियां दूर रहती हैं। * विटामिन, एंटीऑक्सीडेंट दवाइयों का सेवन करें। महिलाएं ब्रेस्ट कैंसर और बच्चादानी के कैंसर की समय-समय पर जांच कराती रहें। साथ ही अन्य चेकअप भी कराती रहें। * जो भी खाएं और पकाएं, हमेशा धोकर खाएं। कफ कोल्ड वाले इंसानों से दूर रहें। जितना हो सके बीमारियों से बचकर रहें।

ठंड से बचाएं अपने नन्हे से दिल को

जाड़े की दस्तक के साथ ही मौज-मस्ती का सिलसिला शुरू हो रहा है। क्रिसमस से लेकर पूरे जनवरी महीने तक बेफिक्री का आलम रहेगा। रंग में भंग डालने की मेरी कोई मंशा नहीं है लेकिन मौज-मस्ती के अपने धांसू आइडिया के साथ अपने दिल की खैरियत के खयाल की गठरी भी बांध लें तो बेहतर होगा। इस दौरान दिल की तरफ से बेतकल्लुफ हो जाना खतरे से खाली नहीं है। ब्रिटेन के चर्चित कवि टीएस इलियट की तर्ज पर कहें तो दिल की परवाह नहीं की तो ये महीने सबसे निर्दयी साबित हो सकते हैं। खाने-पीने का दौर ही नहीं, जाड़े की ठिठुरन भी घातक साबित होती है। सीधे कहें तो इन महीनों में दिल के दौरे का खतरा बहुत बढ़ जाता है। उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोग तो खास खयाल रखें। हृदय रोगों के लिए ये महीने सबसे घातक होते हैं। ठंडे मौसम का हृदय रोगों से गहरा संबंध होता है। हृदय एवं रक्त संचार कई तरह से प्रभावित होते हैं। गाढ़ा हो जाने से रक्त का लसलसापन बढ़ जाता है। पतली रक्त नलिकाएं और संकरी हो जाती हैं। इससे रक्त का दबाव बढ़ जाता है, दिल की धड़कन बढ़ जाती है। यह स्थिति दिल के मरीजों के लिए तो ठीक नहीं ही है, उनके दिलों के लिए भी घातक हैं जो मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा एवं कोलेस्ट्रॉल जैसे जोखिम कारकों से लैस हैं। इस मौसम में श्वसन से संबंधित बीमारियां होती हैं जो दिल पर बुरा असर डालती हैं।

जाड़े में लोग शराब का अधिक सेवन करते हैं। उच्च रक्तचाप एवं खून को पतला करने सहित अन्य जरूरी दवाइयों से बचते हैं। मस्ती के दौरान उन लक्षणों को गंभीरता से नहीं लेते जो दिल के दौरे की तरफ इंगित करते हैं। छाती के दर्द तक को गैस या अपच के कारण हुआ समझने की भूल करते हैं। जाड़े में अधिक समय तक ठंड में रहने और खुली जगह में शारीरिक मेहनत करने से बचें तभी आपके दिल की गर्मजोशी बरकार रहेगी।

आहार जो दे आपको सर्दियों में गर्मी

सर्दी को हमारे यहां सेहत बनाने का मौसम माना जाता है। खूब सारे फल आते हैं, पाचन-शक्ति अच्छी होती है और खूब भूख भी लगती है। कहा जाता है कि इस मौसम में पत्थर भी पचाए जा सकते हैं। ऐसे में जो लोग जिम जाकर बॉडी बनाना चाहते हैं, उनके लिए भी यह मौसम बड़े काम का है।

इस मौसम में स्वस्थ रहने और सर्दी से बचने के लिए बाहरी उपायों के अतिरिक्त हमारे यहां खान-पान पर भी जोर दिया जाता है। इस मौसम में सर्दी-जुकाम होने की आशंका ज्यादा रहती है, ऐसे में अपने शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए एक्सपर्ट अपने खाने में नेचुरल एंटीऑक्सीडेंट्स को शामिल करने का सुझाव देते हैं। ठंड के मौसम में अपने खाने में आंवले को शामिल करें। सीधे नहीं खा सकते हैं तो या तो मुरब्बे के तौर पर या फिर किसी और तरह से हर दिन के खान-पान में इस्तेमाल करें। यदि आप डाइट चार्ट का पालन कर रहे हैं तो फिर आंवला मुरब्बा लेने की बजाय किसी और रूप में लें। इसके साथ ही अजवाइन भी शरीर को गर्मी देने का अच्छा स्रोत है। इससे भी आप कोल्ड एंड फ्लू से बचाव कर सकते हैं। गुड़ और शहद भी सर्दियों के दिनों में अच्छा माना जाता है। तिल्ली और गुड़ के लड्डू सर्दी से बचाव के लिए बेहतरीन उपाय माना जाता है। ठंड के मौसम में सूखे मेवे, बादाम आदि का सेवन भी लाभदायक होता है। या तो इन्हें भिगोकर खाएं या दूध में मिलाकर या फिर सूखे मेवों का दरदरा पावडर-सा बना लें और इसे दूध में मिलाकर प्रोटीन शेक-सा बना लें। पारंपरिक तौर पर सर्दियों के लिए मेवे के लड्डू बनाए जाते हैं। आटे, बेसन या फिर उड़द या मूंग की दाल के आटे से लड्डू बनाए जाते हैं। गुजरात में उड़द की दाल के आटे से बने लड्डुओं को अड़दिया कहा जाता है, जबकि पंजाब में इन्हें दाल की पिन्नियों के नाम से जाना जाता है। डाइट एक्सपर्ट यह मानते हैं कि सर्दियों में देशी घी का उपयोग किया जाना चाहिए। यदि आप किसी डाइट चार्ट को फालो नहीं कर रहे हैं तो घी इस मौसम में अच्छा रोग प्रतिरोधक माना जाता है। यदि आप शक्कर और घी से परहेज करते हैं तो मौसमी फलों का सेवन करें। ताजी सब्जियों और मौसम के फलों के साथ गर्म दूध भी सर्दियों के लिए अच्छा माना जाता है।

सूर्य-किरण थेरेपी क्या है?

वैज्ञानिकों की मान्यता है कि विविध रंगों का मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और प्रत्येक रंग के अपने विशेष आरोग्यकारक गुण होते है। रंग असंतुलन अर्थात रंगों की कमी या अधिकता के कारण मनुष्य के शरीर में कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। सामान्य रूप से देखने पर सूर्य का प्रकाश सफेद ही दिखाई देता है पर वास्तव में वह सात रंगों का मिश्रण होता है। कांच के त्रिपार्श्व से सूर्य की किरणों को गुजारने पर दूसरी ओर इन सात रंगों को स्पष्ट देखा जा सकता है। किसी विशेष रंग की कांच की बोतल में साधारण पानी, चीनी, मिश्री, घी, ग्लिसरीन आदि तीन-चौथाई भरकर सूर्य की किरणें दिखाने से या धूप में रखने से उस कांच द्वारा सूर्य के प्रकाश से उसी रंग की किरणों को ग्रहण किया जाता है और उसी रंग का तत्व और गुण पानी आदि वस्तु में उत्पन्न हो जाता है और वह सूर्यतप्त (सूर्य किरणों द्वारा चार्ज की गई वस्तु रोग-निवारण गुणों और स्वास्थ्यवर्धक तत्वों से युक्त हो जाती है। इन सूर्यतापित वस्तुओं के उचित भीतरी और बाहरी प्रयोग से मनुष्य के शरीर में रंगों का संतुलन कायम रखा जा सकता है और अनेक प्रकार के रोगों को सहज ही दूर किया जा सकता है। यही सूर्य किरण चिकित्सा है। सूर्य की किरणों में सर्वरोगनाशक अद्भुत शक्ति है, यह बात हमारे ऋषि-मनीषी हजारों साल पहले अच्छी तरह जानते थे, परन्तु आधुनिक युग में सूर्य किरण चिकित्सा और रंग-चिकित्सा का अनुसंधान और विकास कार्य विदेशों में हुआ। अब सूर्य-किरण-चिकित्सा भारत में भी निरंतर लोकप्रिय होती जा रही है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - नीलम सिंह गिल द्वारा देहात संदेश, गुरूद्वारा सुंदर सिंह रोड, जम्मू से प्रकाशित एवं नार्थलाईनस पबलिशर्स, 18-B, Phase- II, Industrial Estate, Gangyal, Jammu से मुद्रित। संपादक- नीलम सिंह गिल। फोन नंबरः- (95)191- 2574109 2548103 RNI Regd. No.: JKBIL/2004/13144 *Email: dehatsandesh@gmail.com, dehatsandesh@yahoo.com, dehatsandesh@rediffmail.com*

जिलाभर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया लोहड़ी पर्व

कठुआ, 13 जनवरी (हि.स.)। जिले भर में लोहड़ी पर्व धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्राचीन परंपरा के अनुसार लोहड़ी जलाई गई व उसमें तिल व मूंगफली आदि डालकर परंपरागत गीत गए।

इसी प्रकार मंदिरों में भी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम हुए, जिनमें लोगों को लोहड़ी के इतिहास के बारे में जानकारी दी गई। वहीं मूंगफली व रेवड़ी बांटी गई। इस अवसर पर शहर के विभिन्न वार्ड़ों में उपस्थित लोगों ने खूब नाच गाकर लोहड़ी पर्व को मनाया। इस अवसर पर शहर में कई कार्यक्रम के दौरान गीत गाकर कार्यक्रम में समां बांधा। वहीं एसएसपी कठुआ और डीसी कठुआ ने शहरवासियों को लोहड़ी पर्व की बधाई दी। वार्ड चार में स्थित महाकलेश्वर मंदिर के पुजारी ने बताया कि इस दिन लोग अपने घर-परिवार एवं राष्ट्र की सुख समृद्धि के लिए मन्नते मांगते हैं। वहीं लोहड़ी एवं मकर संक्रांति पर्व भाईचारे के लिए आदर्श पर्व माना जाता है। उन्होंने मकर संक्रांति के दिन की महत्वत्ता बताते हुए कहा कि इस पर्व पर सूर्य और पृथ्वी के बीच भौगोलिक परिवर्तन हो जाता है। उन्होंने कहा कि हमें इस पर्व को भाईचारे व एक दूसरे के प्रति सौहार्द की भावना को कायम रखते हुए मनाना चाहिए।

गुज्जर, बकरवाल निकायों ने राजौरी में खानाबदोश परिवारों के उत्पीड़न का आरोप लगाया

राजौरी, 12 जनवरी(हि.स.)। जम्मू-कश्मीर गुज्जर बकरवाल युवा कल्याण सम्मेलन और जम्मू-कश्मीर वन अधिकार गठबंधन ने राजौरी जिले के महरी गुज्जरान क्षेत्र में सात खानाबदोश बकरवाल परिवारों के लगातार उत्पीड़न पर नाराजगी व्यक्त की है, और समस्या का तुरंत समाधान नही होने पर पूर्ण पैमाने पर अभियान चलाने की चेतावनी दी है। दोनों संगठनों ने वन विभाग के अधिकारियों पर वन भूमि संरक्षण के बहाने पिछले दो वर्षों से परिवारों को निशाना बनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि यह कार्रवाई 2006 के वन अधिकार अधिनियम का उल्लंघन करती है जो वन-निवास समुदायों के पारंपरिक अधिकारों को मान्यता देता है और उनकी सुरक्षा करता है। संगठनों ने कहा कि कथित कार्रवाई संविधान के अनुच्छेद 21 का भी उल्लंघन है जो जीवन और आजीविका के अधिकार की गारंटी देता है। उन्होंने चेतावनी दी कि इन सुरक्षाओं का उल्लंघन करने वाले अधिकारियों के खिलाफ एससी और एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई की जानी चाहिए।

समूहों ने कहा कि यह बेहद परेशान करने वाली बात है कि एक ही क्षेत्र में पंजीकृत राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और आधार सहित वैध दस्तावेज होने के बावजूद परिवारों को दबाव का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं का भी हवाला दिया, जिसमें कहा गया कि इस तरह की कार्रवाइयां सतत विकास लक्ष्य 10 के विपरीत हैं, जो असमानता को कम करने पर केंद्रित हैस्थानीय सरपंच शाज़िया तबस्सुम चौधरी का हवाला दिया गया कि उन्होंने पिछले दो वर्षों में इस मुद्दे को बार-बार उठाया है। संगठनों के अनुसार उन्होंने परिवारों की बेदखली को रोकने के लिए कई अधिकारियों से संपर्क किया लेकिन राहत पाने में असफल रहीं। समूहों ने कहा कि लंबे समय तक अनिश्चितता ने आजीविका को नुकसान पहुंचाया है और प्रभावित परिवारों के बच्चों की शिक्षा बाधित हुई है।

आईआईटी जम्मू में जनजातीय विरासत मानचित्रण पर कार्यशाला का आयोजन

जम्मू, 13 जनवरी। जल शक्ति, वन, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण तथा जनजातीय मामलों के मंत्री जावेद अहमद राना ने आज कहा कि जनजातीय विरासत एक जीवंत और गतिशील ज्ञान प्रणाली है, जो भाषा, आस्था प्रणालियों, पारंपरिक प्रथाओं और सामाजिक संरचना में गहराई से निहित है। उन्होंने कहा कि इसके संरक्षण के लिए सहभागितापूर्ण, समुदाय-आधारित शोध ढांचे की आवश्यकता है, जो स्वदेशी ज्ञान परंपराओं और जीवन्त परंपराओं को मान्यता देता हो। मंत्री भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जम्मू द्वारा आयोजित जनजातीय विरासत का मानचित्रण विषयक कार्यशाला को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। इस कार्यशाला का उद्देश्य डिजिटल दस्तावेजीकरण, अभिलेखीय तकनीकों तथा भारत भर की स्वदेशी जनजातियों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, मौखिक परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं के आलोचनात्मक अध्ययन पर केंद्रित था। जावेद राना ने स्पष्ट किया कि जनजातीय विरासत का संरक्षण केवल बाहरी हस्तक्षेप से संभव नहीं है, बल्कि यह समुदाय की संरक्षक भूमिका और पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान के हस्तांतरण पर आधारित होना चाहिए उन्होंने कह फ्जनजातीय विरासत तभी जीवित रह सकती है जब समुदाय स्वयं अपनी परंपराओं के सक्रिय संरक्षक बनें। संरक्षण उसी समय सार्थक होगा जब यह उन लोगों के भीतर से विकसित हो, जो प्रतिदिन इस विरासत को जीते, निभाते और आगे बढ़ाते हैं।

पुलिस ने पुलवामा में एनडीपीएस एक्ट के तहत रिहायशी घर कुर्क किया

श्रीनगर, 13 जनवरी (हि.स.)। मादक पदार्थों के व्यापार के वित्तीय नेटवर्क को ध्वस्त करने के उद्देश्य से पुलवामा में जम्मू और कश्मीर पुलिस ने एसआईटी एनडीपीएस पुलवामा के माध्यम से पुलवामा जिले के करीमाबाद क्षेत्र में स्थित लाखों रुपये मूल्य की एक आवासीय संपत्ति को जब्त कर लिया है। बयान के अनुसार जब्त की गई संपत्ति में करीमाबाद तहसील पुलवामा में स्थित खसरा क्रमांक 1735 मिन (आबाद-ए-देह), खेवट क्रमांक 485, खाता क्रमांक 992 वाली भूमि पर निर्मित एक मंजिला आवासीय मकान शामिल है जो करीमाबाद, पुलवामा निवासी गुलाम नबी मीर के पुत्र फैयाज अहमद मीर का है। बयान के अनुसार यह संपत्ति नशीले पदार्थों की तस्करी से प्राप्त धन से अवैध रूप से अर्जित की गई है और सक्षम प्राधिकारी द्वारा आदेश संख्या 01/2026 दिनांक 13-01-2026 के तहत एनडीपीएस अधिनियम, 1985 की धारा 68-एफ(1) के साथ अध्याय-वीए के तहत जब्त कर ली गई है। आरोपी पुलवामा पुलिस स्टेशन में एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8/20 के तहत एफआईआर संख्या 248/2025 और एनडीपीएस अधिनियम की धारा 8/20 के तहत एफआईआर संख्या 39/2025 में शामिल रहा है जो नशीले पदार्थों से संबंधित अवैध गतिविधियों में उसकी निरंतर संलिप्तता को दर्शाता है। बयान में आगे कहा गया है कि पुलिस नशीले पदार्थों के खतरे से निपटने और नशीले पदार्थों की तस्करी में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करने के अपने दृढ़ संकल्प को दोहराती है जिसमें अवैध साधनों से अर्जित संपत्तियों को निशाना बनाना भी शामिल है।

श्रीनगर के पालपोरो में 8 किलोग्राम से अधिक नशीले पदार्थ जब्त, एक तस्कर गिरफ्तार

श्रीनगर, 13 जनवरी (हि.स.)। एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स (एएनटीएफ) कश्मीर ने मंगलवार को श्रीनगर जिले के पालपोरा इलाके में 8 किलोग्राम से अधिक नशीले पदार्थ जब्त करके एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बताया कि एएनटीएफ कश्मीर को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना मिली थी कि विचारनाग नौशेरा श्रीनगर निवासी अब्दुल अहद शेख पालपोरा श्रीनगर में अन्य नशीले पदार्थ तस्करों को चरस बेचने के लिए जा रहा है। इस पर एएनटीएफ कश्मीर ने पालपोरा श्रीनगर में नाका लगाया और उक्त नशीले पदार्थ तस्कर को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से नायलॉन की बोरी में छिपाकर रखा गया 8.33 किलोग्राम चरस पाउडर जैसा पदार्थ बरामद किया गया। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस स्टेशन एएनटीएफ कश्मीर में एफआईआर संख्या 01/2026 के तहत संबंधित धाराओं के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया है।

पुलिस ने सड़क दुर्घटना संबंधित मामले को 48 घंटों के भीतर सुलझाया, आरोपी गिरफ्तार

कठुआ, 13 जनवरी (हि.स.)। कठुआ पुलिस ने एसएसपी कठुआ मोहिता शर्मा आईपीएस के समग्र पर्यवेक्षण में एक सड़क दुर्घटना संबंधित मामले को 48 घंटों के भीतर सुलझाया और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के अनुसार 10 जनवरी की सुबह नगरी पुलिस पोस्ट को नगरी पुल पर एक दुर्घटना की सूचना मिली। सूचना मिलते ही नगरी पुलिस पोस्ट की टीम मौके पर पहुंची और वहां केवल सिंह नामक एक घायल व्यक्ति को पाया, जिसे इलाज के लिए एसडीएच नगरी भेजा गया। घटनास्थल पर पंजीकरण संख्या जेके08पी-1163 वाली एक मोटरसाइकिल पड़ी हुई थी। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि एक ऑटो लोड कैरियर ने मोटरसाइकिल को टक्कर मारी और घायल मोटरसाइकिल चालक अर्जुन कुमार पुत्र गुलजार चंद निवासी मीरपुर जग्गो तहसील नगरी जिला कठुआ था, को अपने साथ ले गया और मौके से फरार हो गया।

एसएसपी कठुआ ने लोहड़ी/मकर संक्रांति पर दीं शुभकामनाएं

कठुआ, 13 जनवरी (हि.स.)। लोहड़ी और मकर संक्रांति के पावन अवसर पर कठुआ जिला पुलिस के सभी रैंकों की ओर से एसएसपी कठुआ मोहिता शर्मा आईपीएस ने सेवारत पुलिसकर्मियों के परिवारों, शहीद पुलिसकर्मियों, आम जनता और जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

शुभकामनाएं देते हुए एसएसपी ने आशा व्यक्त की कि यह त्योहार लोगों के जीवन में अधिक सुख, समृद्धि और शांति लाए और हर प्रकार की नकारात्मकता को दूर करे।

अपने संदेश में एसएसपी कठुआ ने इन त्योहारों के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला, जो कृतज्ञता, नई शुरुआत और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि यह त्योहार भाईचारे के बंधन को मजबूत करे, सद्भाव को बढ़ावा दे और एकजुटता की भावना को पोषित करके समुदायों में खुशियां लाए।

वार्ड 56 में भाजपा ने मनाया लोहड़ी मिलन कार्यक्रम

जम्मू, 13 जनवरी (हि.स.)। भाजपा जम्मू-कश्मीर अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद सत शर्मा ने जम्मू शहर के वार्ड नंबर 56 में आयोजित लोहड़ी मिलन कार्यक्रम में शिरकत की।

यह कार्यक्रम भाजपा जम्मू-कश्मीर महामंत्री एवं पूर्व डिप्टी मेयर श्री बलदेव सिंह बिलावरिया द्वारा आयोजित किया गया था। इस अवसर पर सत शर्मा ने स्थानीय नागरिकों, पार्टी कार्यकर्ताओं और गणमान्य व्यक्तियों के साथ लोहड़ी पर्व की खुशियाँ साझा कीं।

उन्होंने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम सामाजिक सौहार्द, भाईचारे और आपसी एकता को मजबूत करते हैं तथा जनता से सीधा जुड़ाव स्थापित करने का माध्यम बनते हैं।

सचिव आरडीडी ने बडगाम व खानसाहिब ब्लॉकों का दौरा किया, विकास कार्यों की समीक्षा की

बडगाम, 13 जनवरी। सचिव, ग्रामीण विकास विभाग (आरडीडी) एवं पंचायती राज, मोहम्मद एजाज़ असद ने आज बडगाम जलि का विस्तृत दौरा कर विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं के तहत चल रहे विकास कार्यों की भौतिक और वित्तीय प्रगति की समीक्षा की।

दौरे के दौरान सचिव ने बडगाम और खानसाहिब ब्लॉकों में कई महत्वपूर्ण परियोजना स्थलों का निरीक्षण किया और कार्यों को समयबद्ध ढंग से पूरा करने, गुणवत्ता सुनिश्चित करने तथा सार्वजनिक धन के सर्वोत्तम उपयोग पर ज़ोर दिया।

दौरे की शुरुआत क्षेत्रीय विस्तार प्रशिक्षण केंद्र (आरईटीसी), बडगाम से हुई, जहां मोहम्मद एजाज़ असद ने बडगाम और खानसाहिब ब्लॉकों के सभी खंड विकास अधिकारियों (बीडीओ) के साथ बैठक की। सचिव ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी विकास कार्यों को निर्धारित समय-सीमा और योजना दिशानिर्देशों का पालन करते हुए शीघ्र पूरा किया जाए।

इसके पश्चात सचिव ने सहायक आयुक्त विकास (एसीडी), बडगाम कार्यालय के निकट निर्माणाधीन जिला विकास परिषद (डीडीसी) भवन का निरीक्षण किया। इस परियोजना की अनुमानित लागत 253.29 लाख है, जिसके मुकाबले अब तक 94.95 लाख की राशि व्यय की जा चुकी है। सचिव ने कार्यों की प्रगति की समीक्षा की और कार्यान्वयन एजेंसी को गुणवत्ता से समझौता किए बिना शेष कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। इसके बाद दौरा पंचायत हलका शूलीपोरा, ब्लॉक बडगाम पहुंचा, जहां सचिव ने आस्तान सैयद मूसा दीवान में सीडी एवं पंचायत योजनाओं के तहत निर्मित की जा रही कंक्रीट सुरक्षा दीवार के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इस परियोजना की अनुमानित लागत 131.93 लाख है। इसके मुकाबले 112.14 लाख की राशि जारी की जा चुकी है, जबकि अब तक 35.89 लाख व्यय किए गए हैं। सचिव ने संबंधित अधिकारियों को उचित निगरानी और समय पर कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। ब्लॉक खानसाहिब में सचिव ने पंचायत हलका शिनीपोरा में मनरेगा के तहत 10.00 लाख की लागत से विकसित किए जा रहे खेल मैदान के निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा की।

मंत्री सतीश शर्मा ने जम्मू-हरिद्वार बस सेवा को दिखाई हरी झंडी

जम्मू, 13 जनवरी (हि.स.)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले, सूचना प्रौद्योगिकी, परिवहन, युवा सेवाएं एवं खेल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री सतीश शर्मा ने सोमवार को ज्यूएल चौक स्थित पवित्र पंचमुखी हनुमान मंदिर से जेकेएसआरटीसी की जम्मू-हरिद्वार यात्री बस सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह पहल जम्मू-कश्मीर में तीर्थ पर्यटन को बढ़ावा देने और सार्वजनिक परिवहन संपर्क को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि यह सेवा मंदिरों के शहर जम्मू और पवित्र गंगा नदी के प्रवेश द्वार हरिद्वार के बीच आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सेतु का कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि हर साल जम्मू-कश्मीर से लाखों श्रद्धालु गंगा आरती, श्राद्ध, पिंडदान और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के लिए हरिद्वार जाते हैं और यह सीधी बस सेवा उनकी यात्रा को सुरक्षित, सुलभ और किफायती बनाएगी।

10वें वेटरन्स दिवस पर पूर्व सैनिकों को दी श्रद्धांजलि

राजौरी, 13 जनवरी। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले, सूचना प्रौद्योगिकी, परिवहन, युवा सेवा एवं खेल मंत्री सतिश शर्मा ने आज राजौरी में आयोजित 10वें वेटरन्स दिवस एवं भूतपूर्व सैनिक दिवस की मेगा रैली के दौरान पूर्व सैनिकों, वीर नारियों और सेवारत सैनिकों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यह कार्यक्रम भारतीय सेना की नॉर्दर्न कमांड द्वारा आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा, जीओसी-इन-सी नॉर्दर्न कमांड; लेफ्टिनेंट जनरल पी. के. मिश्रा, जीओसी व्हाइट नाइट कोर तथा मेजर जनरल कौशिक मुखर्जी, जीओसी 25 इन्फैंट्री डिवीजन सहित कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी उपस्थित रहे। इसके अलावा बड़ी संख्या में पूर्व सैनिक, वीर नारियां और उनके परिवार भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

सभा को संबोधित करते हुए सतिश शर्मा ने कहा कि वेटरन्स दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सशस्त्र बलों द्वारा देश की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा के लिए दिए गए अतुलनीय बलिदानों की गंभीर याद दिलाने वाला दिन है। उन्होंने कहा कि भारतीय सैनिकों की वीरता, अनुशासन और पेशेवर

क्षमता ने भारत को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया है।

पूर्व सैनिकों को आजीवन देशभक्ति का पथप्रदर्शक बताते हुए मंत्री ने कहा, एक बार सैनिक, हमेशा सैनिक। एक फौजी कभी वास्तव में सेवानिवृत्त नहीं होता। उसका कर्तव्यबोध, साहस और अनुशासन सेवानिवृत्ति के बाद भी समाज का मार्गदर्शन करता रहता है।

अपने निजी अनुभव साझा करते हुए भावुक स्वर में सतिश शर्मा ने कहा कि उनके पिता स्वयं एक पूर्व सैनिक थे और उन्होंने बचपन से ही सेना के मूल्यों को आत्मसात किया। उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्ति के बाद भी उनके पिता ने सार्वजनिक जीवन के माध्यम से लोगों की सेवा जारी रखी, जो एक सैनिक के आजीवन सेवा भाव को दर्शाता है।

मंत्री ने जम्मू-कश्मीर में पूर्व सैनिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सेवानिवृत्त सैनिक 'ऑपरेशन सद्भावना' जैसी पहलों के माध्यम से शांति स्थापना, सामाजिक सौहार्द और युवाओं के मार्गदर्शन में निरंतर योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों के बलिदान और समर्पण के कारण ही आज जम्मू-कश्मीर शांति, स्थिरता और विकास के नए दौर में प्रवेश कर रहा है।

पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए सतिश शर्मा ने कहा कि उनका कल्याण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि आर्मी वेलफेयर प्लेसमेंट ऑर्गनाइजेशन, राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड, सोल्जर असिस्टेंस सेंटर और वीर सैनिक सहायता केंद्र जैसी व्यवस्थाओं को और सशक्त किया जा रहा है, ताकि पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों को रोजगार, कानूनी, चिकित्सकीय और पुनर्वास संबंधी सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

वीर नारियों और शहीदों के परिजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मंत्री ने कहा कि उनका साहस और बलिदान पूरे राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने उन्हें जम्मू-कश्मीर सरकार और सशस्त्र बलों की ओर से निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर दिव्यांग सैनिकों को उनकी गतिशीलता और आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से विशेष रूप से डिजाइन किए गए स्कूटर वितरित किए गए। सतिश शर्मा ने स्वयं स्कूटर सौंपे और लाभार्थियों से बातचीत की।

कार्यक्रम में मद्रास रेजिमेंट और पंजाब रेजिमेंट के जवानों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गईं, जिससे पूरे आयोजन में देशभक्ति का माहौल बना रहा।

रैली का समापन मंत्री, वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों, पूर्व सैनिकों, एनसीसी कैडेट्स और आम जनता के साथ संवाद के साथ हुआ।

भद्रवाह में किसानों को अखरोट के पौधों का वितरण, बागवानी को मिलेगा बढ़ावा

अमीर इक़बाल ख़ान

भद्रवाह, 13 जनवरी-अतिरिक्त जिला भद्रवाह के अटखर क्षेत्र में मंगलवार को आकांक्षी ब्लॉक विकास कार्यक्रम के तहत आयोजित एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान 200 किसानों को अखरोट के एक हजार से अधिक पौधे वितरित किए गए। यह संयुक्त पहल ऑल इंडिया पीपुल्स वेलफेयर सोसाइटी. द सोशल वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया तथा जिला डोडा के बागवानी विभाग के सहयोग से संपन्न हुई।कार्यक्रम में सिरतंगल, छाबा, बुटला, सेहरी, लोअर भेज्जा, अपर भेज्जा, कत्यारा, बेहानी नाला, शेराखी सहित आसपास के गांवों के किसानों ने भाग लिया। इस पहल का उद्देश्य क्षेत्र में बागवानी को प्रोत्साहित करना और फलोद्यानों के माध्यम से ग्रामीण आय में वृद्धि करना है।AIPWS के अध्यक्ष एवं TSWOOI के उपाध्यक्ष ज़फ़र हुसैन वानी के नेतृत्व में अटखर के विभिन्न स्थानों पर पौधों का वितरण किया गया। इस अवसर पर संगठन के महासचिव उमर फारूक टाक, प्रबंध आयोजक अनिकेत शर्मा, कोषाध्यक्ष मोहद सलीम बट्ट, सचिव बद्री नाथ, अब्दुल हाफ़िज़ डार, नज़ीर अहमद शाह, जान मोहद तथा मोहद शमीम उपस्थित रहे। ज़फ़र हुसैन वानी ने कहा कि यह पहल किसानों को बंजर भूमि को उपजाऊ फलोद्यानों में बदलने के लिए प्रेरित करेगी, जिससे आजीविका सशक्त होगी और भद्रवाह क्षेत्र में सतत विकास को बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम में मौजूद बागवानी विकास अधिकारी भद्रवाह रोहन कुमार भगत ने अपनी टीम के सदस्य रसीम फ़रीद और मोहद अशरफ़ के साथ किसानों को कैपेक्स एवं नॉन-प्लान मदों के तहत संचालित सरकारी योजनाओं, प्रोत्साहनों और सहायता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। भगत ने कहा कि यह क्षेत्र फल उत्पादन की अपार संभावनाएं रखता है और विभाग की ओर से हरसंभव सहयोग सुनिश्चित किया जाएगा। किसानों ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि बागवानी अपनाने से उनकी आय और जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

एमडी डेयरी डेवलपमेंट ने उधमपुर में प्रगति की समीक्षा की; सततता और सर्कुलर इकोनॉमी पर दिया जोर

उधमपुर, 13 जनवरी। मिशन निदेशक, डेयरी विकास (पशुपालन विभाग) नरेंद्र सिंह बाली ने उधमपुर जिले का व्यापक क्षेत्रीय दौरा कर प्रमुख विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की समीक्षा की।

इस दौरे का मुख्य फोकस समग्र कृषि विकास कार्यक्रम और एकीकृत डेयरी विकास योजना के स्थानीय आजीविका पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करना रहा।

मुख्य पशुपालन अधिकारी डॉ. शिवतामरी खजूरिया तथा जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ मिशन निदेशक ने विभिन्न सरकारी योजनाओं का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। इनमें सैटेलाइट हीफर यूनिटों की स्थापना, व्यावसायिक लेयर फार्म तथा फ्री-रेंज पोल्ट्री यूनिट शामिल थीं।

लाभार्थियों से बातचीत के दौरान

मिशन निदेशक ने इस बात पर जोर दिया कि सरकारी सब्सिडी का उद्देश्य दीर्घकालिक और टिकाऊ आय सृजित करना है। उन्होंने संचालन के प्रभावी विस्तार के लिए स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से समूह दृष्टिकोण अपनाने की वकालत की दौरे का एक प्रमुख आकर्षण सर्कुलर इकोनॉमी पर मिशन निदेशक का विशेष जोर रहा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे गोबर से बायोगैस उत्पादन कर नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करें, स्लरी को वर्मी-कम्पोस्ट में परिवर्तित कर जैविक खेती को बढ़ावा दें ताकि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम हो, तथा पशुपालन को जलवायु अनुकूल बनाकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटा जा सके।

संपादकीय

धारणा बदलने की आवश्यकता

इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि लोग– विशेषकर वे जो अक्सर सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हैं–जनता को राजकोष (एक्सचेकर) के माध्यम से प्रदान की जा रही सेवाओं के संदर्भ में अपना दृष्टिकोण बदलें।

इसी संदर्भ में एक रिपोर्ट सामने आई है, जिसमें खुलासा हुआ है कि जम्मू-कश्मीर में महिलाओं के लिए सरकार की निःशुल्क परिवहन सेवा के तहत जम्मू स्मार्ट सिटी लिमिटेड को इस छूट की घोषणा के बाद से लगभग 14 करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ा है। बताया जाता है कि JSCL जम्मू में स्मार्ट बस सेवा का संचालन करती है और यह सरकार के अधीन कार्यरत है, जिसके तहत योजना के अंतर्गत महिला यात्रियों को निःशुल्क यात्रा की सुविधा देना अनिवार्य है। यह जानकारी सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत दायर एक आवेदन के उत्तर में दी गई है।

JSCL के अंतर्गत संचालित स्मार्ट बस सेवा महिलाओं को निःशुल्क यात्रा की सुविधा प्रदान करती है–यह कदम जम्मू-कश्मीर में एनसी-नेतृत्व वाली सरकार द्वारा अप्रैल पिछले वर्ष अपनी प्रतिबद्धताओं में से एक के रूप में घोषित किया गया था। हालांकि यह निःशुल्क सेवा कश्मीर में भी संचालित है, लेकिन वहां हुए अनुमानित खर्च का आकलन अभी किया जाना बाकी है। जम्मू में तथाकथित नुकसान की गणना 31 दिसंबर 2025 तक की गई है। अब बड़ा सवाल यह है कि राजकोष से होने वाले इस व्यय को जनकल्याण के लिए किया गया सरकारी खर्च क्यों नहीं माना जा रहा, और इसे नुकसान के रूप में क्यों प्रस्तुत किया जा रहा है? इस मामले में स्पष्ट रूप से एक गलतफहमी दिखाई देती है, क्योंकि जनता को सेवाएं उपलब्ध कराने पर सरकार द्वारा किया गया खर्च नुकसान नहीं कहा जा सकता। इस विशेष मामले में अंतर केवल इतना है कि यह लाभ समाज की महिला वर्ग तक सीमित है।

यदि जनकल्याणकारी पहलों पर होने वाले खर्च को सरकार का नुकसान माना जाएगा, तो फिर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य क्षेत्र, शिक्षा, सड़कों और नालियों आदि पर खर्च किए गए हर पैसे को भी नुकसान ही कहा जाना चाहिए, क्योंकि वह धन भी सार्वजनिक राजकोष का ही हिस्सा है। यदि इस प्रकार का खर्च उचित है, तो फिर जम्मू-कश्मीर की महिलाओं को सार्वजनिक परिवहन में निःशुल्क यात्रा की सुविधा देने को उसी दृष्टिकोण से क्यों नहीं देखा जा रहा?

यदि सरकार बस स्टॉप पर शेड बनाने में पैसा खर्च करती है और उसे नुकसान नहीं माना जाता, तो फिर सार्वजनिक परिवहन में महिलाओं को दी जा रही उपरोक्त सुविधा को नुकसान कैसे कहा जा सकता है? ऐसा प्रतीत होता है कि इस मुद्दे को बार-बार उछालने के पीछे कुछ राजनीतिक उद्देश्य हो सकते हैं, जिनकी जांच किए जाने की आवश्यकता है। जहां तक महिलाओं के लिए विशेष रूप से चलाई जा रही इस सेवा पर होने वाले खर्च का सवाल है, इसे एक कल्याणकारी राज्य द्वारा उठाया गया एक और सकारात्मक कदम माना जाना चाहिए। पूरे परिदृश्य को बदली हुई धारणा के साथ देखा जाना चाहिए, यह समझते हुए कि सत्ता में बैठे लोगों ने इस पहल को सद्भावना के रूप में लिया है, न कि राजकोष की लूट के रूप में। केंद्र और विभिन्न राज्यों की सरकारों द्वारा 5 किलो मुफ्त राशन जैसी अनेक अन्य योजनाएं और सुविधाएं भी दी जा रही हैं, लेकिन कुछ तत्व विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर की इसी योजना के पीछे पड़े हुए हैं, जो कि विचारणीय और हैरान करने वाला है।

मकर संक्रांतिः आहार का विज्ञान और समाज संगठन का सूत्र

– गिरीश जोशी

आज के समय में हम लोग अपने भोजन को लेकर बड़े सजग हैं। खाने की हर चीज के बारे में उसकी कैलोरी को देखकर उसे खाने या ना खाने का फैसला लेते हैं। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी हो जाता है कि संक्रांति के समय तिल-गुड़ और खिचड़ी क्यों खाना चाहिए, पतंग क्यों उड़ाते हैं। नई पीढ़ी के ढेर सारी सवालों का जवाब आज के विज्ञान की दृष्टि से देखने की कोशिश करते हैं तो ये दिखता है कि हमारे देश में सारे त्योहार प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े हुए हैं। मुख्य रूप से ग्रह-नक्षत्रों की गति, अलग-अलग राशियों में भ्रमण के आधार पर उत्सव पर्व मनाए जाते हैं।

शास्त्रों में लिखा है-माघे मासे तु संप्राप्ते मकरं सूर्यगच्छति। तस्मात् संक्रान्तिरित्युक्ता पुण्यदा पुण्यवर्धिनी॥

अर्थात – माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, उसे मकर संक्रांति कहते हैं। यह पर्व पुण्य देने वाला और पुण्य को बढ़ाने वाला होता है। वास्तव में सूर्य तो अपने अक्ष पर होता है, पृथ्वी और अन्य ग्रह उसके चारों और चक्कर लगाते हैं लेकिन ऐसा कहा जाता है कि जब सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है यानी पृथ्वी से देखने पर सूर्य मकर राशि में दिखाई देने लगता है तब मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है।

मकर संक्रांति के बाद दिन बड़े होने लगते हैं और रात छोटी होने लगती है। यानी इस दिन से जीवन में प्रकाश का समय बढ़ने लगता है, अंधकार घटने लगता है। हमारी संस्कृति में प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक भी माना जाता है अंधकार को अज्ञान कहा जाता है।

संक्रांति का अर्थ है सम्यक क्रांती अर्थात योग्य दिशा में व्यक्ति और समाज का परिवर्तन। समाज को आत्मविस्मृति के अंधकार से बाहर निकाल कर, चेतना के जागृति के, सत्य के प्रकाश की ओर ले जाना सनातन संस्कृति का उद्देश्य है। इस लक्ष्य की याद समाज को करवाने के लिए मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जाता है।

मकर राशि में प्रवेश करने वाले सूर्य की महत्ता को बताने वाली एक सूक्ति है–
नमः सूर्याय लोकाय लोकनाथाय भास्वते।
सर्वरोगहरायैव मकरस्थाय ते नमः॥

अर्थात – लोकों को प्रकाशित करने

वाले, लोकनाथ, तेजस्वी सूर्यदेव को नमस्कार है। मकर राशि में स्थित सभी रोगों को दूर करने वाले सूर्य को प्रणाम है।

मकर संक्रांति पर तिल और गुड़ साथ में खाने की परंपरा है। शास्त्र कहते है –
तिलगुडैः सह हर्षेण सूर्यपूजा विधीयताम्।
मकरसंक्रान्तिकालेऽस्मिन् सर्वे सन्तु निरामयाः॥

अर्थात मकर संक्रांति के अवसर पर तिल और गुड़ के साथ हर्षपूर्वक सूर्य की पूजा की जाए। इस पावन समय में सभी लोग स्वस्थ और निरोग रहें।

हमारे पूर्वज विज्ञान जानते थे। आज का विज्ञान कहता है तिल में उच्च मात्रा में कैलोरी, प्रोटीन और स्वस्थ वसा होती है, जो ठंडे मौसम में शरीर को ऊर्जा देती है। यह शरीर को गर्म रखने में मदद करता है। साथ ही तिल में कैल्शियम, मैग्नीशियम और जिंक जैसे मिनरल्स होते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। सर्दी में हड्डियों में दर्द और समस्याएँ बढ़ सकती हैं, लेकिन तिल इन समस्याओं को कम करने में मदद करता है।

उसी तरह गुड के बारे में आज का विज्ञान कहता है कि गुड़ में प्राकृतिक गर्मी होती है, जो सर्दियों में शरीर को अंदर से गर्म रखने में मदद करती है। सर्दियों में कई बार शरीर में पानी की कमी और पाचन संबंधी समस्याएँ बढ़ जाती हैं और गुड़ इन समस्याओं को हल करने में मदद करता है। सर्दियों में शरीर की इम्युनिटी कमजोर हो सकती है और गुड़ में आयरन और फोलिक एसिड की मौजूदगी से शरीर में खून की कमी पूरी होती है। गुड़ में एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं। यह सर्दी, जुकाम और फ्लू जैसी मौसमी बीमारियों से बचाव में मदद करता है। इन वैज्ञानिक गुणों के कारण सर्दी में गुड़ और तिल खाने की परंपरा हमारे पूर्वजों ने स्थापित की।

खिचड़ी क्यों खाई जाती है–

मकर संक्रांति के समय शीत ऋतु अपने चरम पर होती है। इस मौसम में पाचन शक्ति कमजोर हो सकती है। खिचड़ी हल्का, सुपाच्य और गर्म भोजन है, जो शरीर को ठंड से संरक्षण देता है और पाचन को संतुलित रखता है। आयुर्वेदिक दृष्टि सेखिचड़ी में चावल और दाल का संयोजन होता है, जिसे आयुर्वेद मेंपूर्ण आहारफ्र माना जाता है। दाल से प्रोटीन, चावल से ऊर्जा घी से बल और ओज मिलता है। शीत ऋतु में बढ़ने वाले वात और कफ के दोष को खिचड़ी संतुलित करती हैं। उत्तर भारत, विशेषकर प्रयागराज और पूर्वांचल क्षेत्रों में मकर संक्रांति कोखिचड़ी पर्व भी कहा जाता है। इस दिन खिचड़ी का दान पुण्यकारी माना जाता है। साधु-संतों और जरूरतमंदों को खिचड़ी खिलाने की परंपरा भी है।

खिचड़ी सादा और सर्वसुलभ भोजन है। इसे सभी वर्गों के लोग एक समान रूप से ग्रहण कर सकते हैं, इसलिए यह समरसता और समानता का प्रतीक भी मानी जाती है। संक्रांति पर खिचड़ी खाना शरीर को स्वस्थ रखने, ऋतु के अनुकूल आहार लेने और धार्मिक पुण्य अर्जित करने, संगठन और समरसता का भाव बढ़ाने का प्रतीक है।

दान का महत्व–

मकरस्थे दिवाकरे दानस्नानतपःक्रियाः। कृताः कोटिगुणं पुण्यं ददाति नात्र संशयः॥

अर्थात – सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर किया गया दान, स्नान और तप करोड़ों गुना पुण्य प्रदान करता है, इसमें कोई संदेह नहीं। इसीलिए मकर संक्रांति के अवसर पर जरूरतमंदों को उनके लिए जरूरी चीजों का दान सक्षम और समर्थ लोगों को करने के लिए कहा गया है।

पतंग की प्रासंगिकता–

इस अवसर पर पतंग उड़ाने की परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है, ये भारतीय लोक संस्कृति का हिस्सा है। जो खुशी, उल्लास और उत्सव का प्रतीक है। पतंग उड़ाना एक हल्का व्यायाम है। खुले आकाश में रहने से मानसिक तनाव कम होता है। धूप में रहने से शरीर को विटामिन-D मिलता है जिससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

हमारी मान्यता है कि समाज में परिवर्तन, समन्वय और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार से लाया जाना चाहिए। इसके लिए समाज के साथ संपर्क और समाज का संगठन जरूरी है। इस उत्सव में पहले लोग एक दूसरे के घरों पर संपर्क के लिए भेंट के लिए जाया करते थे वहां तिल और गुड़ का सेवन किया जाता था। महाराष्ट्र में आज भी कहा जाता हैतिल गुड घ्या आणि गोड गोड बोला इसका अर्थ है आइए तिल गुड खाइए और एक दूसरे से मीठा बोलिए, मधुर व्यवहार कीजिए, यही संगठन का भी मूल सूत्र है।

(लेखक- संस्कृति अध्येता एवं स्तंभकार हैं।)

कार्ययोजना के हाशिये से निर्णय के केंद्र तक- प्रगति और मिजोरम की रेल अवसंरचना

श्री वरूण अधिकारी

जब मैं 2015 में बैराबी-सैरांग रेलवे परियोजना में शामिल हुआ, तो मुझे लगता था कि यह देश के ऐसे हिस्से में कदम रखने जैसा है, जिस पर शायद ही कभी राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान दिया गया हो। यह सफ़र खुद ही अपनी कहानी कहता है। राष्ट्रीय राजमार्ग-154, जिसे अब राष्ट्रीय राजमार्ग-06 कहा जाता है, एकमात्र पहुंच मार्ग था, जो बुरी तरह क्षतिग्रस्त था और भरोसे के लायक नहीं था। भारी ट्रक अक्सर कई दिनों तक फंसे रहते थे और निकटवर्ती स्थानों की यात्रा हिचकोलों से भरी होती थी। आस-पास की पहाड़ियाँ छोटी, कमजोरऔर अस्थिर थीं, जिनका आकार तीव्र वर्षा और निरंतर ढलान गति के कारण बदलता रहता था।

कागज पर, परियोजना ऐतिहासिक थी, राष्ट्रीय नेटवर्क से मिजोरम का पहला रेल-परिवहन संपर्क, जो पहाड़ों, तीव्र ढलान और गहरी घाटियों को काट कर तैयार किया जा रहा था।

हालाँकि, ज़मीनी स्तर पर प्रगति बहुत धीमी थी। सामग्री की अनुपलब्धता, श्रम की कमी, परिवहन में विलंब, स्थानीय बाधाएं और लगातार स्थगित निर्णयों के कारण कार्यस्थल पर काम न होना आम बात थी। एक सुरंग डिज़ाइन सलाहकार और भूविज्ञानी के रूप में, भूविज्ञान कार्य चुनौतीपूर्ण था, लेकिन इसकी गंभीरता समझी जा सकती थी। जो बात वास्तव में अधिक कठिन साबित हुई, वह थी – संस्थागत निष्क्रियता। परियोजना देश के सबसे दूर-दराज के क्षेत्र में स्थित थी। समीक्षा छिटपुट थी। निर्णय लेने का अधिकार मंत्रालयों, राज्य विभागों और एजेंसियों में बिखरा हुआ था। धीरे-धीरे, एक असहज सच्चाई स्पष्ट होने लगी- ऐसा प्रतीत होता था कि कोई भी वास्तव में यह उम्मीद नहीं करता था कि परियोजना निकट भविष्य में पूरी होगी। फिर, शांतिपूर्वक और बिना किसी घोषणा के, पूरी प्रणाली में अचानक तेजी आयी। परियोजना कार्यालयों में एक स्पष्ट तत्परता का भाव दिखने लगा। फोन बार-बार बजने लगे। वरिष्ठ अधिकारी नियमित रूप से कार्यस्थलों का दौरा करने लगे। लंबे समय से लंबित फाइलों को तुरंत सामने लाया गया, उनकी समीक्षा की गई और उन्हें दूसरी जगहों पर भेजा गया।बैठकें तेजी से व नियमित रूप से निर्धारित की जाने लगीं, अक्सर उन एजेंसियों को भी शामिल किया गया, जो पहले अलग-थलग रहकर काम करती थीं। एक निजी सलाहकार के रूप में, मैं प्रशासनिक विभाग का हिस्सा नहीं थाऔर किसी ने भी गतिविधि में आयी इस अचानक तेजी के पीछे का कारण नहीं बताया। लेकिन बड़ी अवसंरचना परियोजनाओं के लंबे अनुभव ने मुझे संकेत की पहचान करना सिखा दिया था। यह सामान्य दबाव नहीं था। यह शीर्ष स्तर पर निरीक्षण की तैयारी थी। जल्द ही कारण स्पष्ट हो गया- बैराबी-सैरांग रेलवे परियोजना की समीक्षा पीएम की अध्यक्षता वाले सक्रिय शासन और समय पर कार्यान्वयन (प्रगति) मंच के तहत निर्धारित की गई थी। परियोजना लंबे समय तक हाशिये पर रही, लेकिन प्रगति के अंतर्गत समीक्षा से प्राधिकार व जवाबदेही तय हुई और हर लंबित मुद्दे तथा एजेंसियों के बीच अड़चनों के सम्बन्ध में वास्तविक समय पर जांच की व्यवस्था की गयी। इस बैठक के बाद निर्णय मेल खाने लगे, और प्रगति दिखाई दी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि किस प्रकार शासन अक्सर परिणाम तय करता है।

मार्च 2016 की प्रगति समीक्षा बैठक ने परियोजना के आयाम में मूलभूत बदलाव किये। इस रूपरेखा के तहत, समस्याओं की अलग-अलग जाँच नहीं की जा सकती थी और न ही उन्हें अनिश्चितकाल के लिए टाला जा सकता था। एन-एच-06 की अत्यंत खराब हालत अब रेलवे के कार्य क्षेत्र के बाहर नहीं मानी जा रही थी। स्पष्ट समयसीमा और निरंतर निगरानी के साथ सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को मरम्मत और सुधार कार्य करने का निर्देश दिया गया। भूमि अधिग्रहण में देरी को अब केवल सामान्य प्रशासनिक बाधाओं के रूप में नहीं देखा जा रहा था; मिजोरम सरकार को समाधान तेज करने का निर्देश दिया गया और प्रगति पर निगरानी रखी गई। कानून और व्यवस्था से संबंधित मुद्दों को औपचारिक रूप से क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण जोखिम माना गया और उन पर कड़ी निगरानी रखी गयी।

व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि निर्णयों का समन्वय ही वह बात थी, जो सबसे अधिक ध्यान खींचती थी। प्रगति के तहत, एजेंसियां अब अलग-थलग रहकर काम नहीं कर सकती थीं। जिम्मेदारियां निर्धारित की गईं, समन्वय को अनिवार्य किया गया और अनुवर्ती कार्यों में निरंतरता लाई गयी। इसका असर तुरंत दिखा, कटकहल-बैराबी खंड को मार्च 2016 में चालू किया गया, जिससे माल ढुलाई संभव हुई और पहुंच, लॉजिस्टिक्स और योजना में सुधार हुआ।

जैसे-जैसे महीने बीतते गए, यह स्पष्ट हो गया कि प्रगति संस्थागत व्यवहार को बदल रही थी। समीक्षा अब देरी की व्याख्या करने से हटकर उन्हें हल करने पर केंद्रित हो गई और रिपोर्ट के स्थान पर तस्वीरों, समयरेखाओं और स्थल अवस्थति डेटा का उपयोग होने लगा। डिजिटल निगरानी यह सुनिश्चित करती थी कि एक बार उठाए गए मुद्दे तब तक चर्चा में बने रहें जब तक कि उनका समाधान न हो जाए। इस अनुशासन से पूरी प्रणाली में काम करने के तरीके बदल गये। इंजीनियर अधिक निर्णायक हो गए, ठेकेदार अधिक जवाबदेह बन गये तथा राज्य और केंद्रीय एजेंसियां अधिक निकटता से समन्वय करने लगीं, क्योंकि हिस्सों में काम करने को अब सहन नहीं किया जाता था।जमीनी स्तर पर, प्रभाव स्पष्ट था। सुरंग खुदाई पहले छिटपुट तरीके से की जा रही थी। जटिल भूविज्ञान, टूटे हुए चट्टान, संरचनात्मक बदलाव क्षेत्र, पानी का रिसाव और कमजोर स्तरों के बावजूद अब खुदाई के काम में लगातार प्रगति होने लगी। समर्थन प्रणालियों और डिज़ाइन संशोधनों के लिए अनुमोदन महीनों की बजाय हफ्तों में होने लगे। गहरी घाटियों में पुलों का निर्माण होने लगा, कुछ सत्तर मीटर से अधिक ऊँचे थे, जो सैकड़ों किलोमीटर दूर लिए गए निर्णयों को कार्यस्थल पर कंक्रीट और स्टील में बदल रहे थे। यहां तक कि कोविड-19 अवधि के दौरान भी, यही व्यवस्था निरंतरता सुनिश्चित करती रही; श्रम की कमी, संविदात्मक विवाद और कार्यान्वयन चुनौतियों पर कड़ी निगरानी रखी गई, और परियोजना धीमी हुई, लेकिन भटकाव नहीं हुआ।समय के साथ, उपलब्धि का पैमाना स्पष्ट हो गया- लगभग एक-तिहाई मार्ग को कवर करने वाली पैंतालीस सुरंगें, 150 से अधिक पुल, सुरंग खंडों के माध्यम से बिना बालास्ट वाला ट्रैक, और देश के सबसे चुनौतीपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों में से एक में 100 किलोमीटर प्रति घंटे की डिजाइन गति की सुविधा। चार नए स्टेशन होर्टोकी, काउनपूई, मुअलखांग, और सैरांग लंबे समय से अलग-थलग समुदायों की सेवा के लिए तैयार हुए। इंजीनियरिंग से परे, परियोजना ने एक गहरी सच्चाई को उजागर किया। नाज़ुक भूविज्ञान को प्रबंधित किया जा सकता है, मानसून को ध्यान में रखते हुए योजना बनाई जा सकती है और लॉजिस्टिक्स को मजबूत किया जा सकता है। अंततः परिणामों को निर्धारित करने वाली चीज़ है शासन — संस्थाओं में समन्वय करने, निर्णय लेने और कार्रवाई करने की क्षमता।

पूर्वोत्तर में परियोजनाओं पर इसके प्रभाव से परे, प्रगति पोर्टल का देशव्यापी विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, क्योंकि निर्णय लेने में तेजी और बेहतर समन्वय ने पूरे देश में अवसंरचना के निरंतर विस्तार का समर्थन किया है। हाल ही में एक संवाददाता सम्मेलन में, कैबिनेट सचिव ने प्रगति व्यवस्था के प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि दिसंबर 2025 तक, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रगति व्यवस्था के तहत 382 प्रमुख परियोजनाओं की समीक्षा कर चुके हैं। प्रगति इकोसिस्टम से 85 लाख करोड़ रुपये (लगभग 850 बिलियन डॉलर) से अधिक मूल्य की अवसंरचना परियोजनाओं के कार्यान्वयन में तेजी आयी है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, इस अवधि के दौरान अवसंरचना परियोजनाओं के खर्च में भी तेज़ वृद्धि देखी गई है, जिसका पूंजीगत व्यय 2014-15 के 1.97 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2025-26 में 11.21 लाख करोड़ रुपये के बजट अनुमान तक पहुँच गया, जो पाँच गुनी से अधिक की वृद्धि को दर्शाता है। केन्द्रीय बजट में हिस्सेदारी के रूप में, अवसंरचना पूंजीगत व्यय लगभग 12 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 22 प्रतिशत हो गया। कैबिनेट सचिव के अनुसार – प्रगति एक व्यापक, एकीकृत डिजिटल इकोसिस्टम के हिस्से के रूप में कार्य करती है, जिसमें पीएम गति शक्ति, परिवेश और परियोजना निगरानी समूह (पीएमजी) शामिल हैं।

कुल मिलाकर देखा जाए तो, जमीन पर किए गए अवलोकन, स्थानिक परिणाम और वित्तीय संकेतक साथ मिलकर दर्शाते हैं कि भारत में अवसंरचना व्यय को व्यवस्थित रूप से बढ़ाया गया है और प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया गया है, जिससे राष्ट्रीय विकास में एक स्थिर योगदानकर्ता के रूप में इसकी भूमिका मजबूत हुई है।

(लेखक एक मुख्य इंजीनियरिंग भूविज्ञानी हैं, जिनके पास भारत में जटिल भूमिगत अवसंरचना परियोजनाओं में 17 वर्षों से अधिक का अनुभव है।)

रक्तहीन क्रांति के 105 साल

प्रयाग पाण्डे

भारत की आजादी के लिए हुए जन संघर्षों की विस्तृत श्रृंखला में 14 जनवरी, 1921 की तारीख को नहीं भुलाया जा सकता । इसी रोज उत्तराखंड की जनता ने अहिंसक सामूहिक प्रतिरोध के बूते न केवल सर्वशक्तिमान ब्रिटिश सत्ता को घुटनों के बल ला दिया, बल्कि पिछले लंबे समय से चली आ रही कुली-बेगार जैसी अमानुषिक कुप्रथा से मुक्ति पा ली थी। उत्तराखंड में कुली-बेगार उन्मूलन आंदोलन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के भारत में प्रारंभ किए गए असहयोग आंदोलन के रूप में अभिव्यक्त हुआ और पूर्णतः सफल रहा। उत्तराखंड को गोरखा सैनिक शासन के जुल्मी शिकंजे से मुक्त करा कर अंग्रेजों ने 1815 में यहां अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। ब्रिटिश राज कायम होने के बाद बेशक हरिद्वार का दास बाजार धीरे-धीरे कमजोर पड़ा, लेकिन अंग्रेज यहां के पूर्ववर्ती राजाओं की भांति गांवों के प्रधानों/पटवारियों के माध्यम से इस क्षेत्र के काश्तकारों से कुलियों का काम अनवरत लेते रहे। 1815 में यहां ईष्ट इंडिया कंपनी और 1858 में ब्रिटिश शासनकाल में यह कुप्रथा उत्तराखंड के भोले - भाले ग्रामीण काश्तकारों के अपमान और शोषण का औजार बन गई थी। 1863 -73 के दसवें भूमि बंदोबस्त में जे.ओ.बी. बेकट ने बड़ी चालाकी से कुली - बेगार, कुली - उतार और कुली - बर्दायश को भूमि बंदोबस्ती इकरारनामों का हिस्सा बना दिया था। कुली- बेगार कुप्रथा के तहत यहां के प्रत्येक जमींदार, हिस्सेदार और आसामी को सरकार ने कुली का दर्जा दिया था। जिनके पास भी काश्तकारी की जमीन हो, वे सभी कुली कहलाते थे। भूमिहीन इस कलंक से मुक्त थे। तब पहाड़ में भूमिधर होना सम्मान की नहीं बल्कि कुली होने का अभिशाप था। यह कुख्यात कुली प्रथा तीन चरणों में विभक्त थी, जिसे कुली - उतार, कुली - बेगार और कुली- बर्दाश्त कहा जाता था। अंग्रेज साहबों के दौरों और सैर-सपाटों के वास्ते पटवारी कुलियों की मांग तथा कुली बर्दाश्त का रूक्का प्रधानों/ थोकदारों को भेजते थे। कुली - उतार के तहत सरकारी आदेश पर लोगों को सामान ढोने के लिए गांव से उतर कर सड़क में बने पड़ावों में एकत्र होना पड़ता था। दौरे पर आने वाले पुलिस, प्रशासन, जंगलात विभाग एवं सेना के अधिकारियों, सैलानियों, सर्वे दलों और अंग्रेज काश्तकारों का सारा सामान, यहां तक कि कमोड, जूते और ऐसी सामग्री ढोने को मजबूर किया जाता था, जिससे यहां की धर्मभीरु जनता की धार्मिक भावनाएं आहत होती हों। स्कूल, सड़कें, पुल, डाक बंगले और वन विभाग की चौकियां आदि सार्वजनिक उपयोग के निर्माण कार्य भी बेगार द्वारा कराए जाते थे। साहब लोगों के रहने के लिए मुफ्त में टेंट गाड़ना, पानी भरना, उनके जूठे बर्तन साफ करना, उनके घोड़ों के लिए घास और जलावन के लिए ईंधन की व्यवस्था करना आदि छोटे-मोटे काम कुली- बेगार कहलाते थे। जबकि कुली- बर्दाश्त कुप्रथा रसद से जुड़ी थी। इसके अंतर्गत साहब लोगों के दौरों के दौरान पटवारी गांव वालों से घास, लकड़ी, कोयला, अन्न, घी, दूध - दही, अंडा-मुर्गा, दालें, सब्जी, बर्तन और अन्य खाद्य सामग्री मुफ़्त अथवा नाममात्र की कीमत पर लेते थे।

पहाड़ के प्रत्येक गांव में कुली रजिस्टर बनते थे, इन रजिस्टरों में कुलियों के नाम कटते और जुड़ते रहते थे। हरेक गांव में कुलियों की संख्या निर्धारित थी। सरकारी आज्ञा पर इन्हें निर्धारित कुली पड़ावों में हर हालत में हाज़िर होना पड़ता था। व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक सुख-दुःख, प्रतिकूल मौसम और तीज- त्यौहार, किसी भी परिस्थिति में कुली को बारी से छूट नहीं मिलती थी। बोझा नहीं ढोने वालों को अर्थदंड देना पड़ता था। अंग्रेज साहबों की सुविधा के लिए बेगारी देना उत्तराखंड के लोगों विशेषकर ग्रामीण काश्तकारों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी था। इस अमानुषिक कुप्रथा से संपूर्ण उत्तराखंड की जनता त्रस्त थी। अपमान सहने को विवश थी। उत्तराखंड में प्रचलित इस अमानुषिक व्यवस्था के विरुद्ध अतीत में अनेक बार विरोध के छुटपुट स्वर मुखरित होते रहे, लेकिन कोई बड़ा जनांदोलन खड़ा नहीं हो पाया था। 1913 में बदरी दत्त पाण्डे ने अल्मोड़ा अखबार के संपादक का दायित्व संभाला। इसके बाद उन्होंने इस प्रथा के विरुद्ध लिखना शुरू किया। बदरी दत्त पाण्डे ने लाला चिरंजीलाल और लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर इस कुप्रथा के विरुद्ध जन जागरण अभियान की शुरुआत की।

1904 में इलाहाबाद उच न्यायालय ने इस प्रथा को नियम विरुद्ध और गैर कानूनी करार दिया। व्यवस्थापिका सभा में भी इस प्रथा के विरोध में प्रस्ताव पारित हुआ। बावजूद इसके तब उत्तराखंड में तैनात मनबढ़ अंग्रेज अधिकारियों ने इस व्यवस्था को कायम रखा। यही नहीं 1913 में अल्मोड़ा के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर ने अल्मोड़ा शहरवासियों को भी कुली उतार देने के आदेश जारी कर दिए। बोझा नहीं ढोने वालों के ऊपर प्रतिवर्ष दो रुपया कुली-कर लगा दिया गया। रायबहादुर तारा दत्त गैरोला ने प्रांतीय कौंसिल में इस व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई, लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। इस विषय में ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी चर्चा हुई। ब्रिटिश पार्लियामेंट में तत्कालीन भारत मंत्री ने यह कह कर अपना पल्ला झाड़ लिया कि यह व्यवस्था अंग्रेजों ने कायम नहीं की है, इसलिए इसे हटाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। कालांतर में भारत मंत्री के इस वक्तव्य का उत्तराखंड की जनता ने ऐसा प्रतिउत्तर दिया, जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में कम ही पाई जाती है। 1916 में नैनीताल में कुमाऊं परिषद का गठन हुआ। तब कुमाऊं परिषद को कुमाऊं की कांग्रेस कहा जाता था। इसी साल कुमाऊं परिषद का अल्मोड़ा में पहला अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में कुली-बेगार कुप्रथा के विरोध में प्रस्ताव पास हुआ। इसके बाद गोविंद बल्लभ पन्त, हरगोविंद पन्त और बदरी दत्त पाण्डे ने कुली बेगार व्यवस्था के विरोध में गांव-गांव जन सभाएं करनी प्रारंभ कर दी। 1918 में कुमाऊं परिषद का हल्द्वानी में सम्मेलन हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता रायबहादुर तारा दत्त गैरोला ने की। इस सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार को दो साल के भीतर कुली-बेगार प्रथा को बंद करने का नोटिस देने का निर्णय लिया गया। नोटिस में कहा गया कि यदि तय समयावधि में इस प्रथा को नहीं हटाया गया तो उत्तराखंड की जनता सत्याग्रह करेगी। इसी के साथ कुली-बेगार प्रथा के विरुद्ध गांव-गांव जन जागरण अभियान शुरू हो गया।इसी कालखंड में भारत के राजनैतिक क्षितिज में महात्मा गांधी का पदार्पण हुआ। भारत की राजनीति में गांधी युग की शुरुआत हुई। 1918 में बदरीदत्त पाण्डे कोलकाता गए, वहां उन्होंने महात्मा गांधी से भेंट की और उन्हें उत्तराखंड के इस कुली कलंक से अवगत कराया। 1920 में हरगोविंद पन्त की अध्यक्षता में कुमाऊं परिषद का काशीपुर में अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में कुली - उतार उन्मूलन का संकल्प पारित हुआ। इसी साल दिसंबर में कांग्रेस का नागपुर में अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में बदरीदत्त पाण्डे, भुवनेश्वर पाण्डे, हरगोविंद पन्त, लाला चिरंजीलाल, लक्ष्मण दत्त भट्ट एवं शिवनंदन पाण्डे आदि पहाड़ के 22 नेता नागपुर गए। इन नेताओं ने गांधी जी से अल्मोड़ा आने का आग्रह किया। गांधी जी ने कहा- भाई मुझे बहुत काम है। मेरे कुर्मांचली भाइयों से कह दें कि कुली देना नहीं होता है। एक अगस्त,1920 से गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राय के विरुद्ध देशव्यापी असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया था। उत्तराखंड में असहयोग आंदोलन कुली-बेगार विरोधी आंदोलन के रूप में अभिव्यक्त हुआ। 10 जनवरी,1921 को बदरी दत्त पाण्डे, हरगोविंद पन्त एवं लाला चिरंजीलाल के नेतृत्व में पचास नवयुवकों का दल बागेश्वर को कूच कर गया। 12 जनवरी की रात तक बागेश्वर में हजारों लोग एकत्र हो गए। इसी बीच अल्मोड़ा के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर डब्ल्यू.सी. डाइबिल भी 21 अंग्रेज अधिकारियों और पचास सशत्र पुलिस जवानों के साथ बागेश्वर पहुंच गए थे। बागेश्वर में विशाल जनसभा हुई, जिसमें पचास हजार से अधिक लोग सम्मिलित हुए।सभा में महात्मा गांधी जी के जयकारे लगे और उन्हें अवतार बताया गया। कुली - बेगार आंदोलन के अन्य नेताओं के अलावा मोहन सिंह मेहता, रामदत्त, जीत सिंह एवं पुरुषोत्तम आदि ने इस विशाल जनसभा को संबोधित किया। सभा में मौजूद सभी लोगों ने मकर संक्रांति के दिन भगवान बागनाथ जी के मंदिर में कुली-बेगार नहीं देने की शपथ ली। सरयू नदी के पवित्र जल को अंजलि में लेकर कुली-बेगार से मुक्ति का संकल्प लिया। सभी प्रधान और मालगुजारों ने कुली -बेगार के रजिस्टर सरयू नदी के पवित्र जल में प्रवाहित कर दिए।

शिखर धवन ने गर्लफ्रेंड सोफी शाइन से की सगाई, सोशल मीडिया पर दी जानकारी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने गर्लफ्रेंड सोफी शाइन के साथ सगाई कर ली है। यह जानकारी धवन ने सोशल मीडिया के जरिए फैंस को दी है। शिखर धवन ने इंस्टाग्राम पोस्ट में एक तस्वीर शेयर की, जिसमें धवन के साथ सोफी के हाथ नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर में शाइन की उंगली पर इंगेजमेंट रिंग भी नजर आ रही है। धवन ने तस्वीर के कैप्शन में लिखा, 'मुस्कुराहटें शेयर करने से लेकर सपनों को शेयर करने तक। हमारे इंगेजमेंट के लिए मिले प्यार, आशीर्वाद और हर अच्छी शुभकामना के लिए आभारी हैं, क्योंकि हम हमेशा के लिए एक साथ रहने का फैसला करते हैं।' शिखर धवन पहली बार आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दौरान सोफी शाइन के साथ नजर आए थे, जिसके बाद से यह जोड़ी चर्चा का विषय बन चुकी थी। कुछ समय बाद धवन ने इस रिश्ते की पुष्टि कर दी, जिसके बाद सोफी और धवन सोशल मीडिया पोस्ट पर अक्सर साथ नजर आने लगे। आयरिश प्रोडक्ट कंसल्टेंट सोफी ने लिमरिक इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से मार्केटिंग और मैनेजमेंट डिग्री हासिल की है। इस समय वह आबू धाबी में नॉर्दर्न ट्रस्ट कॉर्पोरेशन की सेकंड वाइस प्रेसिडेंट हैं। शिखर धवन ने करीब ढाई साल पहले आयशा मुखर्जी से तलाक लिया था। इस दौरान धवन ने आरोप लगाया कि उन्हें आयशा की वजह से 'मानसिक यातना' से गुजरना पड़ा। धवन से 10 साल बड़ी आयशा एक किक बॉक्सर हैं, जिन्होंने साल 2012 में भारतीय क्रिकेटर से शादी रचाई थी। साल 2021 में आयशा ने धवन से अलग होने की जानकारी सोशल मीडिया पर दी थी।

फेडरेशन अंतरराष्ट्रीय संबंध और 'मेक इन इंडिया' पर आधारित समितियां बनाए : खेल मंत्रालय

एजेंसी

नई दिल्ली। युवा मामले और खेल मंत्रालय ने सभी मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय खेल फेडरेशनों को सलाह दी है कि वे अपने-अपने संगठनों में अंतरराष्ट्रीय संबंध और खेल में 'मेक इन इंडिया' पर आधारित कमेटियां बनाएं। खेल के क्षेत्र में भारत के अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव को मजबूत करने के उद्देश्य से 'अंतरराष्ट्रीय संबंध समिति' संबंधित अंतरराष्ट्रीय फेडरेशन और कॉन्टिनेंटल फेडरेशन में हो रहे विकास पर नजर रखेगी, जिसमें प्रतियोगिता के नियमों और संरचना, गवर्नेंस, फ्रेमवर्क, चुनाव और एथलीट-केंद्रित कार्यक्रम में बदलाव शामिल हैं। समिति एक मीडियम-टर्म अंतरराष्ट्रीय सहयोग योजना भी बनाएगी जिसमें द्विपक्षीय और मल्टीलेटरल एमओयू, संयुक्त प्रशिक्षण कैंप, एक्सचेंज प्रोग्राम, नॉलेज-शेयरिंग इनिशिएटिव और भारत में अंतरराष्ट्रीय खेल इवेंट की मेजबानी के मौके शामिल होंगे। समिति यह निश्चित करेगी कि सभी अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव भारत सरकार की नीति, ओलंपिक चार्टर और आईएफ कानूनों के हिसाब से हों, और गुड गवर्नेंस, एंटी-डोपिंग नियमों का पालन करें, साथ ही एथलीट सुरक्षा के सिद्धांतों का पालन करें।

समिति भारतीय एथलीटों के लिए बेस्ट-इन-क्लास प्रशिक्षण के मौके और खेल विज्ञान सपोर्ट पाने के लिए काउंटरपार्ट राष्ट्रीय फेडरेशन और श्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय खेल रिसर्च और एकेडमिक संस्थानों के साथ सहयोग को और मजबूत करेगी। नीलामी की प्रक्रिया में समय पर हिस्सेदारी निश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय फेडरेशन और संबंधित बॉडी के साथ कोऑर्डिनेट भी करेगी और भारत में अंतरराष्ट्रीय इवेंट मेजबानी करने के सभी प्रस्तावों को जानकारी के लिए और, जहां जरूरी हो, मौजूदा दिशा-निर्देशों के तहत पहले से संपर्क या क्लीयरेंस के लिए मंत्रालय के साथ साझा करेगी।

खेल के क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' समिति भारतीय उत्पादकों, स्टार्ट-अप्स, रिसर्च संस्थानों, जांच और नियामक संस्थाओं के साथ जुड़ने के लिए जिम्मेदार होगी ताकि संबंधित खेल में प्रोडक्ट डेवलपमेंट, ट्रायल और सर्टिफिकेशन को आसान बनाया जा सके, जिससे मेक इन इंडिया के तहत सोचे गए घरेलू खेल प्रसाधनों के उत्पादन को बढ़ावा मिले। समिति स्वदेशी सॉल्यूशन अपनाने पर समय-समय पर रिपोर्ट भी तैयार करेगी, जिसमें मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत में योगदान के खास रेफरेंस के साथ हुई प्रगति, सामने आई रुकावटों और एमएसएफ के अंदर विचार के लिए रिकमेंडेशन को प्रदर्शित किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए बनी समिति में वरिष्ठ फेडरेशन मेंबर, पूर्व अंतरराष्ट्रीय एथलीट, कोच, और वैश्विक खेल प्रशासन में दक्ष विशेषज्ञ शामिल होंगे। समिति की रिपोर्ट, जिसमें उसकी बनावट और टर्म्स ऑफ रेफरेंस शामिल हैं, इस एडवाइजरी के जारी होने के 30 दिनों के अंदर मंत्रालय को बताई जा सकती है।

वेन रूनी ने मैनचेस्टर यूनाइटेड की कोचिंग टीम में वापसी के दिए संकेत

नई दिल्ली। इंग्लैंड के दिग्गज फुटबॉलर रहे वेन रूनी ने मैनचेस्टर यूनाइटेड की कोचिंग टीम में वापसी के संकेत दिए हैं। रूनी ने कहा है कि अगर माइकल कैरिक को मौजूदा सीजन के बाकी हिस्से के लिए केयरटेकर मैनेजर बनाया जाता है, तो वह उनके कोचिंग स्टाफ का हिस्सा बनने के लिए तैयार हैं। रूनी ने कहा कि वह नौकरी के लिए दबाव नहीं बना रहे, लेकिन क्लब की मदद करने का मौका मिला तो पीछे नहीं हटेंगे। दिग्गज फुटबॉलर ने एक पॉडकास्ट में कहा कि मैनचेस्टर यूनाइटेड में नौकरी के लिए मैं भीख नहीं मांग रहा हूं, लेकिन अगर मुझसे पूछ गया तो मैं जरूर मदद करूंगा। इस समय सबसे जरूरी बात सही मैनेजर की नियुक्ति है। माइकल कैरिक इस भूमिका के लिए बेहतर और मजबूत विकल्प हैं। उन्होंने कहा, 'चाहे माइकल कैरिक हों, डैरेन फ्लेचर हों, जॉन ओ'शिया हों या मैं, क्लब को ऐसे लोगों की जरूरत है जो मैनचेस्टर यूनाइटेड को भीतर से जानते हों।' 44 वर्षीय माइकल कैरिक के इस सप्ताह के अंत तक अंतरिम मैनेजर के तौर पर नियुक्त किए जाने की उम्मीद है। उनकी कोचिंग के लिए टीम के साथ बातचीत जारी है। डैरेन फ्लेचर के शामिल होने की संभावना भी जताई जा रही है, लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक कैरिक ने अब तक सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। एक खिलाड़ी के तौर पर कैरिक का मैनचेस्टर यूनाइटेड में शानदार करियर रहा है। 2018 में संन्यास लेने से पहले उन्होंने पांच प्रीमियर लीग खिताब जीते थे। बतौर कोच मिडिल्सब्रो के साथ उनका काम अच्छा रहा है। दिसंबर 2024 में प्लायमाउथ आर्गिल छोड़ने के बाद से रूनी फिलहाल कहीं नहीं जुड़े हैं। डर्बी काउंटी, बर्मिंघम सिटी और डीसी यूनाइटेड के साथ उनके मैनेजरियल अनुभव को देखते हुए, अगर कैरिक को मौका मिलता है और रूनी उनके साथ जुड़ते हैं, तो ओल्ड ट्रैफर्ड में एक पुराने लेकिन भरोसेमंद चेहरे की वापसी संभव है।

आईओए एग्जीक्यूटिव कमेटी ने नेशनल ओलंपिक एकेडमी को पुनः सक्रिय किया, एनओईडी प्रोग्राम लॉन्च

नई दिल्ली। इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन (आईओए) ने नेशनल ओलंपिक एजुकेशन एंड डेवलपमेंट प्रोग्राम (एनओईडीपी) लॉन्च करके और नेशनल ओलंपिक एकेडमी (एनओए) को औपचारिक रूप से पुनः सक्रिय करके भारत के ओलंपिक प्रयासों को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाया है। 8 जनवरी को आईओए एग्जीक्यूटिव काउंसिल की मीटिंग के दौरान ये फैसले लिए गए थे, जिसे 9 जनवरी को आईओए जनरल हाउस की वार्षिक जनरल मीटिंग में मंजूरी मिली। ये दोनों मीटिंग अहमदाबाद में हुईं। ये पहल एथलीट-सेंटर्ड डेवलपमेंट, ओलंपिक एजुकेशन और इंस्टीट्यूशनल कैपेसिटी को मजबूत करने के लिए आईओए की नई प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। नेशनल ओलंपिक एजुकेशन एंड डेवलपमेंट प्रोग्राम (एनओईडीपी) को ओलंपिक इकोसिस्टम में स्ट्रक्चर्ड एजुकेशन और डेवलपमेंट प्रोग्राम देने के लिए एक कॉम्प्रिहेंसिव नेशनल फ्रेमवर्क के तौर पर सोचा गया है। यह प्रोग्राम नेशनल स्पोर्ट्स फेडरेशन (एनएसएफ) और स्टेट ओलंपिक एसोसिएशन (एसओए) के साथ मिलकर लागू किया जाएगा।

रियल मैड्रिड ने ज़ाबी अलोंसो से किया करार समाप्त, अल्वारो आर्बेलोआ बने नए मुख्य कोच

मैड्रिड। स्पेन के दिग्गज फुटबॉल क्लब रियल मैड्रिड ने अपने मुख्य कोच ज़ाबी अलोंसो से आपसी सहमति के तहत अलग होने की घोषणा कर दी है। क्लब ने सोमवार को यह जानकारी दी। अलोंसो की जगह क्लब ने अपनी कास्टिला (बी टीम) के कोच अल्वारो आर्बेलोआ को पहली टीम का नया मुख्य कोच नियुक्त किया है। यह फैसला रविवार को खेले गए स्पेनिश सुपर कप फाइनल में चिर-प्रतिद्वंद्वी बार्सिलोना के खिलाफ 2-3 की हार के बाद लिया गया। मौजूदा समय में ला लीगा अंक तालिका में रियल मैड्रिड शीर्ष पर मौजूद बार्सिलोना से चार अंक पीछे है। ज़ाबी अलोंसो ने 1 जून 2025 को रियल मैड्रिड की कमान संभाली थी। इससे पहले वह जर्मन क्लब बायर लेवरकुज़ेन के साथ शानदार कार्यकाल पूरा कर चुके थे, जहां उन्होंने 2023-24 सत्र में घरेलू डबल (लीग और कप) जीता और टीम को यूरोपा लीग फाइनल तक पहुंचाया था। रियल मैड्रिड के साथ अलोंसो की शुरुआत भी प्रभावशाली रही। क्लब वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल तक टीम को पहुंचाने के बाद उन्होंने अगले 14 मैचों में से 13 में जीत दर्ज की। इस दौरान एकमात्र बड़ी हार एटलेटिको मैड्रिड के खिलाफ डर्बी मुकाबले में मिली।

नॉर्वे चेस 2026 का आयोजन अब ओस्लो में, स्टावेंगर के बाद नए युग की शुरुआत

ओस्लो। विश्व के सबसे प्रतिष्ठित शतरंज टूर्नामेंटों में शामिल नॉर्वे चेस अब एक नए दौर में प्रवेश करने जा रहा है। 13 वर्षों तक स्टावेंगर में आयोजित होने के बाद वर्ष 2026 से नॉर्वे चेस और नॉर्वे चेस विमेंस टूर्नामेंट का आयोजन नॉर्वे की राजधानी ओस्लो में किया जाएगा। दोनों टूर्नामेंटों का मुख्य आयोजन स्थल डाइखमन ब्योर्विका होगा। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 25 मई से 5 जून तक खेली जाएगी, जिसमें विश्व शतरंज के दिग्गज खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन भी भाग लेंगे।नॉर्वे चेस की शुरुआत वर्ष 2013 में हुई थी और तब से लेकर अब तक स्टावेंगर इस टूर्नामेंट का स्थायी घर रहा। इस शहर ने टूर्नामेंट को एक अलग पहचान दी और इसे अंतरराष्ट्रीय शतरंज कैलेंडर का एक अहम हिस्सा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नॉर्वे चेस के संस्थापक और सीईओ केजेल मैडलैंड ने स्टावेंगर शहर के योगदान की सराहना करते हुए कहा, 'स्टावेंगर के सभी राजनीतिक दलों के समर्थन और सहयोग के बिना नॉर्वे चेस आज जिस मुकाम पर है, वहां तक पहुंचना संभव नहीं था। खासतौर पर नॉर्वे चेस विमेंस के विकास में शहर की भूमिका ऐतिहासिक रही है।

शेरफेन रदरफोर्ड बने जीत के हीरो, प्रिटोरिया कैपिटल्स ने मुंबई केपटाउन को 53 रन से हराया

एजेंसी

सेंचुरियन । साउथ अफ्रीका टी20 लीग में प्रिटोरिया कैपिटल्स और मुंबई केपटाउन के बीच सुपरस्पोर्ट पार्क क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में शेरफेन रदरफोर्ड की विस्फोटक शतकीय पारी की बदौलत प्रिटोरिया कैपिटल्स ने 53 रन से जीत दर्ज की। प्रिटोरिया कैपिटल्स ने टॉस गंवाने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 185 रन बनाए थे। प्रिटोरिया को शुरुआत अच्छी नहीं मिली थी और सलामी बल्लेबाज शाई होप मात्र 7 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद आने वाले बल्लेबाजों ने छोटी-छोटी पारियां खेलते हुए और अहम साझेदारियां करते हुए स्कोरबोर्ड को आगे बढ़ाया। कॉनर एस्टरहुइजन ने 20 गेंद पर 24, विहान लुबे ने 19 गेंद पर 21, जॉर्डन कॉक्स ने 25 गेंद पर 24 रन बनाए। 12.4 ओवर में 89 पर 4 विकेट खो चुकी प्रिटोरिया के लिए डेवाल्ड ब्रेविस और शेरफेन रदरफोर्ड ने पांचवें विकेट के लिए 34 गेंद पर 69 रन

की तेज साझेदारी की। इस साझेदारी ने प्रिटोरिया की पारी को गति दी। ब्रेविस 19 गेंद पर 3 छक्के और 1 चौके की मदद से 34 रन बनाकर आउट हुए। रदरफोर्ड नहीं रुके और 27 गेंद पर 5 छक्कों और 3 चौकों की मदद से 53 रन की पारी खेल टीम का स्कोर 185 तक पहुंचाया। वह पारी की आखिरी गेंद पर आउट हुए। रसेल 5 गेंद पर 11 रन बनाकर नाबाद रहे।

186 रन का लक्ष्य हासिल करने उतरी मुंबई केपटाउन 20 ओवर में 7 विकेट पर 132 रन बना सकी और 53 रन के बड़े अंतर से मैच हार गई। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए रिजा हेंड्रिक्स 50 गेंद पर 4 चौकों और 4 छक्कों की मदद से 68 रन बनाकर नाबाद रहे। इसके अलावा कोई बल्लेबाज नहीं चला। प्रिटोरिया के लिए गिडोन पीटर्स ने 4 ओवर में 32 रन देकर 3 विकेट लिए।

शेरफेन रदरफोर्ड प्लेयर ऑफ द मैच रहे। जीत के साथ प्रिटोरिया कैपिटल्स अंकतालिका में पहले स्थान पर चली गई है। सीजन के 8वें मैच में उसकी चौथी जीत थी। टीम को 3 मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। एक मैच का नतीजा नहीं आया था।

'आप फुटबॉल को गहराई से समझते थे', काइलियन एम्बाप्पे ने जाबी अलोंसो के लिए लिखा भावुक संदेश

एजेंसी

नई दिल्ली । रियल मैड्रिड के मैनेजर जाबी अलोंसो के क्लब छोड़ने की पुष्टि होने के बाद काइलियन एम्बाप्पे ने उनके लिए एक भावुक विदाई संदेश लिखा है। क्लब की आधिकारिक घोषणा के कुछ ही घंटों बाद एम्बाप्पे ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर जाबी अलोंसो के लिए लिखा, 'यह छोटा समय था, लेकिन आपके लिए खेलना और आपसे सीखना मेरे लिए खुशी की बात रही। पहले दिन से मुझ पर भरोसा दिखाने और मुझे आत्मविश्वास देने के लिए धन्यवाद। मैं आपको एक ऐसे मैनेजर के तौर पर याद रखूंगा जिनके पास साफ आइडियाज थे और जो फुटबॉल को गहराई से समझते थे। जीवन के नए चैप्टर के लिए शुभकामनाएं।' रियल मैड्रिड ने कन्फर्म किया कि जाबी अलोंसो अब क्लब का हिस्सा नहीं हैं। यह फैसला रविवार, 11 जनवरी को बार्सिलोना के खिलाफ स्पेनिश सुपर कप में मिली हार के 24 घंटे के भीतर लिया गया। इस हार ने अलोंसो के भविष्य पर आखिरी मुहर लगा दी और पिछली गर्मियों में शुरू हुआ उनका सात महीने का कार्यकाल समाप्त हो गया। अलोंसो की वापसी को बर्नब्यू

में एक नए चक्र की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा था। टैक्टिकल क्लैरिटी, हाई प्रेसिंग और मॉडर्न फुटबॉल पर जोर देने वाले अलोंसो मई में बायर लेवरकुसेन के साथ शानदार सफलता के बाद तीन साल के करार पर रियल मैड्रिड पहुंचे थे। 2023-24 सीजन में उन्होंने लेवरकुसेन को बिना हारे बुंडेसलीगा खिताब जिताया, जर्मन कप जीता और टीम को यूरोपा लीग फाइनल तक पहुंचाया था।

हालांकि, स्पेन में हालात उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे। जैसे-जैसे सीजन आगे बढ़ा, टीम की परफॉर्मेंस में निरंतरता की कमी दिखने लगी। क्लब वर्ल्ड कप में पेरिस सेंट-जर्मेन, ला लीगा में एटलेटिको मैड्रिड और चैंपियंस लीग में लिवरपूल व मैनचेस्टर सिटी के खिलाफ मिली भारी हार ने टीम की कमजोरियों को उजागर कर दिया। मैड्रिड, जो कभी टाइटल रेस में आगे था, वह अब बार्सिलोना से चार अंक पीछे खिसक चुका है।

अलोंसो के जाने के बाद क्लब ने पूर्व खिलाड़ी और सेकंड-टीम कोच अल्वारो अर्बेलोआ को अंतरिम मैनेजर नियुक्त किया है, जो कोपा डेल रे में अल्बासेटे के खिलाफ टीम की कमान संभालेंगे।

एलीसा हिली ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की, भारत के खिलाफ खेलेंगी आखिरी सीरीज

एजेंसी

नई दिल्ली । ऑस्ट्रेलिया की कप्तान और दिग्गज विकेटकीपर-बल्लेबाज एलिसा हीली ने क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से संन्यास की घोषणा कर दी है। हिली महिला टी20 विश्व कप का हिस्सा नहीं होंगी। भारत के खिलाफ फरवरी-मार्च में होने वाली घरेलू सीरीज के बाद हिली अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह देंगी। हीली ने स्पष्ट किया है कि वह इस साल होने वाले महिला टी20 विश्व कप के लिए टीम की तैयारियों को ध्यान में रखते हुए भारत के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में हिस्सा नहीं लेंगी। पर्थ में होने वाली वनडे सीरीज और एक डे-नाइट टेस्ट में वह ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करेंगी। हिली ने कहा, 'अपने देश का प्रतिनिधित्व करना उनके लिए हमेशा सबसे बड़ा सम्मान रहा है। भारत के खिलाफ आने वाली सीरीज उनके करियर की आखिरी सीरीज होगी।' क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीईओ टॉड ग्रीनबर्ग ने उन्हें क्रिकेट की ऑल-टाइम ग्रेट खिलाड़ियों में से एक बताया और

ऑस्ट्रेलियन महिला क्रिकेट में उनके योगदान की सराहना की। एलिसा हीली ने 2010 में 19 साल की उम्र में न्यूजीलैंड के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया था। उन्हें महिला क्रिकेट की सबसे खतरनाक बल्लेबाजों और बेहतरीन विकेटकीपरों में गिना जाता है। वह आठ आईसीसी विश्व कप जीतने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीमों का हिस्सा रहीं, जिसमें छह टी20 और दो वनडे विश्व कप शामिल हैं। वह 2022 कॉमनवेल्थ गेम्स में ऑस्ट्रेलिया की गोल्ड मेडल जीतने वाली टीम की भी सदस्य थीं। मेग लैनिंग के संन्यास के बाद 2023 में हीली को ऑस्ट्रेलिया की फुल-टाइम कप्तान बनाया गया था। कप्तान के तौर पर उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि इंग्लैंड के खिलाफ 16-0 से मल्टी-फॉर्मेट एशेज वाइटवॉश रही। उनकी कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया ने 2024 महिला टी20 विश्व कप और 2025 महिला वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में भी जगह बनाई। उनके नाम विश्व कप फाइनल में सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाने और अंतरराष्ट्रीय टी20 में उनके नाम रिकॉर्ड 126 डिसमिसल है, जो एक रिकॉर्ड है। ऑस्ट्रेलिया के लिए हिली ने अब तक 162 टी20, 126 वनडे और 11 टेस्ट मैच खेले हैं। बीबीएल में सिडनी सिक्सर्स के लिए खेलते हुए 11 सीजन में उन्होंने 3,000 से अधिक रन बनाए। हिली के नाम दो बीबीएल खिताब हैं। विमेंस प्रीमियर लीग में वह यूपी वॉरियर्स की कप्तान भी रह चुकी हैं।

केएल राहुल ने विराट कोहली को पीछे छोड़ा, एमएस धोनी अब भी बहुत आगे

एजेंसी

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम ने वडोदरा में खेले गए पहले वनडे मुकाबले में न्यूजीलैंड को 4 विकेट से हरा दिया। केएल राहुल ने छक्का लगाकर भारतीय टीम को जीत दिलायी। छक्का लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाने के मामले में राहुल ने विराट कोहली को पीछे छोड़ दिया है। केएल राहुल ने भारतीय पारी के 49वें ओवर में क्रिस्टियन क्लार्क की आखिरी 3 गेंदों पर 4, 4, और 6 रन लगाते हुए भारतीय टीम को जीत दिलायी। वनडे क्रिकेट में यह छठा मौका था, जब केएल राहुल ने छक्का लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलायी। वनडे में छक्का लगाकर भारतीय टीम को जीत दिलाने के मामले में राहुल ने विराट कोहली को पीछे छोड़ा। वनडे फॉर्मेट के किंग माने जाने वाले कोहली ने अपने करियर में 5 बार अब तक ऐसा किया है। वनडे क्रिकेट में छक्का लगाकर अब तक सबसे ज्यादा बार भारतीय टीम को जीत दिलाने का रिकॉर्ड पूर्व कप्तान एमएस धोनी के नाम है। धोनी ने अपने करियर में 9 बार ऐसा किया है। राहुल के पास धोनी का भी रिकॉर्ड तोड़ने का समय है। देखना होगा कि वह ऐसा कर पाने में कामयाब हो पाते हैं या नहीं। केएल राहुल ने 21 गेंदों पर 2 चौकों और 1 छक्के की मदद से नाबाद 29 रन की पारी खेली। मैच की बात करें तो भारतीय टीम ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया था। न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए डेरिल मिचेल के 84, हेनरी निकोलस के 62, और डेवोन कोनवे के 56 रन की मदद से 8 विकेट पर 300 रन बनाए थे। भारतीय टीम ने विराट कोहली के 93, शुभमन गिल के 56, और श्रेयस अय्यर के 49 रन की पारी की बदौलत 49 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 306 रन बनाकर मैच 4 विकेट से जीता था। विराट कोहली प्लेयर ऑफ द मैच रहे थे।

ओडिशा के युवा तीरंदाजों का कमाल : 4 स्वर्ण, 5 रजत, 1 कांस्य मेडल जीतकर राष्ट्रीय स्तर पर रनर-अप बने

एजेंसी

भुवनेश्वर। ओडिशा के युवा तीरंदाजों ने 69वें नेशनल स्कूल गेम्स अंडर-17 तीरंदाजी चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य का नाम रोशन किया है। झारखंड के रांची में 6 से 10 जनवरी 2026 तक आयोजित इस प्रतियोगिता में ओडिशा ने कुल 10 मेडल जीते, जिसमें 4 गोल्ड, 5 सिल्वर और 1 ब्रॉन्ज शामिल हैं। ओडिशा ओवरऑल रनर-अप रहा, जबकि महाराष्ट्र पहले और झारखंड तीसरे स्थान पर रहा। ओडिशा टीम को स्कूल एवं जन शिक्षा विभाग के तहत ओडिशा राज्य स्कूल खेल संघ द्वारा मैदान में उतारा गया था। राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाले 18 खिलाड़ियों में 11 लड़कियां और 7 लड़के शामिल थे। इस सफलता से राज्य में युवा खेल प्रतिभाओं को नई

प्रेरणा मिली है और वे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रोत्साहित हुए हैं। मयूरभंज जिले के बारीपदा स्थित यूजीपी गवर्नमेंट हाई स्कूल के कक्षा 10 के छात्र रोहित कुमार मरांडी टूर्नामेंट के स्टार साबित हुए। उन्होंने 30-मीटर इंडियन राउंड, 30-मीटर ओलंपिक राउंड और मिक्स्ड टीम इवेंट में तीन गोल्ड मेडल जीते, साथ ही ओवरऑल 30 मीटर और 20 मीटर कैटेगरी में एक सिल्वर भी हासिल किया। भुवनेश्वर के केआईएसएस स्कूल की रेशमा मल्लिक ने रोहित के साथ मिलकर 30-मीटर मिक्स्ड टीम इवेंट में गोल्ड जीता। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सोशल मीडिया पर रोहित और रेशमा को बधाई देते हुए कहा कि इनकी सफलता ओडिशा के लिए गर्व की बात है और उन्होंने चार गोल्ड मेडल जीतकर राज्य का मान बढ़ाया।

क्योंझर जिले की सुनीता नाइक ने 60-मीटर रिकर्व राउंड में सिल्वर और 60-मीटर व्यक्तिगत इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता। इसी कैटेगरी में सबित्री पात्रो (क्योंझर), टेनिश मेहर (सुंदरगढ़) और पंखी भात्रा (भुवनेश्वर) ने भी सिल्वर मेडल जीतकर ओडिशा की मेडल तालिका में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यह प्रदर्शन ओडिशा की खेल नीतियों और युवा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण की सफलता को दर्शाता है। राज्य सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है, जिससे स्कूली स्तर पर प्रतिभाएं निखर रही हैं। ओडिशा के युवा तीरंदाजों की यह जीत भविष्य में ओलंपिक और एशियाई खेलों में भी राज्य का प्रतिनिधित्व मजबूत करने की उम्मीद जगाती है।

विजय हजारे ट्रॉफी: खराब मौसम से प्रभावित मुकाबलों में जीत, सेमीफाइनल में कर्नाटक और सौराष्ट्र

एजेंसी

बेंगलुरु। कर्नाटक और सौराष्ट्र ने विजय हजारे ट्रॉफी एलीट 2025-26 के अपने-अपने क्वार्टर फाइनल जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। क्वार्टर फाइनल-3 में पंजाब की टीम मध्यप्रदेश का सामना करेगी, जबकि क्वार्टर फाइनल-4 में दिल्ली और विदर्भ के बीच मुकाबला खेला जाएगा। इन्हें जीतने वाली टीम सेमीफाइनल में प्रवेश करेगी, जहां कर्नाटक और सौराष्ट्र ने अपनी जगह बना ली है। कर्नाटक की टीम 15 जनवरी को अपना सेमीफाइनल मैच खेलेगी, जबकि सौराष्ट्र 16 जनवरी को सेमीफाइनल-2 खेलेगी। इन दोनों मुकाबलों को जीतने वाली टीमें 18 जनवरी को फाइनल में आमने-सामने होंगी।

बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ग्राउंड-1 में खेले गए क्वार्टर फाइनल-1 में कर्नाटक ने वीजेडी नियम के तहत 55 रन से जीत दर्ज की। बारिश से प्रभावित इस मुकाबले में मुंबई ने टॉस गंवाकर बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट खोकर 254 रन बनाए। इस टीम के लिए शम्स मुलानी ने 91 गेंदों में 8 चौकों के साथ सर्वाधिक 86 रन बनाए, जबकि कप्तान सिद्देश लाड ने 38 रन का योगदान टीम के खाते में दिया। विपक्षी खेमे से विद्याधर पाटिल ने सर्वाधिक 3 विकेट हासिल किए, जबकि विध्वथ कावेरप्पा और अभिलाष शेट्टी ने 2-2 विकेट निकाले। इसके जवाब में कर्नाटक ने 33 ओवरों में 1 विकेट गंवाकर 187 रन बना लिए थे। यहां से टीम को जीत के लिए महज 68 रन की दरकार थी, लेकिन खराब रोशनी के चलते खेल को रोकना पड़ा। यहां से मैच दोबारा शुरू नहीं हो सका और कर्नाटक को वीजेडी नियम के तहत विजेता घोषित किया गया। कर्नाटक की तरफ से देवदत्त पड्डिकल ने नाबाद 81 रन बनाए, जबकि करुण नायर ने 74 रन की नाबाद पारी खेली।

क्वार्टर फाइनल-2 में सौराष्ट्र ने वीजेडी नियम के तहत उत्तर प्रदेश को 17 रन से मात दी। उत्तर प्रदेश ने निर्धारित ओवरों में 8 विकेट खोकर 310 रन बनाए। इस टीम के लिए अभिषेक गोस्वामी और समीर रिजवी ने 88-88 रन की पारी खेली।

विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी सौराष्ट्र ने 40.1 ओवरों में 3 विकेट खोकर 238 रन बना लिए थे, लेकिन इसके आगे बारिश के चलते मैच नहीं हो सका। आखिरकार, सौराष्ट्र को विजेता घोषित किया गया। सौराष्ट्र के लिए कप्तान हार्विक देसाई ने नाबाद 100 रन बनाए, जबकि प्रेरक मांकड़ ने 67 और चिराग जानी ने नाबाद 40 रन की पारी खेली।

बीबीएल: थंडर्स के खिलाफ 4 विकेट से हार, खिताबी रेस से बाहर होने की कगार पर रेनेगेड्स

एजेंसी

सिडनी। सिडनी थंडर्स ने बिग बैश लीग (बीबीएल) 2025-26 के 33वें मुकाबले को अपने नाम किया। इस टीम ने सिडनी शोग्राउंड स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में मेलबर्न रेनेगेड्स को डकवर्थ लुईस नियम के तहत 4 विकेट से मात दी। 9 में से 2 सिर्फ मुकाबले जीतकर सिडनी थंडर्स प्वाइंट्स टेबल में सबसे निचले आठवें पायदान पर है। यह टीम खिताबी रेस से बाहर है, जबकि 8 में से 5 मुकाबले गंवाकर मेलबर्न रेनेगेड्स भी इस दौड़ से बाहर होने की कगार पर है। यह टीम प्वाइंट्स टेबल में सातवें स्थान पर है। सिडनी में खेले गए इस मुकाबले में टॉस गंवाकर बल्लेबाजी करने उतरी मेलबर्न रेनेगेड्स ने निर्धारित ओवरों में 8 विकेट खोकर 170 रन बनाए। टीम को जोश ब्राउन और टिम सेफर्ट की सलामी जोड़ी ने शानदार शुरुआत दिलाई। दोनों खिलाड़ियों ने 6.5 ओवरों में 62 रन की साझेदारी की। ब्राउन 25 गेंदों में 3 छक्कों और इतने ही चौकों की मदद से 35 रन बनाकर आउट हुए, जबकि टिम सेफर्ट ने 29 रन का योगदान टीम के खाते में दिया।

इनके अलावा, हसन खान ने 31 गेंदों में सर्वाधिक 46 रन की पारी खेली, जबकि मोहम्मद रिजवान ने 26 रन जुटाए। विपक्षी खेमे से डेविड विली, रयान हैडली और वीस एगर ने 2-2 विकेट हासिल किए। बारिश के चलते सिडनी थंडर्स को जीत के लिए 16 ओवरों में 140 रन का टारगेट मिला, जिसे टीम ने 4 गेंदें शेष रहते हासिल कर लिया।

इंडिया ओपन बैडमिंटन: मेन ड्रॉ में पहुंचे तन्वी शर्मा और एम. तरुण

एजेंसी

नई दिल्ली। वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप की सिल्वर मेडलिस्ट तन्वी शर्मा, महिला डबल्स नेशनल चैंपियन अश्विनी भट, शिखा गौतम और तरुण मन्नेपल्ली को बीडब्ल्यूएफ इंडिया ओपन 2026 के मेन ड्रॉ में जगह मिल गई है। वर्ल्ड चैंपियन और पुरुषों के सिंगल्स में वर्ल्ड नंबर 1 चीन के शी यूकी ने कुनलावुत विटिडसर्न के खिलाफ मलेशिया ओपन 2026 के फाइनल में रिटायर होने के बाद टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया है। उनके हमवतन वेंग होंग यांग भी इस टूर्नामेंट से हट गए हैं। महिलाओं के सिंगल्स में, तीसरी सीड और मौजूदा वर्ल्ड चैंपियन अकाने यामागुची ने भी नाम वापस ले लिया है। अकाने यामागुची मलेशिया ओपन के क्वार्टर फाइनल में पीवी सिंधु के खिलाफ रिटायर हो गई थीं, जिससे तन्वी को इंडिया ओपन में डेब्यू करने का मौका मिला। तन्वी पहले राउंड में चीन की दूसरी सीड वांग झी यी का सामना करेंगी। अगर वह उलटफेर करने में कामयाब रहती हैं, तो 16 वर्षीय खिलाड़ी दूसरे राउंड में दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट हमवतन पीवी सिंधु से सामना कर सकती हैं। तरुण के रिजर्व कैटेगरी से ऊपर आने का मतलब है कि पुरुषों के सिंगल्स के पहले राउंड में दो ऑल-इंडिया मुकाबले होंगे। जहां लक्ष्य सेन और

आयुष शेट्टी एक-दूसरे के खिलाफ होंगे, वहीं तरुण पहले राउंड में किदांबी श्रीकांत का सामना करेंगे।

महिलाओं के डबल्स में, अश्विनी और शिखा पहले राउंड में फ्रांस की मार्गोट लैम्बर्ट और कैमिला पोग्नांटे का सामना करेंगी। पूर्व वर्ल्ड चैंपियन पीवी सिंधु और पुरुषों की डबल्स जोड़ी चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी का कहना है कि घर पर अच्छा प्रदर्शन करने का एहसास कुछ खास होता है, और योनेक्स-सनराइज इंडिया ओपन 2026 इस बार और भी खास है, क्योंकि बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप अगस्त में इसी जगह पर होगी। योनेक्स-सनराइज इंडिया ओपन 2026 का आयोजन दिरा गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बहुत बड़े मल्टी-पर्पस हॉल में 13-18 जनवरी के बीच होगा।

मुख्य ड्रॉ में बदलाव:

नाम वापस लेने वाले खिलाड़ी:

पुरुष सिंगल्स: शी यू क्यूई (चीन) और वेंग होंग यांग (चीन)

महिला सिंगल्स: अकाने यामागुची (जापान) और सिम यू जिन (कोरिया)

पुरुष डबल्स: किम गी जंग/किम सा रंग (कोरिया)

महिला डबल्स: जिया यी फैन/झांग शू जियान (चीन)

प्रमोशन:

पुरुष सिंगल्स: जस्टिन होह (मलेशिया) और तरुण मन्नेपल्ली (भारत)

महिला सिंगल्स: हुआंग यू-हसुन (चीनी ताइपे) और तन्वी शर्मा (भारत)

पुरुष डबल्स: कांग खाई जिंग/आरोन ताई (मलेशिया)

महिला डबल्स: अश्विनी भट/शिखा गौतम (भारत)

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ की बच्चों के भविष्य पर केंद्रित पालिसी

एजेंसी

मुंबई। जीवन बीमा कंपनी आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने नया बीमा प्रॉडक्ट 'आईसीआईसीआई प्रू स्मार्टकिड 360' पेश करने की घोषणा की जो बच्चों की भविष्य की जरूरतों के लिए तैयार किया गया है। कंपनी ने एक विज्ञप्ति में बताया कि इसके तहत ग्राहक धीरे-धीरे एक बचत कोष बना सकते हैं और पहले से तय मनीबैक या भुगतान प्राप्त कर सकते हैं, जो बच्चे के भविष्य के पड़ावों जैसे स्कूल की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या शुरुआती व्यस्क जीवन के लक्ष्यों के समय मिलते हैं। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ के मुख्य प्रॉडक्ट अधिकारी विकास गुप्ता ने कहा, 'इस प्रॉडक्ट की एक अहम विशेषता इनबिल्ट वेवर ऑफ प्रीमियम और बेनिफिट्स कंटिन्यूटी है, जो बीमित व्यक्ति के दुर्भाग्यपूर्ण निधन की स्थिति में बच्चे के भविष्य को सुरक्षित रखती है। इस सुविधा के तहत नामांकित व्यक्ति को जीवन बीमा राशि मिलती है, आगे के सभी प्रीमियम माफ हो जाते हैं और पॉलिसी के लाभ चुने गए विकल्प के अनुसार जारी रहते हैं, जिससे बच्चे के लक्ष्य बिना रुकावट सुरक्षित रहते हैं।' इसमें पॉलिसी अवधि के अंत में यह उत्पाद एकमुश्त गारंटीड परिपक्वता लाभ का प्रावधान है।

गैबियन टेक्नोलॉजी की स्टॉक मार्केट में प्रीमियम एंट्री, लिस्टिंग के बाद मुनाफा वसूली के कारण लगा लोअर सर्किट

नई दिल्ली। स्टील गैबियंस का निर्माण करने वाली कंपनी गैबियन टेक्नोलॉजी इंडिया लिमिटेड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में प्रीमियम एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 81 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 9.88 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 89 रुपये के स्तर पर हुई। हालांकि लिस्टिंग के बाद निवेशकों को तब झटका लगा, जब बिकवावाली के दबाव में इस इस शेयर की चाल में गिरावट आ गई। लिस्टिंग होने के बाद से ही मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण कंपनी के शेयर सुबह 10 बजे तक लुढ़क कर 84.55 रुपये के लोअर सर्किट लेवल तक पहुंच गए। लोअर सर्किट लगने के बावजूद कंपनी के आईपीओ निवेशक आज 4.38 प्रतिशत के फायदे में हैं। गैबियन टेक्नोलॉजी इंडिया लिमिटेड का 29.16 करोड़ रुपये का आईपीओ 6 से 8 जनवरी के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से शानदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 826 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 271.13 गुना (एक्स एंकर) सब्सक्राइब हुआ था।

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड का आईपीओ दूसरे दिन 33.67 गुना हुआ सब्सक्राइब

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी कोल इंडिया की इकाई भारत कोकिंग कोल लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को बोली के दूसरे दिन 33.60 गुना सब्सक्राइब हुआ।

इससे योग्य संस्थागत खरीदार, खुदरा और गैर-संस्थागत निवेशक की तरफ से इस आईपीओ के लिए मजबूत डिमांड दिखी। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक 1,071 करोड़ रुपये के इश्?यू को ऑफर किए गए 34,69,46,500 शेयरों के मुकाबले 11,65,79,29,200 शेयरों के लिए बोलियां प्राप्त हुई। आंकड़ों के मुताबिक गैर-संस्थागत निवेशकों की श्रेणी में 96.17 गुना, जबकि खुदरा व्यक्तिगत निवेशकों की श्रेणी को 26.90 गुना अभिदान मिला है। इसके साथ ही पात्र संस्थागत निवेशकों के लिए बनी श्रेणी को 1.44 गुना अभिदान मिला।भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) के इस आईपीओ को शुक्रवार को बोली लगाने के लिए खुलने के कुछ ही मिनटों के बाद पूर्ण अभिदान मिल गया था। इससे एक दिन पहले बीसीसीएल ने गुरुवार को कहा था कि उसने एंकर निवेशकों से 273 करोड़ रुपये से ज्यादा जुटाए हैं। कंपनी का 1,071 करोड़ रुपये का आईपीओ मंगलवार को बंद होगा। मुख्य शेयर बाजारों में सूचीबद्ध होने वाला यह इस साल का पहला इश्यू है। कंपनी ने इस आईपीओ का मूल्य दायरा 21-23 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है और उच्च मूल्य पर कंपनी का मूल्यांकन 10,700 करोड़ रुपये से ज्यादा है।

मारुति ने पेट्रोल पंपों पर वाहन सर्विस के लिए इंडियन ऑयल से हाथ मिलाया

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड (एमएसआईएल) ने ग्राहकों की सुविधाओं और कारों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बड़ा कदम उठाया है। कंपनी ने देशभर में स्थित इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) के कई पेट्रोल पंपों पर वाहन सर्विस सुविधाएं स्थापित करने के लिए साझेदारी की है। मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा कि ग्राहक इन केंद्रों पर नियमित रख-रखाव, छोटी-मोटी मरम्मत और यहां तक कि बड़ी 'सर्विसिंग' भी करा सकेंगे। इससे कारों की देखभाल आसान और अधिक सुलभ हो जाएगी। कंपनी ने बताया कि यह सहयोग परिवहन और ऊर्जा क्षेत्र को एक साथ लाने और ग्राहकों आईओसीएल ने आगे कहा कि यह पहल उसके सर्विस नेटवर्क को और मजबूत करेगी, जिसका विस्तार पहले से ही भारत के 2,882 शहरों में 5,780 से अधिक सर्विस सेंटर तक है।

जीआरई रीन्यू इनरटेक का आईपीओ लॉन्च, 21 जनवरी को होगी लिस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। सोलर एनर्जी सेक्टर में काम करने वाली कंपनी जीआरई रीन्यू इनरटेक का 39.56 करोड़ रुपये का आईपीओ आज सब्सक्रिप्शन के लिए लॉन्च कर दिया गया। इस आईपीओ में 16 जनवरी तक बोली लगाई जा सकती है। इश्यू की क्लोजिंग के बाद 19 जनवरी को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा, जबकि 20 जनवरी को अलॉटेड शेयर डीमैट अकाउंट में क्रेडिट कर दिए जाएंगे। कंपनी के शेयर 21 जनवरी को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट हो सकते हैं।

इस आईपीओ में बोली लगाने के लिए 100 रुपये से लेकर 105 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है। जीआरई रीन्यू इनरटेक के इस आईपीओ में रिटेल इनवेस्टर्स दो लॉट यानी 2,400 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें 2,52,000 रुपये का निवेश करना होगा। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले कुल 37.68 लाख नए शेयर जारी हो

रहे हैं। आईपीओ खुलने से एक कारोबारी दिन पहले 12 जनवरी को जीआरई रीन्यू इनरटेक ने 9 एंकर इनवेस्टर्स से 11.15 करोड़ रुपये जुटाए। इन एंकर इनवेस्टर्स में स्ट्रेटजिक सिक्स्थ सेंस कैपिटल फंड सबसे बड़ा इनवेस्टर रहा। इसने कंपनी से 176.40 लाख रुपये में 1.68 लाख शेयर खरीदे हैं। इसी तरह विनय ग्रोथ फंड 171.36 लाख रुपये में कंपनी से 1,63,200 शेयर खरीद कर दूसरा सबसे बड़ा एंकर इनवेस्टर बना है। इसके अलावा मैक ग्रोथ स्कीम, राजस्थान ग्लोबल सिक्योरिटीज प्राइवेट लिमिटेड, नॉर्थ स्टार अपॉर्च्युनिटीज फंड, एसएमसी इंडिया अपॉर्च्युनिटीज फंड, ग्रोबिज एसएमई अपॉर्च्युनिटीज फंड, पीईएसबी अल्फा फंड और सीसीवी इमर्जिंग अपॉर्च्युनिटीज फंड जैसे प्रमुख नाम भी एंकर बुक में शामिल हुए हैं।इस आईपीओ में क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए 47.13 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व किया गया है। इसके अलावा रिटेल इनवेस्टर्स के लिए 33.44 प्रतिशत हिस्सा, नॉन इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स (एनआईआई) के लिए 14.33 प्रतिशत हिस्सा और मार्केट मेकर्स के लिए 5.10 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व है। इस इश्यू के लिए शेयर इंडिया कैपिटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को बुक रनिंग लीड मैनेजर बनाया गया है, जबकि मांशीतला सिक्योरिटीज प्राइवेट लिमिटेड को रजिस्ट्रार बनाया गया है। इस इश्यू के लिए शेयर इंडिया कैपिटल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड ही कंपनी का मार्केट मेकर भी है। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास जमा कराए गए ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत में उतार चढ़ाव होता रहा है।

इंडिगो की न्यू ईयर सेल, किराया 1,499 रुपये से शुरू

एजेंसी

नई दिल्ली। निजी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने मंगलवार को न्यू ईयर सेल की घोषणा की जिसमें घरेलू मार्गों पर किराया 1,499 रुपये से शुरू हो रहा है। इंडिगो ने मंगलवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि यह सेल 13 से 16 जनवरी तक जारी रहेगी। इसमें घरेलू मार्गों पर सभी कर एवं शुल्क सहित किराया 1,499 रुपये से शुरू होगा। वहीं, अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर किराया 4,499 रुपये से शुरू होगा। साथ ही चुनिंदा 6ई एडऑन पर 70 प्रतिशत तक की छूट भी मिलेगी।इस ऑफर के तहत 20 जनवरी से 30 अप्रैल तक की यात्रा के लिए टिकट की बुकिंग की जा सकेगी। बुकिंग यात्रा से कम से कम सात दिन पहले करानी होगी। इंडिगोस्ट्रेच का किराया चुनिंदा घरेलू मार्गों पर 9,999 रुपये से शुरू होगा। एयरलाइन ने बताया कि इंडिगो की वेबसाइट, ऐप, व्हाट्सऐप और एआई एसिस्टेंट 6ईस्काई से सीधे टिकट बुक कराने पर दो साल तक के बच्चों के टिकट एक रुपये में बुक कराये जा सकेंगे।

दिसंबर 2025 में यात्री वाहनों की बिक्री सालाना आधार पर 27 फीसदी बढ़ी: सियाम

एजेंसी

नई दिल्ली। यात्री वाहनों की थोक बिक्री में यूटिलिटी वाहनों की मजबूत मांग के दम पर दिसंबर 2025 में सालाना आधार पर 27 फीसदी बढ़ी है। उद्योग निकाय सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) ने मंगलवार को एक बयान में बताया कि दिसंबर में यात्री वाहनों की कुल बिक्री 3,99,216 इकाई रही, जो दिसंबर 2024 की 3,14,934 इकाई की तुलना में 26.8 फीसदी अधिक है। सियाम के मुताबिक दिसंबर महीने में दोपहिया वाहनों की थोक बिक्री सालाना आधार पर 11,05,565 इकाई के मुकाबले 39 फीसदी की बढ़ोत?तरी के साथ 15,41,036 इकाई हो गई। वहीं, तिपहिया वाहनों की कुल बिक्री 61,924 इकाई रही है, जो दिसंबर 2024 की 52,733 इकाई की तुलना में 17 फीसदी अधिक है। सियाम ने बिक्री के परिदृश्य पर कहा कि वाहन उद्योग वित्त वर्ष 2025-26 की चौथी तिमाही में मजबूत गति

के साथ प्रवेश कर रहा है, क्योंकि 2025 के अंत में सभी वाहन खंडों में मजबूत दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की गयी। चौथी तिमाही के दौरान वाहनों की थोक एवं खुदरा बिक्री की मात्रा में स्थिर वृद्धि की उम्मीद है।

उद्योग जगत ने कहा, ''भू-राजनीतिक घटनाक्रमों पर नजर रखते हुए उद्योग निकाय को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2025-26 सकारात्मक वृद्धि के साथ समाप्त होगा। इसमें नीतिगत रूप से समर्थित कारक मजबूती से मौजूद रहेंगे जिससे हाल के वर्षों के मजबूत प्रदर्शन को बनाए रखने में मदद मिलेगी।''

शिवराज चौहान ने दिल्ली में वित्त मंत्री सीतारमण से की मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह ने यहां वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की और आगामी केंद्रीय बजट को लेकर कृषि एवं ग्रामीण विकास के संबंध में विस्तृत सुझाव प्रस्तुत किये।

श्री चौहान के कार्यालय ने बताया, ' कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री ने हाल के सप्ताहों में देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया और राज्यों के अलावा दिल्ली में भी प्रगतिशील किसानों, कृषि विशेषज्ञों, स्वयं सहायता समूहों, सहकारी संस्थाओं तथा ग्रामीण उद्योगों एवं दोनों मंत्रालयों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधियों से व्यापक संवाद स्थापित किया। इन चर्चाओं से प्राप्त विचारों और सुझावों को एक समग्र कृषि एवं ग्रामीण विकास के सुझाव के रूप में तैयार कर उन्होंने वित्त मंत्री को सौंपा। ' वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 2026-27 का केंद्रीय बजट आगामी एक फरवरी को संसद में पेश करेंगी। श्री सिंह ने बाद में एक पोस्ट में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए निरंतर कार्यरत है। श्री चौहान ने कहा कि श्री मोदी नेतृत्व में आगामी आम बजट

किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरक होगा। उन्होंने भरोसा व्यक्त किया कि वित्त वर्ष 2026-27 का बजट प्रधानमंत्री के 'समृद्ध किसान, सशक्त गांव' के संकल्प को साकार करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

सब्सक्रिप्शन के लिए खुला इंडो एसएमसी का आईपीओ, 16 जनवरी तक लगा सकते हैं बोली

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडस्ट्रियल सेक्टर के लिए इलेक्ट्रिकल प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी इंडो एसएमसी का 91.95 करोड़ रुपये का आईपीओ आज सब्सक्रिप्शन के लिए लॉन्च कर दिया गया। इस आईपीओ में 16 जनवरी तक बोली लगाई जा सकती है। इश्यू की क्लोजिंग के बाद 19 जनवरी को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा, जबकि 20 जनवरी को अलॉटेड शेयर डीमैट अकाउंट में क्रेडिट कर दिए जाएंगे। कंपनी के शेयर 21 जनवरी को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट हो सकते हैं। इस आईपीओ में बोली लगाने के लिए 141 रुपये से लेकर 149 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,000 शेयर का है। इंडो एसएमसी के इस आईपीओ में रिटेल इनवेस्टर्स दो को लॉट यानी 2,000 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें 2,98,000 रुपये का निवेश करना होगा। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले कुल 61.71 लाख नए शेयर जारी हो रहे हैं। आईपीओ खुलने से एक

कारोबारी दिन पहले 12 जनवरी को इंडो एसएमसी ने 11 एंकर इनवेस्टर्स से 26.16 करोड़ रुपये जुटाए। इन एंकर इनवेस्टर्स में बंगाल फाइनेंस एंड इनवेस्टमेंट प्राइवेट लिमिटेड सबसे बड़ा इनवेस्टर रहा। इसने कंपनी से अपर प्राइस लिमिट 149 रुपये प्रति शेयर की दर से 3.05 लाख शेयर खरीदे हैं। इसी तरह 360 वन एलवीएफ ट्रेजरी सॉल्यूशंस फंड कंपनी से 1.18 लाख शेयर खरीद कर दूसरा सबसे बड़ा एंकर इनवेस्टर बना है। इस आईपीओ में क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए 47.45 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व किया गया है। इसके अलावा रिटेल इनवेस्टर्स के लिए 33.25 प्रतिशत हिस्सा, नॉन इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स (एनआईआई) के लिए 14.29 प्रतिशत हिस्सा और मार्केट मेकर्स के लिए 5.01 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व है। इस इश्यू के लिए जीवाईआर कैपिटल एडवाइजर्स प्रा.लि. को बुक रनिंग लीड मैनेजर बनाया गया है, जबकि केफिन टेक्नोलॉजी लिमिटेड को रजिस्ट्रार बनाया गया है। वहीं गिरिराज स्टॉक ब्रोकिंग प्रा.लि. और निकुंज स्टॉक ब्रोकर्स लिमिटेड कंपनी के मार्केट मेकर हैं।कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो कैपिटल मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास जमा कराए गए ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत में लगातार मजबूती आई है। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी को 46 लाख रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था, जो अगले वित्त वर्ष 2023-24 में बढ़ कर तीन करोड़ रुपये हो गया। वित्त वर्ष 2024-25 में कंपनी का शुद्ध लाभ उछल कर 15.44 करोड़ रुपये रह गया।

ट्रेन से सफर में नहीं होगी थकान, रेलवे अब सिर्फ 99 रुपये में देगा फुल बॉडी मसाज

एजेंसी

अहमदाबाद। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि ऐसी सुविधाएं दूसरे बड़े स्टेशनों पर भी जल्द शुरू की जाएंगी। फिलहाल यह सुविधा मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) पर यात्रियों के लिए खास रिलैक्स जोन शुरू किया है। यहां सिर्फ 99 रुपये में फुल बॉडी मसाज की सुविधा मिलेगी। सफर के बाद थके-हारे यात्रियों को तुरंत ताजगी मिल जाएगी। अभी एक स्टेशन से यह सुविधा शुरू की गयी है। यह सफल रहने पर अन्य स्टेशनों पर भी यात्रियों की सुरक्षा के लिए व्यवस्था शुरू की जाएगी।

गुजरे दिनों की बात हो जाएगी मध्य रेलवे ने मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) पर यात्रियों के लिए खास रिलैक्स जोन शुरू किया है। यहां सिर्फ 99 रुपये में फुल बॉडी मसाज की सुविधा मिलेगी। सफर के बाद थके-हारे यात्रियों को तुरंत ताजगी मिल जाएगी। अभी एक स्टेशन से यह सुविधा शुरू की गयी है। यह सफल रहने पर अन्य स्टेशनों पर भी यात्रियों की सुरक्षा के लिए व्यवस्था शुरू की जाएगी।

सब्सक्रिप्शन के लिए लॉन्च हुआ अमागी मीडिया का आईपीओ, 16 जनवरी तक लगा सकते हैं बोली

एजेंसी

नई दिल्ली। मीडिया सेक्टर से जुड़ी कंपनी अमागी मीडिया लैब्स का 1,788.62 करोड़ रुपये का आईपीओ आज सब्सक्रिप्शन के लिए लॉन्च कर दिया गया। इस आईपीओ में 16 जनवरी तक बोली लगाई जा सकती है। इश्यू की क्लोजिंग के बाद 19 जनवरी को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा, जबकि 20 जनवरी को अलॉटेड शेयर डीमैट अकाउंट में क्रेडिट कर दिए जाएंगे। कंपनी के शेयर 21 जनवरी को बीएसई और एनएसई पर लिस्ट हो सकते हैं।

इस आईपीओ में बोली लगाने के लिए 343 रुपये से लेकर 361 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 41 शेयर का है। अमागी मीडिया लैब्स के इस आईपीओ में रिटेल इनवेस्टर्स कम से कम 1 लॉट यानी 41 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें 14,801 रुपये का निवेश करना होगा।

इसी तरह रिटेल इनवेस्टर अधिकतम 13 लॉट यानी 533 शेयर के लिए बोली लगा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें 1,92,413 रुपये का निवेश करना होगा। आईपीओ के तहत 5 रुपये फेस वैल्यू वाले कुल 4,95,46,221 शेयर जारी हो रहे हैं। इनमें 816 करोड़ रुपये के 2,26,03,878 नए शेयर और 973 करोड़ रुपये के 2,69,42,343 शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के जरिये बेचे जा रहे हैं। आईपीओ खुलने से एक कारोबारी दिन पहले 12 जनवरी को अमागी मीडिया लैब्स ने 42 एंकर इनवेस्टर्स से 804.87 करोड़ रुपये जुटाए। इसके तहत अपर प्राइस बैंड पर 2.22 करोड़ इक्विटी शेयरों का एलोकेशन फाइनल किया गया। एंकर इनवेस्टर्स को किए गए कुल एलोकेशन में से 613 करोड़ रुपये कीमत के 1.69 करोड़ इक्विटी शेयर 11 घरेलू म्यूचुअल फंड्स को आवंटित किए गए। इनमें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया म्यूचुअल फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, आदित्य बिड़ला सन लाइफ एएमसी, एचडीएफसी एएमसी, मोतीलाल ओसवाल एएमसी, फ्रैंकलिन इंडिया, पीजीआईएम इंडिया और हेलिओस शामिल हैं। इसके अलावा इंश्योरेंस कंपनियों में एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस, भारती एक्सा लाइफ इंश्योरेंस और एडलवाइस लाइफ इंश्योरेंस ने भी अमागी के 14.95 लाख शेयर 53.98 करोड़ रुपये में खरीदे। इन निवेशकों के अलावा सोसाइट जेनरल, गोल्डमैन सैक्स, 360 वन, अमुंडी फंड्स, क्रीएजिस ट्रांसफॉर्मेशन फंड, न्यू वर्नोन इंडिया और फिडेलिटी फंड्स ने भी एंकर बुक के जरिए कंपनी में निवेश किया। एसबीआई म्यूचुअल फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल और आदित्य बिड़ला सन लाइफ एएमसी एंकर बुक में सबसे बड़े निवेशक रहे, जिनमें से प्रत्येक ने अलग अलग 31.85 लाख शेयर 115 करोड़ रुपये में खरीदे।

11 जनवरी तक भारत का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 8.82 प्रतिशत से बढ़कर 18.38 लाख करोड़ रुपये से अधिक का हुआ

एजेंसी

नई दिल्ली। चालू वित्त वर्ष में 11 जनवरी तक भारत का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 8.82 प्रतिशत से बढ़कर 18.38 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया। आयकर विभाग द्वारा जारी आंकड़ों में यह जानकारी दी गयी। आयकर विभाग के अनुसार कुल संग्रह में 8.63 लाख करोड़ रुपये से अधिक का शुद्ध कॉर्पोरेट कर संग्रह शामिल है, जबकि व्यक्तियों, हिंदू अविभाजित परिवारों (एचयूएफ) और अन्य संस्थाओं सहित गैर-कॉर्पोरेट संस्थाओं से एकत्र किया गया कर 9.30 लाख करोड़ रुपये रहा। एक अप्रैल से 11 जनवरी के बीच प्रतिभूति लेनदेन कर (एसटीटी) से 44,867 करोड़ रुपये का संग्रह हुआ, जो पूंजी बाजारों में स्थिर गतिविधि को दर्शाता है। कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत करों से प्रत्यक्ष कर संग्रह में 8.82 प्रतिशत

की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 18.38 लाख करोड़ रूपये हो गया।

इस बीच, इस अवधि के दौरान जारी किए गए कर धनवापसी में वार्षिक आधार पर 17 प्रतिशत की गिरावट आई और यह घटकर 3.12 लाख करोड़ रूपये रह गया।चालू वित्त वर्ष की 11 जनवरी तक प्रत्यक्ष कर संग्रह में कुल मिलाकर 4.14 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह लगभग 21.50 लाख करोड़ रूपये तक पहुंच गया। वित्त वर्ष 2026 (2025-26) के लिए सरकार ने प्रत्यक्ष कर संग्रह का अनुमान 25.20 लाख करोड़ रूपये लगाया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 12.7प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। इसके तहत, केंद्र सरकार का लक्ष्य वित्त वर्ष 2026 में प्रतिभूति लेनदेन कर के माध्यम से 78,000 करोड़ रूपये जुटाना है।

एचसीएल टेक्नोलॉजीज का तिमाही मुनाफा 4.5 प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की अग्रणी कंपनी एचसीएल टेक्नोलॉजीज का शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) में 4.5 प्रतिशत बढ़कर 4,795 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने प्रति शेयर 12 रुपये के लाभांश की घोषणा की है जिसके लिए रिकॉर्ड की तारीख 16 जनवरी रखी गयी है और भुगतान 27 जनवरी को किया जायेगा। यह लगातार 92वीं तिमाही है जब कंपनी ने राजस्व की घोषणा की है।

कंपनी ने बताया कि आलोच्य तिमाही में उसका कुल राजस्व 13.3 प्रतिशत बढ़कर 33,872 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। डॉलर में राजस्व 379.3 करोड़ रहा जो सालाना आधार पर 7.4 प्रतिशत अधिक है। एचसीएल टेक्नोलॉजीज ने पूरे वित्त वर्ष के दौरान राजस्व में 4.0 प्रतिशत से 4.5 प्रतिशत के बीच वृद्धि की उम्मीद जतायी है। वहीं, सर्विसेज श्रेणी में राजस्व 4.75-5.25 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद जतायी गयी है। कंपनी ने कहा है कि वित्त वर्ष में उसका कर पूर्व लाभ 17-18 प्रतिशत बढ़ सकता है। कंपनी के राजस्व में सबसे अधिक 56.3 प्रतिशत का योगदान अमेरिकी कारोबार का रहा। यूरोप का योगदान 27.7 प्रतिशत और भारत का 3.3 प्रतिशत रहा। अन्य क्षेत्रों का कुल योगदान 12.8 प्रतिशत रहा।वित्तीय सेवा खंड के क्लाइंटों से कंपनी ने सबसे अधिक 21.1 प्रतिशत राजस्व कमाया।

प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुरूप व्यापारियों को सशक्त बनाने वाला हो केंद्रीय बजट: कैट

एजेंसी

नई दिल्ली। कारोबारी संगठन कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने कहा कि आने वाला केंद्रीय बजट 2026-27 प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुरूप व्यापारियों को सशक्त बनाने वाला होना चाहिए। कैट ने मंगलवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को देशभर के व्यापारिक समुदाय की ओर से व्यापक एवं दूरदर्शी सुझाव प्रेषित किए हैं। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं चांदनी चौक के सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सशक्त, पारदर्शी और आत्मनिर्भर भारत के विज़न के अनुरूप कैट ने वित?त मंत्री सीतारमण को ऐसे सुझाव दिए हैं, जो व्यापार को सम्मान, सरलता, सुरक्षा और समान अवसर प्रदान करते हैं। खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा ईज ऑफ डूइंग बिजनेस, वोकल फॉर लोकल, लोकल फॉर ग्लोबल, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों ने देश के व्यापारिक वातावरण को नई दिशा दी है। अब जरूरत है कि आगामी केंद्रीय बजट 2026-27 में इन पहलों को और मजबूत किया जाए। उन्होंने बताया कि कैट द्वारा दिए गए प्रमुख सुझावों में ट्रस्ट आधारित व्यापार व्यवस्था के तहत छोटे व्यापारियों के लिए सिंगल विंडो कंप्लायंस सिस्टम, अनावश्यक नोटिस एवं निरीक्षण पर रोक तथा व्यापारिक कानूनों के डिक्रिमिनलाइज़ेशन को तेजी से लागू करने की मांग की गई है। इसके साथ ही पार्टिसिपेटरी गवर्नेंस को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक जिले में अधिकारियों एवं व्यापारियों की संयुक्त समिति गठित करने का सुझाव दिया गया है, जिससे व्यापारिक समस्याओं का समाधान जिला स्तर पर ही हो सके।

खंडेलवाल ने कहा कि कैट ने वन नेशन -वन लाइसेंस-वन रजिस्ट्रेशन की अवधारणा को लागू करने, सभी व्यापारिक लाइसेंसों को एक डिजिटल प्लेटफॉर्म से जारी करने तथा ऑटो-रिन्यूअल की व्यवस्था करने का भी आग्रह किया है। उन?होंने कहा कि? प्रधानमंत्री मोदी के डिजिटल इंडिया विज़न को आगे बढ़ाते हुए कैट ने पारंपरिक व्यापार को आधुनिक बनाने के लिए टेक्नोलॉजी एडॉप्शन इंसेंटिव स्कीम, व्यापार को डिजिटल करने वाले उपकरणों पर सब्सिडी एवं टैक्स छूट तथा डिजिटल दुकान मिशन शुरू करने की सिफारिश की गई है। खंडेलवाल ने कहा कि ई-कॉमर्स और क्विक-कॉमर्स में भारी डिस्काउंटिंग, प्रीडेटरी प्राइसिंग और विदेशी फंडिंग से होने वाली अनुचित प्रतिस्पर्धा पर तत्काल नियंत्रण आवश्यक है। इसके लिए वाणिज्य मंत्रालय से हर ई-कॉमर्स एवं क्विक कॉमर्स कंपनी को अनिवार्य पंजीकरण, समान नियम, कड़ी निगरानी तथा फेयर ट्रेड कोड लागू करने का सुझाव दिया गया है, ताकि छोटे रिटेलर्स के हित सुरक्षित रह सकें। कैट ने ईमानदार टैक्सपेयर्स को प्रोत्साहन देने के लिए टैक्सपेयर रेटिंग सिस्टम, कम स्क्रूटनी, फास्ट ट्रैक रिफंड और सस्ते ऋण की सुविधा देने की भी मांग की है। उन्होंने कहा कि 'व्यापार भी एक कौशल है '- इस सिद्धांत को अपनाते हुए व्यापारियों और उनके कर्मचारियों के लिए नेशनल ट्रेडर्स स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम शुरू किया जाना चाहिए, जिसमें डिजिटल स्किल्स, अकाउंटिंग, साइबर सिक्योरिटी और कस्टमर मैनेजमेंट शामिल हों। उन्होंने बताया कि कैट ने छोटे व्यापारियों के लिए पेंशन व बीमा सुरक्षा को मजबूत करने, व्यापारी पेंशन योजना को व्यावहारिक बनाने तथा पीएमजेजेबीवाई, पीएमएसबीवाई और पीएम-एसवाईएम जैसी योजनाओं को और सुदृढ़ करने का आग्रह किया है। खंडेलवाल ने तेज़ी से बढ़ते साइबर अपराधों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि व्यापारियों की सुरक्षा के लिए साइबर फ्रॉड प्रोटेक्शन फंड, त्वरित मुआवज़ा व्यवस्था, सख्त डेटा प्रोटेक्शन कानून और बैंकिंग तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर डेटा दुरुपयोग पर रोक अत्यंत आवश्यक है।

ईरान ने ट्रंप की चुनौती स्वीकार की, कहा- अमेरिका से युद्ध के लिए तैयार

एजेंसी

तेहरान/वाशिंगटन। इस्लामिक गणराज्य ईरान में 28 दिसंबर को महंगाई के खिलाफ शुरू प्रदर्शन देश के सर्वोच्च शासक अली खामेनेई को हटाने के आंदोलन के रूप में बदल गया है। समूचे ईरान में लोग सड़कों पर हैं। इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई है। सुरक्षा बलों की गोलियों से अब तक कम से कम 2000 प्रदर्शनकारियों के मारे जाने की खबरें हैं। लोग लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं। खामेनेई का कहना है कि प्रदर्शनकारियों को अमेरिका भड़का रहा है। उधर, अमेरिकी ने कई बार चेतावनी दी है कि अगर प्रदर्शनकारियों पर दमन जारी रहा तो मजबूत सैन्य हमले के लिए ईरान तैयार रहे। ईरान ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चुनौती को स्वीकार करते हुए कहा कि वह हर तरह से युद्ध के लिए तैयार हैं। ईरान इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका ईरान पर बहुत मजबूत सैन्य हमले पर विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि तेहरान को प्रदर्शनकारियों पर दमन न करने की चेतावनी की अनदेखी करना बहुत महंगा पड़ेगा। इस पर ईरान के विदेशमंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि ईरान निष्पक्ष बातचीत के लिए भी तैयार है, लेकिन वह युद्ध के लिए भी हर तरह से तैयार है। ईरान के स्वास्थ्य अधिकारियों ने दावा किया है कि दो हफ्ते से ज्यादा समय से जारी अशांति में मरने वालों की शुरुआती संख्या हाल के दिनों में बढ़कर कम से कम 2,000 पहुंच गई है। ईरान ने ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस और इटली के राजदूतों को तलब किया है। ईरान ने उनकी सरकारों पर प्रदर्शनकारियों का समर्थन करने और उसके आंतरिक मामलों में दखल देने का आरोप लगाया।

सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति ट्रंप को वरिष्ठ अधिकारियों से ईरान के खिलाफ कार्रवाई के लिए तीन विकल्पों की जानकारी दी है। पहला- सैन्य हमला। दूसरा- साइबर ऑपरेशन। तीसरा - प्रदर्शनकारियों का सहयोग करने के लिए मनोवैज्ञानिक रणनीति। अधिकारियों ने कहा कि यह तीनों एक साथ भी हो सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, दो अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया है और कूटनीतिक दरवाजे खुले हुए हैं।

ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने प्रदर्शनकारियों के खिलाफ हिंसा की निंदा की। उन्होंने उम्मीद जताई कि ईरान के लोग मौजूदा सरकार को हटाकर एक लोकतांत्रिक ईरान स्थापित करेंगे, जहां मानवाधिकारों का सम्मान किया जाएगा।

कैनबरा में एक संवाददाता सम्मेलन में अल्बानीज ने कहा, हम ईरान के लोगों के साथ खड़े हैं जो एक दमनकारी शासन के खिलाफ लड़ रहे हैं। मुझे उम्मीद है, लोग खामेनेई को हटा देंगे। विदेशमंत्री पेनी वोंग ने कहा कि मौजूदा ईरानी सरकार की कोई वैधता नहीं है। वह सत्ता बचाने के लिए अपने ही नागरिकों की हत्या कर रही है।

क्यूबा को तेल आपूर्ति पर ट्रंप की चेतावनी, अमेरिका से समझौते की सलाह

एजेंसी

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया में लागू हुए नए सोशल मीडिया आयु प्रतिबंध कानून के तहत टेक कंपनी मेटा ने 16 वर्ष से कम उम्र के ऑस्ट्रेलियाई युवाओं के 5 लाख से अधिक सोशल मीडिया अकाउंट हटा दिए हैं। कंपनी ने एक ब्लॉग पोस्ट के जरिए यह जानकारी दी है। मेटा के अनुसार, 11 दिसंबर तक उसने करीब 5.5 लाख ऐसे अकाउंट्स की पहुंच बंद की, जो 16 वर्ष से कम उम्र के उपयोगकर्ताओं के थे। इनमें लगभग 3.30 लाख अकाउंट इंस्टाग्राम, 1.73 लाख फेसबुक और करीब 40 हजार थ्रेड्स प्लेटफॉर्म से जुड़े थे। इंस्टाग्राम, फेसबुक और थ्रेड्स - तीनों ही प्लेटफॉर्म Meta के स्वामित्व में हैं। दरअसल, ऑस्ट्रेलिया सरकार ने 2024 के अंत में एक नया कानून लागू किया था, जो 04 दिसंबर से प्रभावी हुआ। इस कानून के तहत सोशल मीडिया कंपनियों को 16 साल से कम उम्र के बच्चों के अकाउंट हटाने और नए अकाउंट बनाने से रोकने का निर्देश दिया गया है। इस नियम में न तो माता-पिता की सहमति को छूट दी गई है और न ही पहले से मौजूद अकाउंट्स को। प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने इस कानून को 'दुनिया में अपनी तरह का अग्रणी' बताया था। सरकार का कहना है कि यह फैसला विशेषज्ञों, अभिभावकों, संगठनों और शिक्षाविदों से व्यापक सलाह के बाद लिया गया है। नियमों का उल्लंघन करने पर उपयोगकर्ताओं पर नहीं, बल्कि कंपनियों पर भारी जुर्माने का प्रावधान है।

यूरोपीय संसद ने ईरानी राजनयिकों के प्रवेश पर लगाया प्रतिबंध

ब्रसेल्स। ईरान में जारी सरकार-विरोधी प्रदर्शनों के बीच यूरोपीय संसद ने कड़ा कदम उठाते हुए अपने सभी परिसरों में ईरान के राजनयिकों और अन्य आधिकारिक प्रतिनिधियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। यह फैसला यूरोपीय संसद की अध्यक्ष रोबर्टा मेट्सोला ने लिया है। रोबर्टा मेट्सोला ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी बयान में कहा कि यूरोपीय संसद ईरान के मौजूदा शासन को किसी भी तरह से वैधता देने में सहयोग नहीं करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि यह शासन यातना, दमन और हत्याओं के जरिए खुद को बनाए हुए है। मेट्सोला के अनुसार, मौजूदा हालात में 'सब कुछ सामान्य' की तरह चलना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि ईरान के लोग अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए साहसपूर्वक आवाज उठा रहे हैं और ऐसे समय में यूरोपीय संसद की जिम्मेदारी है कि वह स्पष्ट संदेश दे। इसी के तहत यह निर्णय लिया गया है कि ईरान के किसी भी राजनयिक या प्रतिनिधि को अब यूरोपीय संसद की इमारतों में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। यूरोपीय संसद, जो यूरोपीय संघ की प्रमुख कानून बनाने वाली संस्था है, पहले भी ईरान में मानवाधिकारों की स्थिति को लेकर चिंता जताती रही है। ताजा फैसले को ईरानी शासन पर राजनीतिक और नैतिक दबाव बढ़ाने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।

ईरान में इंटरनेट बंदी का असर : तेहरान में दूतावासों की कांसुलर सेवाएं बाधित

तेहरान। ईरान में जारी इंटरनेट शटडाउन का असर अब कूटनीतिक और कांसुलर सेवाओं पर भी दिखने लगा है। ईरान के विदेश मंत्रालय ने स्वीकार किया है कि राजधानी तेहरान में इंटरनेट बाधित होने के कारण कुछ कांसुलर सेवाएं प्रभावित हुई हैं। ईरानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाघाई ने एक वीडियो संदेश में कहा कि सरकार को इस बात की पूरी जानकारी है कि इंटरनेट बंद होने की वजह से नागरिकों और दूतावासों से जुड़ी कुछ सेवाएं सुचारू रूप से संचालित नहीं हो पा रही हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह स्थिति देश की मौजूदा सुरक्षा परिस्थितियों और संबंधित सुरक्षा एजेंसियों द्वारा लिए गए फैसलों का नतीजा है। प्रवक्ता ने भरोसा दिलाया कि यह समस्या अस्थायी है और जल्द ही इसका समाधान कर लिया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि विदेश मंत्रालय तेहरान में स्थित विभिन्न देशों के दूतावासों और कांसुलर कार्यालयों के संपर्क में है, ताकि इंटरनेट बंदी से उत्पन्न दिक्कतों को समझा जा सके और उन्हें दूर करने के प्रयास किए जा सकें। गौरतलब है कि ईरानी सरकार ने बीते सप्ताह देशभर में बढ़ते सरकार-विरोधी प्रदर्शनों के बीच इंटरनेट सेवाओं पर कड़े प्रतिबंध लगाए थे। इस कदम के बाद से संचार व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है, जिससे आम नागरिकों के साथ-साथ विदेशी मिशनों के कामकाज पर भी असर पड़ा है।

सूडान में आरएसएफ के ड्रोन हमलों में 32 लोगों की मौत

खार्तूम। मध्य और दक्षिण सूडान में सोमवार को रैपिड सपोर्ट फोर्सेज (आरएसएफ) के ड्रोन हमलों में 32 लोग मारे गए एवं 86 अन्य घायल हो गए। स्थानीय सूत्रों ने यह जानकारी दी है।सिन्नार के एक सरकारी सूत्र ने बताया कि मध्य सूडान के सिन्नार राज्य के सिन्जा शहर में एक सैन्य शिविर पर आरएसएफ के ड्रोन हमले में कम से कम 27 लोग मारे गए और 73 अन्य घायल हो गए एवं चोटों की गंभीरता के कारण मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। एक चश्मदीद ने कहा कि हमले में सूडानी सेना के 17वें इन्फेंट्री डिवीजन मुख्यालय और पास की बिजली और पानी की सुविधाओं को निशाना बनाया गया था। उन्होंने कहा, 'शहर में एक साथ और ज़ोरदार धमाके हुए, साथ ही सूडानी सेना के एंटी-एयरक्राफ्ट फायर की आवाज़ भी आई,' और बताया कि घायलों को राज्य के कई अस्पतालों में ले जाया गया।

काठमांडू के मेयर बालेन शाह देंगे इस्तीफा, केपी ओली के खिलाफ चुनाव लड़ने की तैयारी में

एजेंसी

काठमांडू। काठमांडू के मेयर बालेंद्र शाह (बालेन) मेयर पद से इस्तीफा देकर आगामी आम चुनाव में पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के खिलाफ झापा-5 निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं। उनके सचिवालय के अनुसार, वह इसके लिए आवश्यक तैयारी में जुटे हुए हैं। झापा-5 नेकपा (एमाले) के अध्यक्ष केपी शर्मा ओली का निर्वाचन क्षेत्र है। ओली यहां से लगातार निर्वाचित होते रहे हैं। सचिवालय ने बताया कि बालेन उसी निर्वाचन क्षेत्र में मुकाबला करने की तैयारी के तहत झापा के स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ लगातार चर्चा कर रहे हैं। भी बालेन ने राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (रास्वपा) झापा के अध्यक्ष प्रकाश पाठक सहित अन्य नेताओं से बातचीत की। बालेन के निजी सचिव भूपदेव शाह ने कहा, 'मेयर साहब झापा-5 से केपी ओली के खिलाफ चुनाव लड़ने की तैयारी में हैं। हमारी टीम वहां मत सर्वेक्षण भी कर रही है। इसी क्रम में आज भी उन्होंने वहां के नेताओं से मुलाकात कर स्थिति को समझा।' शाह के अनुसार, वह 19 जनवरी तक अपने पद से इस्तीफा देकर 20 तारीख को नामांकन दाखिल करने के लिए झापा जाने की योजना बना रहे हैं।

नेपाली कांग्रेस का विभाजन रोकने के लिए निर्णायक वार्ता शुरू

एजेंसी

काठमांडू। नेपाली कांग्रेस में जारी आंतरिक गतिरोध को सुलझाने और पार्टी को विभाजन से रोकने का अंतिम प्रयास जारी है। इसके लिए पार्टी के दोनों गुटों के बीच निर्णायक वार्ता शुरू हुई है।

यह वार्ता कुछ देर पहले पार्टी अध्यक्ष शेरबहादुर देउबा के निवास पर शुरू हुई। पार्टी अध्यक्ष शेर बहादुर देउवा पक्ष की ओर से कार्यवाहक अध्यक्ष पूर्ण बहादुर खड्का, रमेश लेखक और बालकृष्ण खांड शामिल हैं। विशेष महाधिवेशन पक्ष से प्रदीप पौडेल, गुरुराज घिमिरे, मधु आचार्य और देवराज चालिसे भाग ले रहे हैं, जबकि शेखर कोइराला गुट का प्रतिनिधित्व जीवन परियार और डॉ. मिनेंद्र रिजाल कर रहे हैं। इससे पहले आज सुबह ही डॉ. कोइराला ने महासचिव गगन थापा और विश्वप्रकाश शर्मा से बातचीत की थी और प्रतिद्वंद्वी धड़ों के बीच संवाद का माहौल बनाने के लिए एक समिति गठन का प्रस्ताव रखा। कांग्रेस के कुल 54 प्रतिशत महाधिवेशन प्रतिनिधियों ने विशेष महाधिवेशन की मांग की थी। हालांकि, अध्यक्ष देउबा के नेतृत्व वाले पक्ष ने इस पहल को

दबाने की कोशिश की, लेकिन महासचिव गगन थापा और विश्वप्रकाश शर्मा ने विशेष महाधिवेशन बुलाने का फैसला कर लिया। अधिकांश प्रतिनिधि पहले ही इस प्रक्रिया में शामिल हो चुके हैं, जिससे देउवा पक्ष पर दबाव बढ़ता जा रहा है। विशेष महाधिवेशन का उद्घाटन हुआ और यह बंद सत्र में प्रवेश कर गया, जहां पार्टी की केंद्रीय समिति को भंग करने का प्रस्ताव पेश किया गया। अब जब यह स्पष्ट हो चुका है कि अधिकांश प्रतिनिधि विशेष महाधिवेशन के पक्ष में हैं, तो देउवा गुट को बातचीत की मेज पर आने के लिए मजबूर होना पड़ा है। देउवा पक्ष के वार्ता में शामिल होने के बाद विशेष महाधिवेशन की समय-सारिणी को दोपहर एक बजे तक के लिए स्थगित किया गया है। पार्टी अध्यक्ष देउवा ने आज केंद्रीय कार्यसमिति की आपात बैठक भी बुलाई है। यह बैठक पहले सुबह 11 बजे सानेपा स्थित पार्टी मुख्यालय में तय थी, लेकिन विशेष महाधिवेशन समर्थक केंद्रीय सदस्यों ने इसमें शामिल न होने का निर्णय किया जिसके बाद बैठक को एक बजे तक के लिए स्थगित कर दिया।

ओली को अपने गढ़ में बालेन से मिल सकती है चुनौती

एजेंसी

काठमांडू। काठमांडू महानगरपालिका के मेयर बालेन्द्र शाह (बालेन) ने आगामी संसदीय चुनाव में झापा निर्वाचन क्षेत्र-5 से चुनाव लड़ने को लेकर विचार-विमर्श शुरू कर दिया है। यह क्षेत्र नेकपा (एमाले) अध्यक्ष केपी शर्मा ओली का प्रमुख राजनीतिक गढ़ माना जाता है। बालेन ने हाल ही में काठमांडू में झापा से आए राष्ट्रीय स्वतन्त्र पार्टी (आरएसपी) के नेताओं के साथ तीन घंटे तक बंद कमरे में बैठक की। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति, मतदाताओं की मनोदशा और पार्टी संगठन की ताकत का आकलन किया।

बैठक में आरएसपी झापा अध्यक्ष प्रकाश पाठक, जिला सचिव शम्भु सुष्केरा ढकाल, झापा-3 क्षेत्रीय अध्यक्ष लक्ष्मण बस्नेत, झापा-5 विभागीय सदस्य विरोध सुबेदी तथा जिला अनुशासन समिति संयोजक अर्जुन उप्रेती मौजूद थे। झापा-5 निर्वाचन क्षेत्र में ओली का गृह नगर दमक नगरपालिका सहित गौरादह नगरपालिका, कमल ग्रामीण नगरपालिका और गौरिगंज ग्रामीण नगरपालिका शामिल हैं। यह इलाका लंबे समय से एमाले का अभेद्य किला माना जाता रहा है। बालेन के करीबी लोगों के मुताबिक, उन्होंने अपने सचिवालय के सदस्यों और भरोसेमंद सहयोगियों को इन चारों स्थानीय इकाइयों में जमीनी फीडबैक जुटाने के लिए पहले ही भेज दिया है। टीम मतदाताओं की भावना, पार्टी संरचना और मौजूदा नेतृत्व के प्रति असंतोष के स्तर का अध्ययन कर रही है। एक अन्य करीबी सहयोगी ने कहा कि आंतरिक आकलन के अनुसार यदि बालेन झापा-5 से चुनाव लड़ते हैं तो उनकी जीत की संभावना मजबूत है। यह निष्कर्ष स्थानीय आरएसपी नेताओं से मिली प्रतिक्रिया के आधार पर निकाला गया है। आरएसपी झापा के नेता भी बालेन को लगातार राजनीतिक अपडेट दे रहे हैं। पार्टी के एक नेता ने बताया कि बालेन ने पार्टी के भीतर अपनी रुचि साझा कर दी है, हालांकि आरएसपी अध्यक्ष रवि लामिछाने के साथ शीर्ष-स्तरीय बातचीत अभी बाकी है। दमक के एक वरिष्ठ राप्रपा नेता ने भी कहा कि बालेन की टीम ने उनसे संपर्क किया है। उन्होंने कहा, 'उनके सहयोगी मुख्यधारा की पार्टियों से उपेक्षित लोगों से बात कर रहे हैं। इस अभियान में जेन-जी कार्यकर्ता भी शामिल हैं।' इस बीच, आरएसपी झापा समिति झापा-5 में व्यापारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और युवा समूहों से संवाद कर व्यापक जनमत जुटाने की तैयारी कर रही है। आरएसपी झापा सचिव शम्भु ढकाल ने बताया कि वे पार्टी संबंधी कार्यों से काठमांडू आए थे, उसी दौरान बालेन से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा, 'वे झापा की राजनीतिक स्थिति को समझना चाहते थे। उसी संदर्भ में चर्चा हुई।

'बलोचिस्तान में पाकिस्तान की सेना के काफिले पर हमला कर छह जवान मारे'- बीएलएफ का दावा

एजेंसी

क्वेटा (बलोचिस्तान)। बलोचिस्तान लिबरेशन फ्रंट (बीएलएफ) के प्रवक्ता मेजर घोरम बलोच ने दावा किया है कि नौ जनवरी को पाकिस्तान की सेना के काफिले पर फ्रंट के हमले में छह जवान मारे गए। प्रवक्ता ने मीडिया को भेजे बयान में कहा कि फ्रंट के लड़ाकों ने दोपहर करीब एक बजे सेंट्रल हाइवे पर ओरनाच क्रॉस पर सेना के काफिले पर घात लगाकर हमला किया। द बलोचिस्तान पोस्ट के अनुसार, प्रवक्ता ने कहा कि सैन्य काफिले के एक वाहन पर भीषण हमला हुआ। इस वाहन में सवार छह जवान मौके पर ही मारे गए। सैन्य वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। मेजर घोरम बलोच ने कहा कि बलोचिस्तान लिबरेशन फ्रंट ने ओरनाच में कब्जा करने वाली पाकिस्तान की सेना के काफिले पर हमले में छह कर्मियों की हत्या की

जिम्मेदारी लेता है। उल्लेखनीय है कि बीएलएफ बलोचिस्तान की आजादी के लिए लंबे समय से संघर्ष कर है। बलोचिस्तान में आजादी का आंदोलन 1947 में भारत के विभाजन के बाद शुरू हुआ। कलात रियासत को पाकिस्तान में जबरन मिलाने के बाद तब से बलोच राष्ट्रवादी अपने क्षेत्र की पूर्ण स्वतंत्रता और अपने प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। 2004 से बीएलएफ, बलोचिस्तान लिबरेशन फ्रंट (बीएलएफ) और बलोच रिपब्लिकन आर्मी (बीआरए) जैसे विद्रोही समूह सक्रिय हैं। ऐतिहासिक तथ्य है कि 1947 में कलात रियासत ने खुद को स्वतंत्र घोषित किया, मगर 1948 में पाकिस्तान की सेना ने इसे जबरन पाकिस्तान में मिला लिया। बलोच विद्रोही अपने क्षेत्र की स्वतंत्रता, राजनीतिक स्वायत्तता और प्राकृतिक संसाधनों (जैसे गैस और खनिज) पर नियंत्रण चाहते हैं। बलोच राष्ट्रवादियों का मानना है कि चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) उनकी जमीन पर विदेशी कब्जे को मजबूत करता है। यह गलियारा नहीं बनना चाहिए। आज बलोचिस्तान पाकिस्तान का सबसे बड़ा और सबसे कम विकसित प्रांत है। बलोच राष्ट्रवादियों और इस्लामाबाद के बीच संघर्ष जारी है। बलोच अपने शोषण और उपेक्षा के खिलाफ लगातार आवाज उठा रहे हैं।

बांग्लादेश में मातारबाड़ी थर्मल पावर प्लांट में आग लगी

एजेंसी

ढाका। बांग्लादेश में कॉक्स बाजार के महेशखाली उपजिला के मातारबाड़ी थर्मल पावर प्लांट के स्क्रैप (कचरा) भंडारण में आग लग गई। दमकल विभाग और नागरिक सुरक्षा विभाग को आग बुझाने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। प्लांट के अधिकारियों का कहना है कि आग लगने के कारणों की जांच कराने के आदेश दे दिए गए हैं। ढाका ट्रिब्यून अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, प्लांट के कचरा भंडारण में आग सोमवार रात करीब 9:15 बजे लगी। महेशखाली दमकल विभाग और नागरिक सुरक्षा विभाग के केंद्र प्रभारी रामप्रसाद सेन ने बताया कि आग प्लांट के कचरा भंडारण में लगी। सूचना मिलते ही कर्मचारियों को संसाधनों के साथ भेजा गया। लगभग दो घंटे में आग बुझा दी गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि उन्होंने प्लांट के पास बने एक पुल से पावर प्लांट के अंदर आग की लपटें देखीं। महेशखाली उप जिला अधिकारी इमरान महमूद डालिम ने बताया कि आग रात करीब 8:45 बजे पावर प्लांट की प्रोडक्शन यूनिट के पास लगी। कुछ ही देर बाद उस पर काबू पा लिया गया। प्रोडक्शन प्लांट पर कोई असर नहीं पड़ा।

ग्रीनलैंड का अमेरिका को कड़ा संदेश : किसी भी हाल में नियंत्रण स्वीकार नहीं, नाटो के तहत होगी रक्षा

एजेंसी

ग्रीनलैंड। ग्रीनलैंड की सरकार ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हालिया बयानों पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए स्पष्ट किया है कि वह किसी भी परिस्थिति में अमेरिका की ओर से ग्रीनलैंड पर नियंत्रण की इच्छा को स्वीकार नहीं कर सकती। सरकार ने दो टूक कहा कि ग्रीनलैंड न तो बिकाऊ है और न ही किसी दूसरे देश के अधीन आने का सवाल पैदा होता है।

ग्रीनलैंड सरकार द्वारा जारी आधिकारिक बयान में कहा गया कि ग्रीनलैंड डेनमार्क साम्राज्य का हिस्सा है और डेनिश कॉमनवेल्थ के अंतर्गत होने के कारण वह नाटो (ह्ब्रह्र) का सदस्य है। ऐसे में ग्रीनलैंड की सुरक्षा और रक्षा नीतियां नाटो के ढांचे के भीतर ही तय और लागू की जाएंगी।

बयान में यह भी कहा गया कि

हाल ही में नाटो के छह सदस्य देशों द्वारा ग्रीनलैंड के समर्थन में दिए गए सकारात्मक संदेश के बाद, ग्रीनलैंड सरकार अब अपनी रक्षा को नाटो के अंतर्गत और मजबूत करने के प्रयास तेज करेगी। सरकार ने स्पष्ट किया कि नाटो के सभी सदस्य देश, जिनमें अमेरिका भी शामिल है, ग्रीनलैंड की सुरक्षा में समान हित रखते हैं। इसी कारण ग्रीनलैंड की सत्तारूढ़ गठबंधन सरकार डेनमार्क के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करेगी कि ग्रीनलैंड की रक्षा से जुड़े सभी संवाद, योजनाएं और विकास कार्य नाटो सहयोग के दायरे में ही हों। ग्रीनलैंड सरकार ने यह भी दोहराया कि वह पश्चिमी रक्षा गठबंधन का स्थायी हिस्सा बना रहेगा और उसकी संप्रभुता, पहचान और राजनीतिक स्थिति पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

यह बयान ऐसे समय में आया है जब अमेरिका की ओर से ग्रीनलैंड की सामरिक अहमियत को लेकर एक बार फिर बयानबाजी तेज हो गई है, जिस पर यूरोप और नॉर्डिक देशों में भी चिंता जताई जा रही है।

बलोचिस्तान में डीआरए की मांग को लेकर सरकारी कर्मचारी सड़कों पर

एजेंसी

क्वेटा (बलोचिस्तान)। पाकिस्तान के अशांत प्रांत बलोचिस्तान में असमानता न्यूनीकरण भत्ता (डिसपैरिटी रिडक्शन अलाउंस 'डीआरए') की मांग को लेकर सरकारी कर्मचारियों का विरोध तेज हो गया है। प्रदर्शनकारियों ने विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय राजमार्गों को अवरुद्ध कर दिया है। इस दौरान बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया गया है। द बलोचिस्तान पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, क्वेटा समेत बलोचिस्तान के विभिन्न जिलों में दर्जनों सरकारी कार्यालयों से जुड़े कर्मचारी पिछले सात महीनों से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। बलोचिस्तान ग्रैंड अलायंस के बैनर तले संगठित कर्मचारी मांग कर रहे हैं कि उन्हें 30 प्रतिशत डीआरए दिया जाए, जैसा कि अन्य प्रांतों और

संघीय सरकार में लागू है। बलोचिस्तान ग्रैंड अलायंस के नेताओं का कहना है कि राज्यपाल भवन, मुख्यमंत्री सचिवालय, सिविल सचिवालय, विधानसभा सचिवालय और उच्च न्यायालय सहित कुछ संस्थानों में एक ही श्रेणी के कर्मचारियों को अधिक वेतन दिया जा रहा है, जबकि अन्य अदालतों में एक ही श्रेणी के कर्मचारी कम वेतन पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस अंतर को दूर करने के लिए नवीकरणीय राजस्व अधिनियम अपरिहार्य है। सरकार की समिति ने भी इसकी सिफारिश की है लेकिन मुख्यमंत्री ने अभी तक इन सिफारिशों को लागू नहीं किया है। विरोध आंदोलन की शुरुआत के बाद सरकार और कर्मचारियों के बीच कई दौर की बातचीत हो चुकी है। बातचीत का हर दौर बेनतीजा रहा।

पाकिस्तान बेचेगा इंडोनेशिया को 40 फाइटर जेट

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान इंडोनेशिया को 40 JF-17 फाइटर जेट और किलर ड्रोन बेचने की तैयारी में है। साथ ही वह लीबिया

और बांग्लादेश के रक्षा बाजार पर भी कब्जा करने की योजना बना रहा है।

आर्थिक तंगहाली और भारी विदेशी कर्ज से जूझ रहा पाकिस्तान अब अपनी डूबती अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए हथियारों के व्यापार का सहारा ले रहा है। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तान और इंडोनेशिया के बीच 40 से अधिक छ्ब्न-17 लड़ाकू विमानों और उन्नत 'किलर ड्रोन' को लेकर एक बड़ा रक्षा समझौता होने वाला है। इस सौदे को अंतिम रूप देने के लिए दोनों देशों के शीर्ष सैन्य अधिकारियों के बीच इस्लामाबाद में उच्च स्तरीय वार्ता चल रही है। पाकिस्तान का लक्ष्य इस रक्षा निर्यात के जरिए विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाना और वैश्विक हथियार बाजार में अपनी पैठ बनाना है।

अमेरिकी अदालत का बड़ा फैसला : गलत तरीके से निर्वासित किए गए भारतीय को वापस बुलाने का आदेश

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका की एक संघीय अदालत ने अपने तरह का एक अहम फैसला सुनाया है। अदालत ने अमेरिकी आव्रजन अधिकारियों को आदेश दिया है कि वे एक भारतीय नागरिक को फिर से अमेरिका वापस लाने की व्यवस्था करें, जिसे अदालत के साफ आदेश के बावजूद भारत भेज दिया गया था। जज ने फैसला सुनाया कि डिपोर्टेशन गैर-कानूनी था और न्यायिक अधिकार का उल्लंघन था। 9 जनवरी को जारी आदेश में टेक्सास के दक्षिणी जिले की अमेरिकी जिला अदालत ने बताया कि फ्रांसिस्को डी'कोस्टा को 20 दिसंबर 2025 को अमेरिका से निकाला गया, जबकि उसे न हटाने का अदालत का आदेश इससे तीन घंटे पहले ही जारी हो चुका था। अदालत ने कहा कि उसी सुबह उसने डी'कोस्टा की याचिका पर सुनवाई अपने हाथ में ली थी और सरकार को साफ निर्देश दिया था कि अदालत की अनुमति के बिना उसे अमेरिका से बाहर न भेजा जाए।

कोर्ट ने कहा कि उस आदेश के बावजूद, डी'कोस्टा को तुर्किश एयरलाइंस की फ्लाइट में बिठा दिया गया, जो उसी दिन दोपहर 2:55 बजे ह्यूस्टन से रवाना हुई। इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट द्वारा जमा किए गए एक मेमोरेंडम के अनुसार, अमेरिकी अटॉर्नी के कार्यालय, आईसीई अधिकारियों और हिरासत सुविधा को

फ्लाइट के रवाना होने से पहले स्टे की सूचना थी।अदालत ने सरकार की इस दलील को खारिज कर दिया कि यह गलती से हुआ। अदालत ने कहा कि हटाने का इरादा चाहे जो भी रहा हो, निर्वासन गैरकानूनी था और यही सबसे अहम बात है।

फ्रांसिस्को डी'कोस्टा भारत के मूल निवासी हैं और साल 2009 से अमेरिका में रह रहे थे। अक्टूबर 2025 में एक आव्रजन न्यायाधीश ने उन्हें स्वेच्छा से देश छोड़ने की अनुमति दी थी। बाद में उन्होंने वकील की मदद ली और अपने मामले को फिर से खोलने की अर्जी दी। इसमें उन्होंने कहा कि भारत की परिस्थितियां बदल चुकी हैं और ईसाई धर्म अपनाने के कारण उन्हें वहां उत्पीड़न का खतरा है। उस याचिका को दायर करने से फेडरल नियमों के तहत उनका स्वेच्छा से देश छोड़ना अपने आप एक अंतिम निष्कासन आदेश में बदल गया। कोर्ट ने कहा कि इमिग्रेशन जज ने स्टे के अनुरोध को खारिज कर दिया था, लेकिन डी'कोस्टा को हटाए जाने के समय मामले को फिर से खोलने की याचिका पर फैसला नहीं सुनाया था। अदालत ने कहा कि इस स्थिति में डी'कोस्टा को हटाने से उनके कानूनी अधिकार छिन सकते थे और यह न्याय की प्रक्रिया के खिलाफ था। सरकार ने अदालत में तर्क दिया कि डी'कोस्टा को वापस लाने की जरूरत नहीं है और वह भारत से ही आगे की कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं। अदालत ने इस दलील को भी ठुकरा दिया और कहा कि उन्हें वापस लाना जरूरी है, ताकि मामले की सुनवाई वैसे ही हो सके, जैसे गलत तरीके से हटाए जाने से पहले होनी चाहिए थी। अदालत ने सर्वोच्च न्यायालय के एक सर्वसम्मत फैसले का हवाला देते हुए कहा कि अगर किसी विदेशी नागरिक को अदालत के आदेश के खिलाफ गैरकानूनी तरीके से हटाया जाता है, तो उसे वापस बुलाना सही और जरूरी उपाय है। अंत में अदालत ने सरकार को आदेश दिया कि डी'कोस्टा की जल्द से जल्द अमेरिका वापसी की व्यवस्था की जाए। साथ ही पांच दिनों के भीतर यह बताने को कहा कि इसके लिए क्या-क्या कदम उठाए जाएंगे।

page 1 and 8 jan 14_page 1 Mar 25 final ds.qxd 1/13/2026 11:19 PM Page 2

चना देश की सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल

चना देश की सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। चने को दालों का राजा भी कहा जाता है। पोषक मान की दृष्टि से चने के 100 ग्राम दाने में औसतन 11 ग्राम पानी, 21.1 ग्राम प्रोटीन, 4.5 ग्राम वसा, 61.65 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 149 मि.ग्रा. कैल्शियम, 7.2 मि.ग्रा. लोहा, 0.14 मि.ग्रा. राइबोफ्लेविन तथा 2.3 मि.ग्रा. नियासिन पाया जाता है। इसकी हरी पत्तियां साग और हरा तथा सूखा दाना सब्जी व दाल बनाने में प्रयुक्त होती हैं। चने की दाल से अलग किया हुआ छिलका और भूसा पशु चाव से खाते हैं। दलहनी फसल होने के कारण यह जड़ों में वायुमंडलीय नाइट्रोजन स्थिर करती है, जिससे खेत की उर्वराशक्ति बढ़ती है। देश में चने की खेती मुख्य रूप से उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा बिहार में की जाती है। सबसे अधिक चने का क्षेत्रफल एवं उत्पादन वाला राज्य मध्य प्रदेश है।

चना एक शुष्क एवं ठंडी जलवायु की फसल है। इसे रबी मौसम में उगाया जाता है। इसकी खेती के लिए मध्यम वर्षा (60-90 सें.मी. वार्षिक) और सर्दी वाले क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त हैं। फसल में फूल आने के बाद वर्षा का होना हानिकारक होता है। वर्षा के कारण फूल में परागकण एक दूसरे से चिपक जाते हैं, जिससे बीज नहीं बनते हैं। इसकी खेती के लिए 24 से-30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है।

⏩ भूमि की तैयारी

चने की खेती दोमट भूमि से मटियार भूमि में सफलतापूर्वक की जा सकती है। चने की खेती हल्की से भारी भूमि में भी की जाती है, किन्तु अधिक जलधारण एवं उचित जलनिकास वाली भूमि सर्वोत्तम रहती है। मृदा का पी-एच मान 6-7.5 उपयुक्त रहता है। असिंचित अवस्था में मानसून शुरू होने के पूर्व गहरी जुताई करने से रबी के लिए भी नमी संरक्षण होता है। एक जुताई मिट्?टी पलटने वाले हल तथा 2 जुताई देसी हल से की जाती है, पिफर पाटा चलाकर खेत को समतल कर लिया जाता है।

⏩ प्रमुख किस्में

समय पर बुआई के लिए-जी.एनजी. 1581 (गणगौर), जी.एन.जी. 1958 (मरुधर), जी.एन.जी. 663, जी.एन.जी. 469, आर.एस.जी. 888, आर.एस.जी. 963, आरएस.जी. 973, आर.एस.जी. 986, देरी से बुआई के लिए-जी.एन.जी. 1488, आर.एसजी. 974, आर.एस.जी. 902, आर.एस.जी. 945 प्रमुख हैं।

काबुली चना

- एल 550 - यह 140 दिनों में पकने वाली किस्म है। इसकी उपज 10 से 13 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसके 100 दानों का वजन 24 ग्राम है।
- सी-104 यह किस्म 130-135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। यह औसतन 10 से13 क्विंटल/हेक्टेयर उपज देती है। इसके 100 दानों का वजन 25-30 ग्राम होता है।

अन्य किस्में जी.एन.जी. 1669 (त्रिवेणी), जी.एन.जी. 1499, जी.एन.जी. 1992।

⏩ चने की बुआई का समय

10 अक्टूबर से 5 नवम्बर

बीज की मात्रा

मोटे दानों वाला चना 80-100 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर, सामान्य दानों वाला चना 70-80 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर काबुली चना (मोटा दाना) 100-120 कि.ग्रा./हेक्टेयर।

⏩ बीजोपचार

1. बीज को पहले रासायनिक फफूंदीनाशक से उपचारित करने के बाद जैविक कल्चर से छाया में उपचारित कर तुरंत बुआई करें, जिससे जैविक बैक्टीरिया जीवित रह सकें।
2. फसल को उकठा रोग से बचाने के लिए बीज को बुआई के पूर्व फफूंदीनाशक वीटावैक्स पॉवर, कैप्टॉन, थीरम या प्रोवेक्स में से कोई एक 3 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। इसके पश्चात एक किलो बीज में राइजोबियम कल्चर तथा ट्राइकोडर्मा विरडी 5-5 ग्राम मिलाकर उपचारित करें।
3. बीज की अधिक मात्रा को उपचारित करने के लिए, सीड ड्रेसिंग ड्रम का उपयोग करें, जिससे बीज एक समान उपचारित हो सके।

⏩ उर्वरक

अच्छी पैदावार के लिए 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद खेत की तैयारी के समय खेत में मिलाएं। उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण के आधार पर करें। नाइट्रोजन 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर (100 कि.ग्रा. डाई अमोनियम फॉस्पेफट),फॉस्फोरस 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर, जिंक सल्फेट 25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर।

⏩ देशी किस्में

- जे.जी. 315- यह किस्म 125 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। औसत उपज 12 से 15 क्विंटल/हेक्टेयर है। इसके 100 दानों का वजन 15 ग्राम है एवं बीज का रंग बादामी है तथा देर से बोने के लिए उपयुक्त किस्म है।
- विजय: सर्वाधिक उपज देने वाली 90-105 दिनों में तैयार होने वाली यह किस्म है। यह सिंचित व असिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इस किस्म में अधिक शाखायें व मध्यम ऊंचाई वाले पौधे होते हैं। उपज क्षमता 24-45 क्विंटल/हेक्टेयर है।
- जी.एन.जी.-2171 (मीरा) राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली जैसे उत्तरी- पश्चिमी मैदानी सिंचित क्षेत्रों के लिए अधिसूचित किस्म। दाना मध्यम आकार व सुनहरे रंग का, जड़ गलन, विल्ट व झुलसा रोग के प्रति सहनशील। लगभग 150 दिनों में पककर तैयार होती है और उपज 24 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।
- जी.एन.जी-2144 (तीज) राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों के लिए अधिसूचित यह किस्म दोहरे फूल व 20 से 25 प्रतिशत दोहरी फली वाली है। देरी से बुआई योग्य इस किस्म की दिसंबर के पहले सप्ताह में भी बुआई कर सकते हैं। बुआई के 130 से 135 दिनों में तैयार होने के साथ ही इसकी औसत उपज 23 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

⏩ बुआई की विधि

चने की बुआई कतारों में करें। 7 से 10 सें.मी. गहराई पर बीज डालें। कतार से कतार की दूरी 30 सें.मी. (देसी चने के लिए) तथा 45 सें.मी. (काबुली चने के लिए)।

⏩ खरपतवार नियंत्रण

फ्लूक्लोरेलिन 200 ग्राम (सक्रिय तत्व) का बुआई से पहले या पेंडीमेथालीन 350 ग्राम (सक्रिय तत्व) का अंकुरण से पहले 300-350 लीटर पानी में घोल बनाकर एक एकड़ में छिड़काव करें। पहली निराई-गुड़ाई बुआई के 30-35 दिनों बाद तथा दूसरी 55-60 दिनों बाद आवश्यकतानुसार करें।

सिंचाई

आमतौर पर चने की खेती असिंचित अवस्था में की जाती है। चने की फसल के लिए कम जल की आवश्यकता होती है। चने में जल उपलब्धता के आधार पर पहली सिंचाई फूल आने के पूर्व अर्थात बोने के 45 दिनों बाद एवं दूसरी सिंचाई दाना भरने की अवस्था पर अर्थात बोने के 75 दिनों बाद करनी चाहिए।

⏩ अन्य समस्याएं

- सूत्राकृमि सूत्राकृमि के प्रकोप से पौधा अविकसित रह जाता है। जड़ें छोटी रह जाती हैं और उत्पादन प्रभावित होता है।
- नियंत्रण के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करें, प्रतिरोधी किस्म का चयन करें। गैर-दलहनी फसलों जैसे मक्का, धान या मूंगफली को फसलचक्र में शामिल करें। रासायनिक नियंत्रण प्रकोप के आधार पर 10-15 कि.ग्रा. कार्बोफ्यूरॉन प्रति एकड़ का प्रयोग करें।

मूली की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

मूली के उत्तम उत्पादन के लिए उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट और दोमट भूमि अधिक उपयुक्त रहती है। मटियार भूमि मूली कि फसल उगाने के लिए अनुपयुक्त रहती है, क्योंकि इस भूमि में ऐसी जड़ों का समुचित विकास नहीं हो पाता है।

इसकी खेती के लिए गहरी जुताई कि आवश्यकता होती है, क्योंकि इसकी जड़ें भूमि में गहरी जाती है। गहरी जुताई के लिए मिटटी पलटने वाले हल से जुताई करें। इसके बाद दो बार कल्टीवेटर या देशी हल चलाएँ जुताई के बाद पाटा अवश्य लगाएं, ताकि भूमि समतल और भुरभुरी हो जाये।

हमारे देश में मूली की खेती प्राय: सभी क्षेत्रों में की जाती है। सामान्यत: सब्जी उत्पादक कृषक सब्जियों की अन्य फसलों की मेढ़ों पर या छोटे-छोटे क्षेत्रों में मूली लगाकर आय अर्जित करते है। शीत ऋतु में भी कृषक इसकी फसल को 30 से 60 दिन में तैयार कर पुन: बोवनी कर दो बार उपज प्राप्त कर लेते हैं। यह फसल कम खर्च में अधिक उत्पादन देने वाली सलाद के लिए उत्तम हैं। जड़ वाली सब्जियों में इनका प्रमुख स्थान है। इनकी खेती सम्पूर्ण भारत वर्ष में की जाती है ।

महत्व-

मूली का उपयोग आमतौर पर सलाद एवं पकी हुई सब्जी के रूप में किया जाता है। इसमें तीखा स्वाद होता है, इसका उपयोग नाश्ते में दही के साथ पराठे के रूप में भी किया जाता है। इसकी पत्तियों की भी सब्जी बनाई जाती है। मूली विटामिन सी एवं खनीज तत्व का अच्छा स्त्रोत है।

मूली लिवर एवं पीलिया मरीजों के लिए भी अनुसंशित है। यदि उत्पादक मूली की खेती वैज्ञानिक तकनीक से करें, तो इसकी खेती से अधिक उपज के साथ-साथ अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इस लेख में मूली की उन्नत खेती कैसे करें का उल्लेख किया गया है।

मूली की खेती के लिए किस्में

हमारे देश के विभिन्न क्षत्रों में मूली की दो प्रकार की किस्मे उगाई जाती है, एशियन और यूरोपियन जो इस प्रकार है, जैसे-

एशियन किस्में- पूसा चेतकी, जापानी सफ़ेद, पूसा हिमानी, पूसा रेशमी, जौनपुरी मूली, हिसार मूली न- 1, कल्याणपुर- 1, पूसा देशी, पंजाब पसंद, चाइनीज रोज, सकुरा जमा, व्हाईट लौंग, के एन-1, पंजाब अगेती और पंजाब सफेद आदि प्रमुख है।

यूरोपियन किस्में- व्हाईट आइसीकिल, रैपिड रेड व्हाईट टिपड, स्कारलेटग्लोब और फ्रेंच ब्रेकफास्ट आदि प्रमुख है।

मूली की उन्नत किस्में, विशेषताएं और पैदावार

मूली की फसल लेने के लिए ऐसी उन्नत किस्मों का चयन करना चाहिए, जो देखने में सुंदर व खाने में स्वादिष्ट हो, साथ ही अपने क्षेत्र की प्रचलित और अधिक पैदावार देने वाली होनी चाहिए। मूली की खेती मैदानी इलाकों में सितंबर से जनवरी तक और पहाड़ी इलाकों में मार्च से अगस्त तक आसानी से की जा सकती है।

वैसे मूली की तमाम ऐसी एशियन और यूरोपियन किस्में उपलब्ध हैं, जो मैदानी व पहाड़ी इलाको में पूरे साल उगाई जा सकती है। इस लेख में मूली की उन्नत किस्मों की विशेषताएं और पैदावार की जानकारी का उल्लेख किया गया है।

मूली की किस्में

एशियन किस्में

पूसा चेतकी-

डेनमार्क जनन द्रव्य से चयनित यह किस्म पूर्णतया सफेद, मूली, नरम, मुलायम, ग्रीष्म ऋतु की फसल में कम तीखी जड़ 15 से 22 सेंटीमीटर लम्बी, मोटी जड़, पत्तियां थोड़ी कटी हुई, गहरा हरा एवं उर्ध्वमुखी, 40 से 50 दिनों में तैयार, ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु हेतु उपयुक्त फसल अप्रैल से अगस्त और औसत पैदावार 250 से 270 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

जापानी सफ़ेद-

इस किस्म कि जड़ें सफ़ेद लम्बी 15 से 22 सेंटीमीटर बेलनाकार, कम तीखी मुलायम और चिकनी होती है। जड़ों का नीचे का भाग कुछ खोखला होता है। इसकी बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 अक्तूबर से 15 दिसंबर तक है बोने के 45 से 55 दिन बाद फसल खुदाई के लिए तैयार और पैदावार क्षमता 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है।

पूसा हिमानी-

इस मूली की किस्म की जड़े 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी, मोटी, तीखी, अंतिम छोर गोल नहीं होते, सफेद एवं टोप हरे होते है। हल्का तीखा स्वाद और मीठा फ्लेवर, बोने के 50 से 60 दिन में परिपक्व, दिसम्बर से फरवरी में तैयार और औसत पैदावार 320 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है।

पूसा रेशमी-

इसकी जड़ें 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी , मध्यम मोटाई वाली, लेकिन उपरी सिरे वाली, समान रूप से चिकनी और हलकी तीखी होती है। उपरी भाग मध्यम ऊंचाई वाला और हलके हरे रंग कि कटावदार पतियों वाला होता है। यह किस्म मध्य सितम्बर से अक्टूम्बर तक बुवाई के लिए उपयुक्त है बोने के 55 से 60 दिन बाद तैयार और उपज क्षमता 315 से 350 प्रति हेक्टेयर है।

जौनपुरी मूली-

यह उत्तर प्रदेश कि प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय किस्म है। यह 70 से 100 सेंटीमीटर लम्बी और । से 10 सेंटीमीटर मोटी होती है। इस किस्म का छिलका और गुदा सफ़ेद होता है। गुदा मुलायम, कम चरपरा और मीठा होता है।

हिसार मूली न 1-

इस मूली की उन्नत किस्म की जड़ें सीधी और लम्बी बढ़ने वाली होती है। जड़ें सफ़ेद रंग कि होती है, यह किस्म सितम्बर से अक्तूबर तक बोई जाती है। यह किस्म बोने के 50 से 55 दिन बाद खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। यह प्रति हेक्टेयर 225 से 250 क्विंटल तक उपज दे देती है।

कल्याणपुर 1-

इस मूली की उन्नत किस्म की जड़ें सफ़ेद चिकनी मुलायम और मध्यम लम्बी होती है। बोने के 40 से 45 दिन बाद यह खुदाइ के लिए तैयार हो जाती है।

पूसा देशी-

इस मूली की किस्म कि जड़ें सफ़ेद, मध्यम, मोटी 30 से 35 सेंटीमीटर लम्बी और बहुत चरपरी होती है। इसकी जड़ें नीचे कि ओर पतली होती है। पौधों का उपरी भाग मध्यम ऊंचाई वाला होता है और पत्तियां गहरे हरे रंग कि होती है। यह मध्य अगस्त से अक्टूम्बर के आरंभ तक बुवाई के लिए उत्तम किस्म है। यह बोने के 40 से 55 दिन बाद तैयार हो जाती है।

पंजाब पसंद-

यह जल्दी पकने वाली किस्म है, यह बिजाई के बाद 45 दिनों में कटाई के लिए तैयार होती हैं। इसकी जड़ें लम्बी, रंग में सफेद और बालों रहित होती है। इसकी बिजाई मुख्य मौसम और बे-मौसम में भी की जा सकती है। मुख्य मौसम में, इसकी औसतन पैदावार 215 से 235 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और बे-मौसम में 150 क्विंटल होती है।

अन्य एशियन किस्में-

चाइनीज रोज, सकुरा जमा, व्हाईट लौंग, के एन-1, पंजाब अगेती और पंजाब सफेद आदि है। ये किस्में भी अच्छी पैदावार वाली और आकर्षक है।

यूरोपियन किस्में

व्हाईट आइसीकिल-

यह मूली की किस्म ठंडी जलवायु के लिए उपयुक्त है। इसकी जड़ें सफ़ेद, पतली कम चरपरी और स्वादिष्ट होती है। इसकी जड़ें सीधी बढ़ने वाली होती है। जो नीचे के ओर पतली होती जाती है। इसे खेत में लम्बे समय तक रखने पर भी इसकी जड़ें खाने योग्य बनी रहती है। इसे 15 अक्टूम्बर से फ़रवरी तक कभी भी बो सकते है। इस किस्म कि मुली बोने के करीब 30 दिन बाद तैयार हो जाती है।

रैपिड रेड व्हाईट टिपड-

इस किस्म कि मूली का छिलका लाल रंग का होता है। जो थोड़ी सी सफेदी लिए होता है। जिसके कारण मुली देखने में अत्यंत आकर्षक लगती है। इसकी जड़ें छोटे आकार वाली होती है और उनका गुदा सफ़ेद रंग का होता है तथा मुली कम चरपरी होती है। इस किस्म कि बुवाई मध्य अक्टूम्बर से फ़रवरी तक कभी भी कि जा सकती है। इस किस्म कि मुली बोने के लगभग 25 से 30 दिन बाद तैयार हो जाती है।

स्कारलेटग्लोब-

यह मूली की अगेती किस्म है, जो बोने के 25 से 30 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसकी जड़ें छोटी मुलायम और ग्लोब के आकार वाली होती है। इसकी जड़ें खाने में अत्यंत स्वादिष्ट लगती है।

फ्रेंच ब्रेकफास्ट-

यह भी मूली की एक अगेती किस्म है, यह किस्म बुवाई के 2। दिन बाद खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। जड़ें बड़े आकार में छोटी, मुलायम, गोलाकार तथा कम चरपरी होती हैजो खाने में अत्यंत स्वादिष्ट लगती है।

मूली के बीज की मात्रा इसकी किस्म, बोने की विधि और बीज के आकार पर निर्भर करती है। 5 से 10 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवयक होता है।

मूली की खेती के लिए बुवाई की विधि

मूली की बुवाई दो प्रकार की प्रचलित विधियों से अधिक की जाती है, जैसे-

कतारों में- अच्छी प्रकार तैयार क्यारियों में लगभग 30 सेंटीमीटर की दूरी पर कतारें बना ली जाती है और इन कतारों में बीज को लगभग 3 से 4 सेंटीमीटर गहराई में बो देते हैं। बीज उग जाने पर जब पौधों में दो पत्तियॉ आ जाती है तब 8 से 10 सेंटीमीटर की दूरी छोड़कर अन्य पौधों को निकाल देते है।

मेड़ों पर- इस विधि में क्यारियों में 30 सेंटीमीटर की दूरी पर 15 से 20 सेंटीमीटर ऊँची मेड़ें बना ली जाती है। इन मेड़ों पर बीज को 4 सेंटीमीटर की गहराई पर बो दिए जाते है। बीज उग आने पर जब पौधों में दो पत्तियॉ आ जाए तब पौधों को 8 से 10 सेंटीमीटर की दूरी छोड़कर बाकी पौधों को निकाल दिया जाता है। यह विधि अच्छी रहती है। क्योंकि इस विधि से बोने पर इसकी जड़ की बढ़वार अच्छी होती हैं और मूली मुलायम रहती है।

मूली अधिक तापमान के प्रति सहनशील है। किन्तु सुगंध विन्यास और आकार के लिए ठंडी जलवायु कि आवश्यकता होती है। अधिक तापमान के कारण जड़ें कठोर और चरपरी हो जाती है। मूली कि सफल खेती के लिए 10 से 11 डिग्री सेल्सियस तापमान सर्वोत्तम माना गया है।

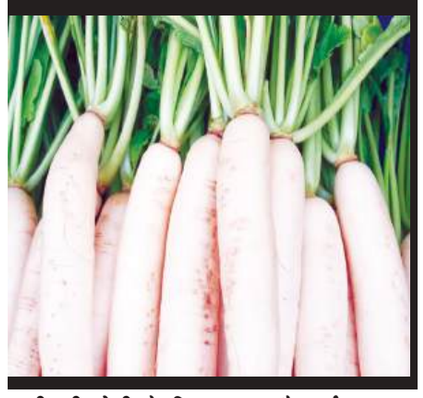

मूली की खेती के लिए खाद और उर्वरक

200 से 250 किंवटल गोबर की खाद या कम्पोस्ट, 100 किलोग्राम नाइटोजन, 50 किलोग्राम स्फुर तथा 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर आवयक है। गोबर की खाद, स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन की आधी खेत की तैयारी के समय तथा नाइटोजन की शेष मात्रा दो भागों में बोने के 15 और 30 दिन बाद देना चाहिए।

मूली की फसल में निदाई-गुड़ाई

यदि खेत में खरपतवार उग आये हों तो आवयकतानुसार उन्हें निकालते रहना चाहिए। रासायनिक खरपतवारनाशी जैसे पेन्डिमीथेलिन 30 ई सी 3.0 किलोग्राम 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 48 घंटे के अन्दर प्रयोग करने पर प्रारम्भ के 30 से 40 दिनों तक खरपतवार नहीं उगते हैं। निंदाई-गुड़ाई 15 से 20 दिन बाद करना चाहिए। मूली की खेती में उसके बाद मिटटी चढ़ा देनी चाहिए। मूली की जड़े मेड़ से उपर दिखाई दे रही हों तो उन्हें मिटटी से ढक दें अन्यथा सूर्य के प्रकाश के सम्पर्क से वे हरी हो जाती हैं।

मूली फसल की सिंचाई और जल निकास

बोवाई के समय यदि भूमि में नमी की कमी रह गई हो तो बोवाई के तुरंत बाद एक हल्की सी सिंचाई कर दें। वैसे वर्षा ऋतु की फसल में सिंचाई की आवयकता नहीं पड़ती हैं। परन्तु इस समय जल निकास पर ध्यान देना आवयक हैं। गर्मी की फसल में 4 से 5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवयकता पड़ती है। शरदकालीन फसल में 10 से 15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते हैं। मेड़ों पर सिंचाई का पानी आधी मेड़ तक ही सिमित रखना चाहिए ताकि पूरी मेड़ नमीयुक्त व भुरभुरी बनी रहे।

-(Compiled by: C M Sharma)

मूली फसल के कीट और रोग की रोकथाम

माहू- हरे सफेद छोटे-छोटे कीट होते है। जो पत्तियों का रस चूसते हैं। इस कीट के लगने से पत्तिया पीली पड़ जाती है तथा फसल का उत्पादन काफी घट जाता है। इसके प्रकोप से फसल विपणन योग्य नहीं रह जाती है।

रोकथाम- इस कीट के नियंत्रण हेतू मैलाथियान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से लाभ होता है। इसके अलावा 4 प्रतिशत नीम गिरी के घोल में किसी चिपकने वाला पदार्थ जैसे चिपकों या सेण्ड्रोविट के साथ छिड़काव उपयोगी रहता है।

रोयदार सूड़ी- कीड़े की सूड़ी भूरे रंग का रोयेदार होती है और ज्यादा संख्या में एक जगह पत्तियों को खाती हैं।

रोकथाम- इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान 10 प्रतित चूर्ण 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से सुबह के समय भुरकाव करना चाहिए।

अल्टरनेरिया झुलसा- यह रोग जनवरी से मार्च के दौरान बीज वाली फसल पर ज्यादा लगता है। पत्तियों पर छोटे घेरेदार गहरे काले धब्बे बनते हैं। पुष्पम व फल पर अण्डाकार से लंबे धब्बे दिखाई देते हैं। प्राय: यही रोग मूली की फसल पर लगता हैं।

रोकथाम- इसके नियंत्रण हेतू कैप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें, नीचे की प्रभावित पत्तियों को तोड़कर जला दें। पत्ती तोड़ने के बाद मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मूली फसल की खुदाई

जब जड़े पूर्ण विकसित हो जाये तब कड़ी होने से पहले मुलायम अवस्था में ही फसल की खुदाई कर लेनी चाहिए।

मूली की खेती से पैदावार

मूली की पैदावार इसकी किस्में, खाद व उर्वरक तथा अंत: सस्य क्रियाओं पर निर्भर करती है। लेकिन उपरोक्त वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर इसकी औसत उपज 200 से 350 क्विटल प्रति हेक्टेयर के करीब होती है।